खण्ड 4
बलाबल निर्धारक प्रमुख अवयव

चतुर्थ खण्ड का परिचय

बलाबल निर्धारक प्रमुख अवयव नामक इस चौथे खण्ड में आप छः इकाइयों के अन्तर्गत निम्नलिखित विषयों का अध्ययन करेंगे–

1. षड्वर्ग विचार
2. दृष्टि विचार
3. राशि एवं ग्रह का स्वरूप
4. नक्षत्र, राशि एवं ग्रहों का पारस्परिक सम्बन्ध
5. षडबल विचार
6. ग्रहमैत्री विमर्श

बलाबल निर्धारक प्रमख अवयवों के रूप में निर्धारित इस खण्ड में कुल छः इकाईयॉ हैं। षड्वर्ग विचार पहली इकाई है, इसमें विभिन्न वर्गों के निर्माण को आप सीखेंगें। कुण्डली निर्माण में ग्रहों का दृष्टि विचार बहुत महत्वपूर्ण है। दूसरी इकाई में ग्रहों की दृष्टि का वर्णन है। राशि एवं ग्रह का स्वरूप नामक तीसरी इकाई में 12 राशियों में एवं ग्रहों के पारिभाषिक स्वरूप को आप जानेंगें। इसी प्रकार इन सभी के सम्बन्धों को चौथी इकाई में पढ़ेंगे। षड्बल विचार पॉचवीं इकाई है, छठी इकाई में ग्रहमैत्री विमर्श का वर्णन है। इन दोनों इकाईयों में ग्रहों के परस्पर बलाबल की जानकारी लेने के बाद आप विवाह के सम्बन्ध में ग्रहों की मैत्री, अथवा अन्य सभी पक्षों में ग्रहों की परस्पर शत्रुता तथा मित्रता का अध्ययन करके कुण्डली निर्माण प्रक्रिया के प्रारम्भिक स्वरूप से लेकर मेलापक तक की विधि समझा सकेंगें।

इकाई 1 षड्वर्ग विचार

संरचना

1.1 उद्देश्य

इस इकाई का प्रमुख उद्देश्य षड्बल विचार है। वस्तुतः ज्योतिष शास्त्र में षड्बल की अहम् भूमिका है। विशेष करके फलादेश के सिद्धान्त में षड्बल को प्रधानता प्रदान की गई हैं। ज्योतिष विज्ञान में सूर्यादि नवग्रहों में पांच तारा ग्रह, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एवं दो छाया ग्रह राहु और केतु का सूर्य चन्द्रमा सहित नवग्रहों का प्रत्येक ग्रह का होरा बल, द्रेष्काण बल, नवांशबल, द्वादशांश बल और त्रिशांश बल का प्रत्येक ग्रह के साथ समन्वय स्थापित करते हुए प्रत्येक बल के द्वारा प्राप्त सकारात्मक एवं नकारात्मक दो पक्षों को ध्यान में रखते हुए फलादेश किया जाता है। यही एक आज प्रमुख कारण है कि आज के आधुनिक दैवज्ञ केवल जन्मांक चक्र एवं दशा पर ध्यान केन्द्रित करके फलादेश करते हैं। जिसके फलस्परूप आज ज्योतिषियों का बाजारीकरण तो पूर्व की अपेक्षा वर्तमान में कहीं अधिक दृग्गोचर हो रहा है। परन्तु चिन्तन का विषय है कि आज ज्योतिष का बाजारीकरण तो हुआ परन्तु वास्तविक ज्ञान को आज का दैवज्ञ नहीं जान पाया। जिसका दुष्प्रभाव समाज में यह पड़ रहा है कि आज ज्योतिष की प्रतिष्ठा धूमिल होती दिखाई दे रही है। इसलिए ज्योतिष शास्त्र के मूल सिद्धान्तों का अध्ययन करना परमावश्यक है इसी को ध्यान में रखते हुए षड्वर्ग विचार परमावश्यक है अतः षड्वर्ग अध्ययन कराना ही प्रमुख उद्देश्य है।

1.2 प्रस्तावना

इस इकाई के द्वारा पाठकों को षड्वर्गों के विषय में विस्तृत रूप से जानकारी प्रदान की जाएगी। प्रत्येक वर्ग का गणितीय विधि के द्वारा हल करने के नियमों को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया जाएगा। वस्तुत ज्योतिष विज्ञान में जन्माङ्ग चक्र के इतर अन्य षोडश चक्रों का एक नियम है। उनमें से प्रमुख छः वर्गों के विषय में विशेष रूप से हम यहाँ चर्चा करेंगे। जिसमें सर्वप्रथम गृहचक्र या वर्ग के विषय में उल्लेख करेंगे गृहवर्ग में चन्द्रमा को आधार मानकर जन्माङ्ग चक्र के आधार पर गृहवर्ग या चन्द्रकुण्डली का निर्माण किया जाता है। इसी क्रम में अन्य वर्गों का निर्माण एवं जातक के जीवन में उनका उपयोग और फलादेश के विषय में सूक्ष्म रूप से जानकारी प्राप्त करने हेतु ज्योतिष शास्त्र में षड्वर्ग की अहम् भूमिका है। वस्तुतः प्रत्येक वर्ग का

अपना परिक्षेत्र है जैसे जातक के मन की समस्त गतिविधियों को जानने हेतु चन्द्रकुण्डली को आधार मानकर जातक की मानसिक स्थिति का आकलन किया जा सकता है। ठीक इसी प्रकार अन्य वर्गों के माध्यम से अन्य विषयों के बारे में जाना जा सकता है। यही समस्त विषयों का उपयोग जातक के जीवन कब कहाँ कैसे होना है और जातक का क्या भविष्य होगा? इस प्रकार के समस्त विषयों के बारे में जानकारी हम इस इकाई के माध्यम से ग्रहण करेंगे।

1.3 षड्वर्ग विचार

वस्तुतः ज्योतिष शास्त्र विज्ञान है और विज्ञान की सामान्य परिभाषा है कि '**विशिष्टं ज्ञानम् इति विज्ञानम्**' जिस भी शास्त्र में या विषय में विशेष ज्ञान के विषय में चर्चा की गई हो उसे विज्ञान कहते हैं। जैसे हिन्दी एक भाषा है। यहाँ हिन्दी भाषा से सम्बन्धित समस्त भाषा विज्ञान के विषय में उल्लेख समाहित रहता है, ठीक इसी प्रकार से जीवों से सम्बन्धित विषय में जिसमें ज्ञान रहता है उसे जीव विज्ञान, वनस्पतियों से सम्बन्धित जहाँ पर ज्ञान की बात हो उसे वनस्पति विज्ञान इत्यादि समस्त जो विषय है उन उन से सम्बन्धित जहाँ चर्चा रहती है उस विषय का उस विषय से सम्बन्धित ज्ञानवशात् नामकरण कर दिया जाता है। जैसे भूमण्डल से सम्बन्धित भौतिक विज्ञानादि। इसी प्रकार से ज्योतिष विषय में समस्त खगोल, भूगोल, भूगर्भ, वनस्पति जगत् एव यहाँ तक कि ब्रह्माण्ड में घटित होने वाली समस्त घटनाओं के विषय में जानकारी सूक्ष्म रूप से समाहित रहती है। यहाँ तक कि ब्रह्माण्डीय ज्ञान के साथ मानव समाज के व्यक्तिगत जीवन के विषय में, मानसिक एवं शारीरिक बाह्य एवं आन्तरिक समस्त ज्ञान का स्रोत ज्योतिष विज्ञान है। इसी के साथ साथ ज्योतिष एक ऐसा विज्ञान है जो अपनी प्रत्यक्षता सिद्ध करता है। इसके विषय में दैवज्ञों एवं महर्षियों द्वारा कहा गया है कि–

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यस्य साक्षिणौ।।

अतः ज्योतिष ही एक ऐसा शास्त्र है जो कि प्रत्यक्षता के आधार पर कार्य करता है। अन्यान्य जितने भी शास्त्र हैं अनुमानाधारित हैं। अतः इसकी प्रत्यक्षता के कारण ही आज प्रत्येक मानव की दिनचर्या में ज्योतिष समाया हुआ है। इस इकाई में हम षड्वर्गों के विषय में विस्तृत रूप से ज्ञान ग्रहण करेंगे। उनकी मानव जीवन में क्या उपयोगिता है? गणितीय विधि से किस प्रकार से उनको हल करना इत्यादि समस्त षड्वर्गों से सम्बन्धित ज्ञान के विषय में विस्तार से ज्ञान ग्रहण करेंगे।

1.3.1 गृह एवं होरा वर्ग साधन

जन्माङ्ग चक्र के बारह भावों के भिन्न भिन्न विषयों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। जिसमें प्रत्येक भाव कहीं न कहीं हमारे साथ सम्बन्ध बनाए हुए है। यथा प्रथम भाव से शरीर की समस्त गतिविधियाँ। यथा शरीर की बनावट, शरीर का वर्ण, शारीरिक गठन, लम्बाई–चौड़ाई, चेहरे–मुख की बनावट के विषय में एवं शरीर के सुख संसाधन एवं अवयवो के विषय में ज्ञान ग्रहण किया जाता है। द्वितीयभाव कुटुम्ब भाव या धन भाव के नाम से भी जाना जाता है। द्वितीय से सम्बन्धित समस्त सकारात्मक एवं नकारात्मक विषयों का ज्ञान, पारिवारिक सुख–समृद्धि एवं पारिवारिक सकारात्मक एवं नकारात्मक स्थिति का आकलन, धन का आगमन किन किन साधनों से होगा, व्यक्ति के जीवन में कोश की क्या भूमिका होगी इत्यादि समस्त विषयों का ज्ञान द्वितीय भाव से किया जाएगा।

पराक्रम, लघुभ्राता इत्यादि विषयों का विचार तृतीय भाव से, माता का स्वास्थ्य, बहन, भूमि, भवनादि चतुर्थभाव से, विद्या, बुद्धि, उच्चशिक्षा, सन्तति विचार पंचम भाव से, रोग, शत्रु, व्रणादि एवं मातुल विचार षष्ठ भाव से, स्त्री, व्यापार, पति–पत्नी परस्पर सामंजस्य का विचार सप्तम भाव से, मृत्यु एवं आयु, मारकेश विचार अष्टम भाव से होता है। धर्म भाग्यादि समस्त पुण्यकर्मों के विषय में नवम भाव से विचार करना चाहिए। कर्म, आकाश, पिता का स्वास्थ्य कार्य क्षेत्र का विचार दशमभाव से करना चाहिए। लाभ, आय, आमदनी के संसाधनों के विषय में एकादश भाव से विचार होता है। व्यय, धर्म के क्षेत्र में, अधर्म के क्षेत्र में इत्यादि समस्त विषयों के बारे में द्वादश भाव से विचार करना चाहिए। यहाँ पर द्वादश भावों से विचारणीय आवश्यक था गृहवर्ग एवं होरावर्ग से किन किन विषयों पर विचार करना चाहिए क्यों आवश्यक है उसका सामान्य जीवन में क्या उपयोग है इन विषयों को लेकर विचार करना चाहिए।

द्वादश भावों से विचारणीय विषयों के बारे में शास्त्रोक्त दृष्ट्या यथा–

देहं द्रव्यपराक्रमौ सुखसुतौ शत्रुः कलत्रास्मृतिः
भाग्यं राज्यपदं क्रमेण गदिता लाभव्ययौ लग्नतः।
भावा द्वादश तत्र सौख्यशरणं देहे मतं देहिनां
तस्मादेव शुभाशुभाख्यफलजः कार्यो बुधैर्निर्णयः।।

यहाँ पर द्वादश भावों के विषय में जानना इसलिए आवश्यक था कि इस उपखण्ड में गृहवर्ग एवं होरावर्ग के विषय में हम अध्ययन करेंगे।

यथा–

गृहं होरा च द्रेष्काणो नवांशो द्वादशांशकः।
त्रिशांशश्चेति षड्वर्गास्ते सौम्यग्रहजाः शुभाः।।

गृह, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश तथा त्रिशांश का षड्वर्ग में समावेश होता है।

अथ जन्माङ्गचक्रम्

गृहचक्रम् (राशिचक्रम्)
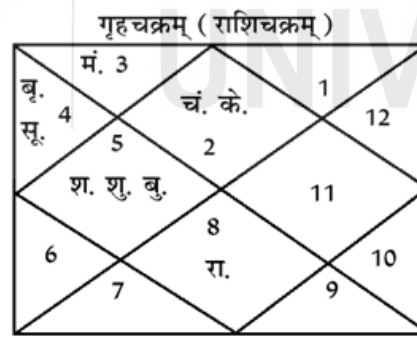
1. **गृहवर्ग–** गृहवर्ग का निर्माण जन्मांग चक्र को आधार मानकर किया जाता है। गृहवर्ग से तात्पर्य यहाँ पर राशिचक्र अर्थात् जन्मांग चक्र में जिस भाव में चन्द्रमा की स्थिति रहती है। उसी भाव को लग्न मानकर गृहवर्ग का निर्माण किया जाता है। और सभी ग्रहों को राश्यानुसार स्थापित किया जाता है। **'चन्द्रमा मनसो जातः'** वैदिक मन्त्रानुसार चन्द्रमा को विराट पुरुष के मन से उत्पत्ति होना माना जाता है। इसलिए किसी भी जातक के मन की मानसिक स्थिति का उपयुक्त अवलोकन करने हेतु आवश्यक है कि चन्द्र कुण्डली में चन्द्रमा की राशिवशात् स्थिति चन्द्र स्थित राशि पर ग्रहों की शत्रु एवं मित्र दृष्टि और चन्द्रमा के बलाबल के अनुसार सही आकलन करके निर्णय लेना चाहिए। यही जातक के फलादेश का सिद्धान्त है।

होरा– अहोरात्र शब्द से होराशास्त्र की उत्पत्ति होती है। अहोरात्र शब्द के आदि अक्षर 'अ' और अन्तिम अक्षर 'त्र' का लोप कर देने पर होरा शेष रहता है। अहोरात्र दिन व रात का सूचक है जबकि होरा एक घण्टे का सूचक है। होराशास्त्र के माध्यम से जातक के जन्म–जन्मान्तर में किए गए शुभाशुभ कर्मों का पंक्तिबद्ध ढंग से फलप्राप्ति हेतु उपयोग किया जाता है। होराशास्त्र में केवल दो ग्रहों सूर्य और चन्द्रमा की अहम् भूमिका होती है। चूँकि सूर्य ग्रहों का राजा भी है और कालपुरुष के शरीर में आत्मा के रूप में अवस्थित है। चन्द्रमा विराट पुरुष के मन से उत्पन्न होने के फलस्वरूप कालपुरुष के शरीर में मन के रूप में अवस्थित है। होराचक्र में सूर्य और चन्द्रमा दोनों ग्रहों का प्रमुख योगदान रहता है। यदि लग्न समराशिगत हो तो होरालग्न कर्क होगा और यदि लग्न विषमराशिगत हो तो होरालग्न सिंह रहेगा। इसी गणितीय प्रक्रिया के अन्तर्गत अन्य ग्रहों का आकलन करके सम और विषमराशियों में ग्रहों को स्थापित किया जाता है। जैसा लग्न समराशिगत है तो होराकुण्डली में लग्न कर्क रहेगा और सप्तमभाव में सिंह राशि होगी, और सूर्यादि ग्रहों की स्थापना का क्रम कुछ इस प्रकार से रहेगा। जैसे सूर्य कन्या राशि में है तो लग्न में रहेगा। चन्द्रमा भी किसी समराशि जैसे वृश्चिक में है तो वह भी लग्न में रहेगा और यदि भौम ग्रह मेष राशि में है तो सिंहराशि की होरा में अवस्थित होगा। होराशास्त्र के विषय में दैवज्ञों का मत कुछ इस प्रकार से है–

होरेत्यहोरात्रविकल्पमेके वांछन्ति पूर्वापरवर्णलोपात्।
कर्मार्जितं पूर्वभवे सदादि यत् तस्य पंक्ति समभिव्यनक्ति।।

अपि च

सारावलीकार के मतानुसार भी होराशास्त्र के विषय में कुछ इस प्रकार से कहा गया है कि आदि और अन्तिम वर्ण का लोप कर देने पर होरा शेष रहता है। होराशास्त्र के माध्यम से ग्रहों की गणना करके जातक के भूत भविष्य और वर्तमान के विषय में चिन्तन करना चाहिए। यथा–

आद्यन्तवर्णलोपाद्–होराशास्त्रं तत्प्रतिबद्धश्चायं ग्रहभगणश्चिन्तयते यस्मात्।।

तथापि होराशास्त्र के विषय में और भी कुछ इस प्रकार से कहा गया है। 30^0 अंशों का एक लग्न होता है और उसके आधे भाग यानि कि 15^0 अंश की एक होरा होती है। इस प्रकार से एक राशि में 15^0–15^0 अंश की दो होरा होती है। विषम राशि में प्रथम होरा सूर्य की और द्वितीय होरा चन्द्रमा की होती है। इसी प्रकार से समराशि की प्रथम होरा सूर्य की और द्वितीय सूर्य ग्रह की होरा होती है। यथा–

त्रिंशद्भागात्मकं लग्नं होरा तस्यार्धमुच्यते।
मार्तण्डेन्द्वोरयुजि समभे चन्द्रभान्वोश्च होरे।।

उदाहरण यथा– मान लीजिए किसी जातक का तुला जन्म लग्न विषम राशि है। 15^0 अंश से न्यून है। अतः लग्न में सूर्य की होरा होगी। होराचक्र में केवल दो ही राशि रहती हैं सिंह और कर्क। अतः सिंह राशि यदि लग्न होती है तो कर्क राशि उसके सम्मुख होती है। इसी प्रकार का दूसरा उदाहरण लेते है कि सूर्य कर्क राशि के 15^0 अंश से स्वल्प होने के कारण कर्क राशि की पहली होरा होगी इसलिए कर्क लग्न होगा और सूर्य की स्थिति कर्क राशि में होगी और चन्द्र वृषभ राशि के 24^0 अंश पर है। अतः चन्द्रमा यहाँ पर दूसरी होरा होने के कारण सिंह राशि में अवस्थित होगा। चूँकि समराशि की पहली होरा कर्क होगी। और दूसरी सिंह होगी। इसी प्रकार से अन्य ग्रहों का भी विन्यास करना चाहिए।

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु	लग्न
2 7 19 25	1 29 25 41	2 17 13 00	4 1 34 59	3 5 45 34	4 20 42 15	4 6 41 56	7 10 9 18	1 10 9 18	6 5 37 59
56 56	852 04	40 26	30 22	13 57	44 52	06 56	03 ,,	03 ,,	

उपर्युक्त ग्रहस्पष्टीकरण के आधार पर ग्रहों का विन्यास होरा कुण्डली में कुछ इस प्रकार से होगा। सूर्य समराशि में है अतः चन्द्रमा की होरा में रहेगा। चन्द्रमा वृष राशि की द्वितीय होरा में है अतः सिंह राशि में अवस्थित रहेगा। मंगल ग्रह विषम राशि की द्वितीय होरा में है इसलिए कक्र राशि में होगा। बुध ग्रह सिंह राशि की प्रथम होरा में है इसलिए सिंह राशि में रहेगा। बृहस्पति कक्र राशि की प्रथम होरा में है इसलिए बृहस्पति कक्र राशि में अवस्थित होगा। शुक्र सिंह राशि की द्वितीय होरा में है इसलिए कक्र राशि में शुक्र ग्रह होगा। शनि सिंह राशि की प्रथम होरा में है इसलिए कक्र राशि की होरा में होगा। केतु वृष राशि की प्रथम होरा में है इसलिए कक्र की होरा में होगा। लग्न तुला राशि की प्रथम होरा में है इसलिए होरा कुण्डली का लग्न सिंह होगा।

होराचक्रम्
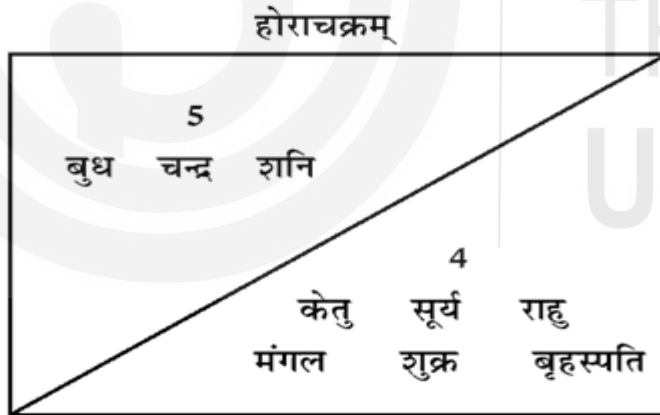
'सुखे–दुःखे होरायाम्' जब जातक के जीवन के विषय में विचार किया जाना होता है तो हमें यहाँ प्रमुख रूप से जीवन में सुख–सौभाग्य, समृद्धि और भाग्य की अभिवृद्धि किस प्रकार से होगी यह विशेष हो जाता है। वस्तुतः मानव का स्वभाव है कि वह सुख–सौभाग्य के विषय में ही चिन्तन करता है। यह सुख–सौभाग्य कैसे प्राप्त हो इसके विषय में वह भिन्न–भिन्न उपाय और प्रविधियों का उपयोग करता है। लेकिन ज्योतिषशास्त्र सूचकशास्त्र होने के कारण मानव स्वकर्मार्जित प्रारब्धवशात् प्राप्त होने वाले फल के विषय में चिन्तन करके शुभाशुभ फल के विषय में कहता है। इसलिए जब होराशास्त्र के विषय में विचार किया जाना हो तो केवल प्रारब्ध को ही अथवा संचित को ही ध्यान में रखकर विचार नहीं करना चाहिए, अपितु क्रियमाण कर्म को भी ध्यान में रखते हुए गोचर पद्धति का अनुसरण करना चाहिए। क्योंकि गोचर में प्रतिक्षण

आकाशीय ग्रह–गोचरवशात् ग्रहों की स्थितियाँ परिवर्तन वशात् फल देने में अहम् भूमिका रहती है। इसलिए होराशास्त्र में सुख–दुःख के विषय में विचार करते समय गोचर पद्धति को प्रधानता प्रदान करनी चाहिए। यथा–

विवाहे सर्व माङ्गल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे।
जन्मराशेर्प्रधानत्वं नामराशिं मा चिन्तयेत्।।

विशेष रूप से जीवन के वहन करने के विषय में चिन्तन हो अथवा सभी प्रकार के मंगल कार्यों के विषय में अथवा यात्रादि के विषय में चिन्तन करना हो तो जन्मराशि को प्रधानता प्रदान करनी चाहिए, नामराशि से चिन्तन नहीं करना चाहिए।

एवमेव इसी प्रकार से इस विषय में आचार्यों के द्वारा और भी कहा गया है–

सर्वेषु लग्नेष्वपि सत्सु चन्द्रलग्नं प्रधान खलु गोचरेषु।

सभी लग्नों में चन्द्र लग्न की प्रधानता है गोचर में इस प्रकार से विचार करना चाहिए। अपि च–

चन्द्रलग्नं शरीरं स्यात् लग्नं स्यात् प्राण संज्ञकम्।
ते उभे संपरीक्ष्यैव सर्वं नाडी फलं स्मृतम्।।

आचार्यों के कथनानुसार चन्द्रलग्न को शरीर और शरीर में जो प्राण है उसे लग्न कहा है। इसलिए दोनों के मध्य तारतम्यपूर्वक विचार करके फल कथन करना चाहिए।

यहाँ तक कि राजयोग के विषय में विचार करना हो अथवा गजकेसरी जैसे योग का विचार भी चन्द्रलग्न से ही किया जाना चाहिए। यथा–

नीचं गतो जन्मनि यो ग्रह स्यात्,
तद्राशि नाथोऽपि तदुच्च नाथः।
सचन्द्र–लग्लाद् यदि केन्द्रवर्ती
राजा भवेत् धार्मिक चक्रवर्ती।।

एवमेव इसी प्रकार से ज्योतिष के राजयोगों में प्रमुख गजकेसरी योग का भी विचार चन्द्रमा से ही किया जाता है। यथा–

केन्द्रस्थिते देवगुरौ मृगाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहिनैर्गजकेसरीति स्यात्।।

एवमेव यही क्रम सूर्य होरा में विचारणीय है–

सूर्याद् व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशिः।
उभयस्थितैर्ग्रहैन्द्रैरुभयचरी नामतः प्रोक्ता।।

यहाँ सूर्य को प्रधानता दी गई है। सूर्य ग्रह के द्वारा प्राप्त राज–योगों के विषय में कहा गया है। इसी प्रकार से असंख्य योग जातकशास्त्र में हैं जिसमें सूर्य और चन्द्रमा को आधार मानकर राजयोगों की कल्पना की गई है। इसलिए होराशास्त्र में आत्माकारक और मनकारक इन दोनों ग्रहों की प्रधान भूमिका है। इसलिए विचार अवश्य करना चाहिए। होराचक्र में दोनों होराओं में शुभाशुभ ग्रहों का आकलन करके जातक के जीवन और सुख–दुःख के विषय में विचार करके फलाफल करना चाहिए।

1.3.2 द्रेष्काण एवं नवांश साधन

एक राशि का कुल मान 30^0 अंश होता है। राशि के तृतीय भाग को द्रेष्काण कहते है या इस प्रकार से भी जाना जा सकता है कि राशि के तृतीयांश को द्रेष्काण कहते है। एक राशि में तीन द्रेष्काण होते हैं। एक एक द्रेष्काण 10^0 10^0 अंश का होता है। द्रेष्काण गणना का क्रम अन्य वर्गों की अपेक्षा भिन्न है। अर्थात् प्रथम द्रेष्काण एक से दस अंश तक उसी राशि का और दश से 20^0 अंश तक दूसरा द्रेष्काण उस राशि से पंचम राशि का होगा तृतीय द्रेष्काण प्रथम राशि से नवम अथवा दूसरी राशि पंचम राशि का द्रेष्काण होगा। अर्थात् तीनों द्रेष्काण एक दूसरे से पंचम राशि में रहते है। यथा स्पष्ट चक्र के माध्यम से जानें–

लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
3 7 19 25	1 29 25 41	2 17 13 00	4 01 34 59	3 5 45 34	6 5 37 59	4 20 42 15	4 06 41 56	7 10 9 18	1 10 9 18

यहाँ पर द्रेष्काण चक्र निर्माण हेतु हमें लग्न से प्रारम्भ करना चाहिए। तदुपरान्त अन्यान्य ग्रहों को स्थापित करना चाहिए। लग्न कक्र है इसलिए लग्न कक्र ही रहेगा चूँकि कक्र लग्न 10^0 अंश के मध्य है और नियमानुसार प्रथम द्रेष्काण उसी राशि का होता है अतः यहाँ पर लग्न की राशि कक्र ही रहेगी। एवमेव सूर्य वृष राशि के तृतीय द्रेष्काण में यहाँ पर वृष राशि से नौंवी राशि मकर होगी। अतः नियमानुसार द्रेष्काण चक्र में सूर्य मकर राशि में अवस्थित होगा। इसी प्रकार चन्द्रमा मिथुन राशि के 17° अंश पर है अतः द्वितीय द्रेष्काण हुआ नियमानुसार प्रथम से पंचम राशि तुला हुई अतः चन्द्रमा द्रेष्काण चक्र में तुला राशि में अवस्थित होगा। मंगल सिह राशि के प्रथम द्रेष्काण में है नियमानुसार प्रथम द्रेष्काण उसी राशि का रहता है अतः मंगल ग्रह द्रेष्काण चक्र में सिंह राशि में ही रहेगा। बुध कक्र राशि के प्रथम द्रेष्काण के 5° अंश पर है यहाँ पर भी बुध ग्रह की स्थिति द्रेष्काण चक्र में कक्र राशि में होगी। एवमेव गुरु ग्रह तुला राशि के 5° अंश पर अवस्थित है प्रथम द्रेष्काण है। यहाँ पर गुरु की स्थिति तुला राशि में होगी। शुक्र सिंह राशि के तृतीय द्रेष्काण में है। यहाँ पर शुक्र सिंह से नवम राशि मेष राशि होती है। अतः यहाँ पर शुक्र द्रेष्काण चक्र में मेष राशि में अवस्थित होगा। शनि सिंह राशि के प्रथम द्रेष्काण में है इसलिए नियमानुसार प्रथम द्रेष्काण उसी राशि का होता है। इस नियम को आधार मान कर शनि ग्रह की स्थिति द्रेष्काण चक्र में सिंह राशि ही होगी। राहु वृश्चिक राशि के दूसरे द्रेष्काण में है। अतः वृश्चिक से पाँचवीं राशि मीन हुई अतः राहु मीन राशि में रहेगा। केतु वृष राशि के दूसरे द्रेष्काण में है अतः केतु वृष से पाँचवीं राशि कन्या राशि में केतु अवस्थित होगा। इस प्रकार ग्रहों की गणना करके द्रेष्काण चक्र निर्माण करना चाहिए। यथा –

दृक्काणाः स्युः स्वभवनसुतत्रित्रिकोणाधिपानाम्।

1°–10°	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
11°–20°	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4
21°–30	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8

द्रेष्काण चक्रम्
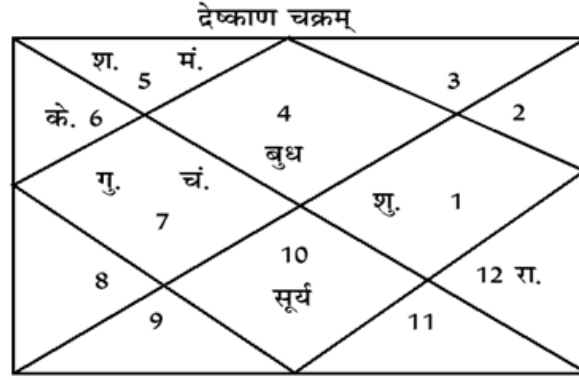
नवमांश वर्ग साधन– **''नवमोंऽशः इति नवमांशः''** राशि के नवें भाग को नवमांश कहते हैं। एक राशि 30° अंश की होती है। 30° अंशों में 9 से भाग देने पर प्रत्येक नवमांश की $3^\circ/20^{1}$ लब्धि प्राप्त होगी इसी लब्धि तुल्य राशि में 9 खण्ड होंगे। जिसमें नवमांश प्रारम्भ का क्रम इस प्रकार से रहेगा। मेष, सिंह, धनु राशियों में नवमांश का प्रारम्भ मेष राशि से होगा। वृष, कन्या, मकर राशियों में नवमांश का प्रारम्भ मकर राशि से, मिथुन, तुला, कुम्भ राशियों में नवमांश का प्रारम्भ तुला राशि से होगा। कक्र, वृश्चिक, मीन राशियों में नवमांश का प्रारम्भ कक्र राशि से होगा। यथा–

''मेषादिष्वजनक्रतौलिककुलीराद्या नवांशाः क्रमात्।''

उदाहरण– यदि मान लीजिए लग्न स्पष्ट $6/5^{0}/37^{1}/59^{11}$ है तो यह तुला राशि का दूसरा नवमांश हुआ। चूँकि प्रथम नवमांश का मान $3^\circ/20^{1}$ द्वितीय नवमांश का मान $6^\circ/40^{1}$ हुआ जबकि हमारा लग्न स्पष्ट तुला राशि के $5^\circ/37^{1}/59^{11}$ है। अतः मिथुन, तुला, कुम्भ राशियों में नवमांश का प्रारम्भ तुला राशि से होता है। इसी नियम के आधार पर तुला से दूसरा नवमांश वृश्चिक हुआ। अतः यहाँ पर लग्न का नवमांश वृश्चिक हुआ।

सूर्य स्पष्ट $3^{5}/7^{0}/29^{1}/25^{11}$ है अर्थात् कक्र राशि के तीसरे नवमांश में हुआ। कक्र, वृश्चिक, मीन राशियों में नवमांश का प्रारम्भ कक्र राशि से होता है। अतः यहाँ पर कक्र राशि से तृतीय नवमांश की गणना करेंगे तो कन्या राशि में सूर्य का नवमांश होगा।

चन्द्र स्पष्ट– $1^{5}/29^{0}/25^{1}/41^{11}$ है। यहाँ पर वृष राशि का अन्तिम नवमांश हुआ। वृष, कन्या, मकर राशियों में नवमांश की गणना मकर राशि से होती है। अतः वृष का अन्तिम नवमांश होने पर मकर राशि से नवीं राशि तक गणना करेंगे तो कन्या राशि के नवमांश में चन्द्रमा की स्थिति होगी।

मंगल स्पष्ट– $2^{5}/17^{0}/13^{1}/0^{11}$ है। यह मिथुन राशि के छठे नवमांश में है। पंचम नवमांश का मान $16^{0}/40^{1}$ तक है और षष्ठ नवमांश का मान 20^{0} अंश तक है। यहाँ पर मिथुन, तुला, कुम्भ राशियों में नवमांश की गणना तुला राशि से होने के फलस्वरूप मीन राशि के नवमांश में मंगल होगा।

बुध स्पष्ट– $4^{5}/1^{0}/34^{1}/59^{11}$ है। यह सिंह राशि के प्रथम नवमांश में है। यहाँ पर मेष, सिंह, धनु राशियों में गणना मेष राशि से होने पर बुध मेष राशि के नवमांश में स्थित होगा।

गुरु स्पष्ट– $3^{5}/5^{0}/45^{1}/34^{11}$ है। कक्र राशि के दूसरे नवमांश में है। कक्र राशि में है। कक्र, वृश्चिक, मीन राशियों में नवमांश का प्रारम्भ कक्र राशि से होता है। इस क्रम में कक्र राशि से गणना करने पर सिंह राशि गुरु की नवमांश राशि हुई।

शुक्र स्पष्ट– $4/20^{0}/42^{1}/15^{11}$ है। यहाँ पर शुक्र ग्रह सिंह राशि के 7वें नवमांश है। अतः मेष, सिंह, धनु राशियों के क्रम में मेष राशि से गणना करने पर तुला राशि में शुक्र की नवमांश राशि होगी।

शनि स्पष्ट– $4^{5}/6^{0}/41^{11}/56^{11}$ है। यहाँ पर शनि सिंह राशि के तीसरे नवमांश में है। मेष, सिंह, धनु राशियों में मेष राशि से गणना करने पर तृतीय राशि मिथुन शनि की नवमांश राशि हुई। अतः शनि मिथुन राशि के नवमांश में होगा।

राहु स्पष्ट– $7^{5}/10^{0}/9^{1}/18^{11}$ है। राहु यहाँ पर वृश्चिक राशि के चतुर्थ नवमांश में है। वृश्चिक राशि में गणना का क्रम कर्क राशि से होने पर राहु, तुला राशि में नवमांश में स्थित होगा।

केतु स्पष्ट– $1^{5}/10^{0}/9^{1}/18^{11}$ है। यहाँ पर केतु वृष राशि के चतुर्थ नवमांश में है। और वृष राशि में नवमांश गणना का क्रम मकर राशि से होने पर मेष राशि में केतु की स्थिति होगी।

नवमांशचक्रम्

राशि	3-20	6-40	10-00	13-20	16-40	20-00	23-20	26-40	30-00
मेष, सिंह, धनु	1	2	3	4	5	6	7	8	9
वृष, कन्या, मकर	10	11	12	1	2	3	4	5	6
मिथुन, तुला, कुम्भ	7	8	9	10	11	12	1	2	3
कर्क, वृश्चिक, मीन	4	5	6	7	8	9	10	11	12

नवमांश चक्रम्

8
9
10
11
7 रा. शु.
6 सू. चं.
5 बृ
2
12 मं
1 बु. के.
3 श.
4
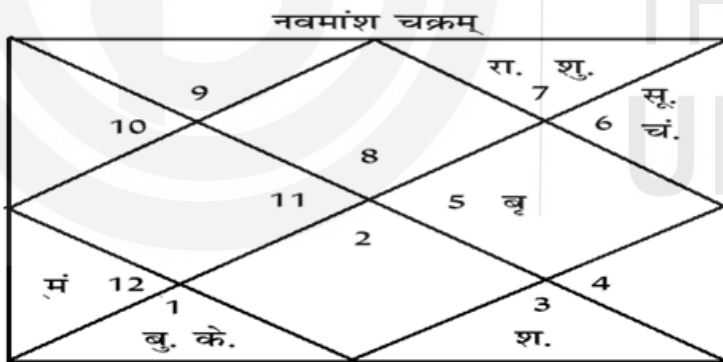
1.3.3 त्रिशांश एवं द्वादशांश साधन

त्रिशांश साधन में व्यावहारिक रूप से तीन खण्ड होने चाहिए। यहाँ हम आपको बता दें कि त्रिशांश साधन में नियम कुछ भिन्न हैं। त्रिशांश साधन में वर्गों की अपेक्षा राशि के अंशों को भाग देने या गुणित करने की प्रक्रिया से कुछ भिन्न रीति से त्रिशांश साधन करने की प्रक्रिया है। त्रिशांश साधन में नियमानुसार पाँच खण्ड निर्धारित हैं। यथा–

> **''कुजयमजीवज्ञसिताः पंचेन्द्रियवसुमुनीन्द्रियांशानाम्।**
> **अयुजि युजि तु ये विपर्ययस्थाः।''**

अर्थात् त्रिशांश प्रक्रिया में विषय राशि में क्रमशः 5, 5, 8, 7, 5 इन अंशों के पाँच खण्ड त्रिशांशों के होते है। इन खण्डों के क्रमशः स्वामी ग्रह होते है जैसे विषम राशि के

प्रथम पाँच अंश के स्वामी ग्रह क्रमशः मंगल, अग्रिम पाँच अंश का स्वामी ग्रह शनि और उससे अग्रिम अंशों का स्वामी ग्रह बृहस्पति, इसके उपरान्त 7 अंशों का स्वामी ग्रह बुध और अन्तिम 5^{0} अंशों का स्वामी ग्रह शुक्र है। सम राशियों में त्रिशांश की गणना विपरीत क्रम में होती है। अर्थात् यहाँ पर अंशों की स्थिति कुछ इस प्रकार से होगी यथा– 5, 7, 8, 5, 5 इन अंशों के स्वामी ग्रह भी इसी क्रम में स्थापित किए जाएंगे। इनका क्रम विपरीत ढंग से ही होगा यथा– शुक्र, बुध, गुरु, शनि तथा मंगल स्वामी होते हैं। खण्ड स्वामियों की दो दो राशियाँ होती है। विषम राशि में उस ग्रह की विषम राशि का स्वामी होगा और सम राशि में सम राशि का स्वामी ग्रह त्रिशांश होगा। यथा–

लग्न स्पष्ट– $6^{5}/5^{0}/37^{1}/59^{11}$ है। यहाँ पर लग्न तुला राशि यानि विषम राशि के दूसरे खण्ड में है। चूँकि प्रथम खण्ड केवल पाँच अंश तक था। यहाँ पर 5^{0} अंश 37^{1} और 59^{11} है कला विकला अधिक होने के फलस्वरूप द्वितीय खण्ड हुआ। द्वितीय खण्ड का स्वामी ग्रह शनि होते हैं। अतः शनि की एक मकर राशि सम है। और द्वितीय कुम्भ राशि विषम है। इस क्रम में विषम राशि में विषम राशि का त्रिशांश होने के फलस्वरूप द्वितीय शनि ग्रह की विषम राशि कुम्भ राशि लग्न की त्रिशांश हुई।

सूर्य स्पष्ट– $3^{5}/7^{0}/19^{1}/35^{11}$ है। यहाँ पर सूर्य कक्र राशि के द्वितीय खण्ड बुध में है। यहाँ पर समराशियों में विपरीत क्रम से गणना होगी अतः बुध ग्रह का द्वितीय खण्ड की द्वितीय राशि सूर्य की त्रिशांश राशि होगी यथा–बुध ग्रह की सम राशि कन्या हुई और विषम राशि मिथुन हुई परन्तु यहाँ पर समराशि में बुध है तो इसके अनुसार सूर्य की त्रिशांश राशि कन्या होगी। इस क्रम से त्रिशांश चक्र में सूर्य कन्या राशि में अवस्थित होंगे।

चन्द्र स्पष्ट–1/29/25/41 है। यहाँ पर चन्द्रमा वृष राशि के अन्तिम खण्ड अर्थात् 5^{0} अंश में स्थित है जिसका स्वामी ग्रह मंगल है और मंगल ग्रह की सम राशि वृश्चिक है और विषम राशि मेष है। चूँकि यहाँ पर सम राशि के विषय की है जिसके अनुसार सम राशि के अन्तिम त्रिंशांश खण्ड का स्वामी ग्रह मंगल है और मंगल ग्रह की सम राशि वृश्चिक है। अतः इसके आधार पर वृश्चिक राशि मंगल की त्रिशांश राशि हुई।

मंगलस्पष्टीकरण–$2^{5}/17^{0}/13^{1}/0^{11}$ है। यहाँ पर मंगल मिथुन विषम राशि के तृतीय खण्ड में है। तृतीय खण्ड का स्वामी ग्रह गुरु है। गुरु की धनु राशि विषम है और मीन राशि सम है। इसके अनुसार विषम राशि मिथुन के तृतीय खण्ड के अनुसार गुरु की विषम राशि मंगल ग्रह की त्रिशांश रही होगी। अतः त्रिशांश चक्र में मंगल धनुराशि में अवस्थित होगा।

बुधस्पष्टीकरण– $4^{5}/1^{0}/34^{1}/59^{11}$ है। यहाँ पर बुध सिंह राशि के प्रथम खण्ड में है चूँकि प्रथम खण्ड का मान 5^{0} अंश तक है। अतः प्रथम खण्ड का स्वामी ग्रह मंगल होगा इसके आधार पर मंगल की विषम राशि मेष हुई। अतः बुध मंगल की विषमराशि मेष में अवस्थित होंगे।

बृहस्पतिस्पष्टीकरण– $3^{5}/5^{0}/45^{1}/34^{11}$ है। यहाँ बुध ग्रह की स्थिति कक्र राशि अर्थात् सम राशि के द्वितीय खण्ड के विपरीत क्रम में है। द्वितीय खण्ड का स्वामी ग्रह बुध ग्रह है बुध की सम–विषम राशियों में सम राशि कन्या हुई। अतः नियमानुसार बुध की त्रिशांश राशि कन्या हुई। अतः बृहस्पति कन्या राशि में अवस्थित होंगे।

शुक्रस्पष्टीकरण– $4^{5}/20^{0}/42^{1}/15^{11}$ है। यहाँ पर शुक्र ग्रह सिंह राशि के चतुर्थ खण्ड में है। चतुर्थ खण्ड का स्वामी ग्रह बुध है। बुध ग्रह की सम–विषम के आधार

पर बुध की विषम राशि मिथुन है। अतः शुक्र मिथुन राशि त्रिशांश राशि होगी। अतः शुक्र मिथुन राशि में होंगे।

शनिस्पष्टीकरण– 4/6/41/56 है। यहाँ पर शनि सिंह राशि अर्थात् विषम राशि के द्वितीय खण्ड में शनि ग्रह की स्थिति है। द्वितीय खण्ड का स्वामी ग्रह शनि है और शनि सम–विषम के आधार पर शनि की मकर सम राशि और कुम्भ विषम राशि हुई। अतः शनि की त्रिशांश राशि कुम्भ हुई।

राहु स्पष्ट– $7^{5}/10^{0}/9^{1}/18^{11}$ है। यहाँ राहु ग्रह वृश्चिक राशि के द्वितीय खण्ड में विपरीत क्रम से है। द्वितीय खण्ड का स्वामी ग्रह बुध है। बुध की सम राशि कन्या है। अतः राहु त्रिशांश चक्र में कन्या राशि में स्थापित होंगे। अर्थात् राहु की त्रिशांश राशि कन्या हुई।

केतुस्पष्टीकरण– $1^{5}/10^{0}/9^{1}/18^{11}$ है। यहाँ पर केतु समराशि वृष के द्वितीय खण्ड में है और द्वितीय खण्ड का स्वामी ग्रह सम राशि के अनुसार बुध ग्रह हुआ। बुध ग्रह की सम राशि कन्या हुई लेकिन राहु केतु की स्थिति आकाशीय दृष्टि के अनुसार 180^{0} अंशात्मक के आधार पर राहु से केतु 180^{0} अंश के अन्तर पर सदा रहता है। अतः इसके आधार पर केतु त्रिशांश चक्र में मीन राशि में अवस्थित होंगे।
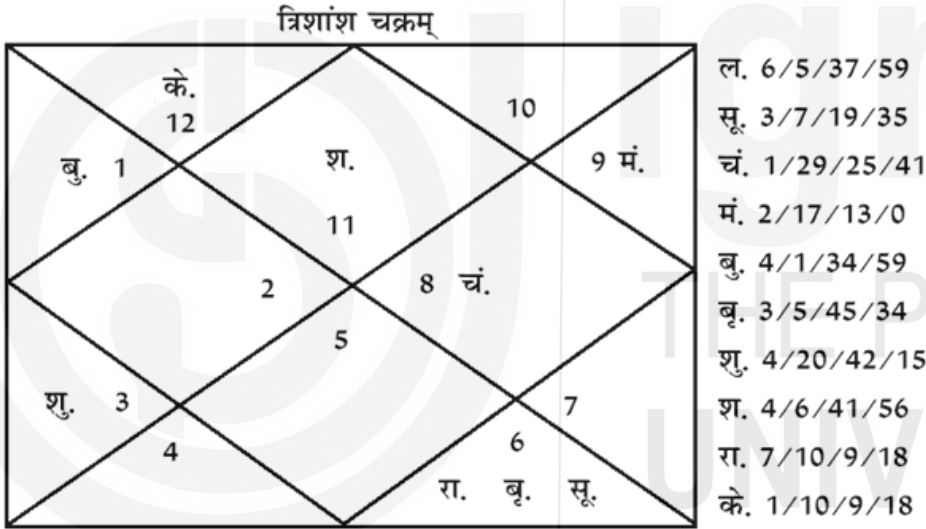
द्वादशांश वर्ग साधनम्– एक राशि में 30^{0} अंश होते हैं और 12 संख्या से भाग देने पर द्वादशांश साधन होंगे। जिसमें एक द्वादशांश साधन का $2^{0}/30^{1}$ फल प्राप्त होता है। या इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि एक द्वादशांश का मान $2^{0}/30^{1}$ होता है। एक राशि में $2^{5}/30^{0}$ के समान बराबर बारह भाग होते हैं। द्वादशांश का प्रारम्भ अपनी राशि से ही होता है। अर्थात् मान लीजिए किसी द्वादशांश का प्रारम्भ सिंह राशि से हुआ तो विचार यह किया जाना चाहिए कि कौन से द्वादशांश में है मान लीजिए सिंह राशि का तृतीय द्वादशांश है तो सिंह से क्रमशः गणना करेंगे तो तुला राशि का द्वादशांश होगा। यथा–

स्युर्द्वादशांशा निजभाद्विचिन्त्याः।

लग्नस्पष्टीकरण– $6^{5}/5^{0}/37^{1}/59^{11}$ है। अतः यहाँ पर यह जानना आवश्यक है कि कौन से द्वादशांश में लग्न स्पष्ट है। $2/30^{0}$ का एक द्वादशांश होने के फलस्वरूप तृतीय द्वादशांश तुला राशि के लग्न स्पष्ट की स्थिति है। अतः इस आधार पर तुला से तृतीय राशि गणना करने पर धनुराशि होगी। अतः लग्न का द्वादशांश धनु राशि होगी।

सूर्य स्पष्ट– $3^{5}/7^{0}/29^{1}/35^{11}$ है। यहाँ पर कर्क राशि के तृतीय द्वादशांश में सूर्य ग्रह की स्पष्ट स्थिति है अतः सूर्य की द्वादशांश राशि कन्या हुई।

चन्द्रस्पष्टीकरण– $1^{5}/29^{0}/25^{1}/41^{11}$ है। यहाँ पर वृषराशि का अन्तिम द्वादशांश है। वृष राशि से गणना करने पर वृष राशि से अन्तिम द्वादशांश राशि मेष हुई। अतः चन्द्रमा की द्वादशांश राशि मेष होगी।

मंगलस्पष्टीकरण– 2/17/13/0 है। यहाँ पर मंगल मिथुन राशि के सातवें द्वादशांश में है। अतः मिथुन राशि से सातवीं राशि धनु हुई। अतः मंगल की द्वादशांश राशि धनु होगी।

बुधस्पष्टीकरण– $4^{5}/1^{0}/34^{1}/59^{11}$ है। यहाँ बुध ग्रह सिंह राशि के प्रथम द्वादशांश में है। अतः नियमानुसार बुध ग्रह की द्वादशांश राशि सिंह हुई।

बृहस्पतिस्पष्टीकरण– $3^{5}/5^{0}/45^{1}/34^{11}$ है। यहाँ पर बृहस्पति कर्क राशि के तृतीय द्वादशांश में है। अतः बृहस्पति की द्वादशांश राशि कन्या हुई।

शुक्रस्पष्टीकरण– $4^{5}/20^{0}/42^{1}/15^{11}$ है। यहाँ पर शुक्र ग्रह सिंह राशि के 9वें द्वादशांश में है। अतः नियमानुसार सिंह राशि से नवीं राशि गणना करने पर मेषराशि हुई। अतः शुक्र ग्रह की द्वादशांश राशि मेष होगी।

शनिस्पष्टीकरण– $4^{5}/6^{0}/41^{1}/56^{11}$ है। यहाँ पर शनि ग्रह की स्थिति सिंह राशि के तृतीय द्वादशांश में है। अतः सिंह से तृतीय राशि तुला शनि की द्वादशांश राशि होगी।

राहुस्पष्टीकरण– 7/10/9/18 है। यहाँ पर राहु वृश्चिक राशि के 5वें द्वादशांश में है। अतः वृश्चिक से पाँचवीं राशि मीन राहु की द्वादशांश राशि होगी।

केतुस्पष्टीकरण– 1/10/9/18 है। यहाँ पर केतु ग्रह वृष राशि 7वें द्वादशांश में है। अतः वृष से पंचम राशि गणना करने पर कन्या राशि केतु ग्रह की द्वादशांश राशि होगी।
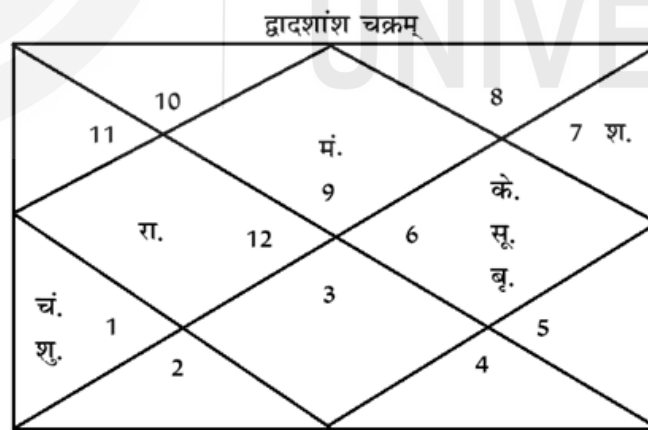
1.4 सारांश

इस इकाई में आपने षड्वर्ग विचार के विषय में अध्ययन किया होगा। वस्तुतः जन्मांग चक्र के स्पष्ट ग्रह एवं लग्न के आधार पर षड्वर्गों का साधन किया जाता है। इन सभी अहम् विषय उद्देश्य एवं प्रस्तावना में भी उद्धृत कर दिए गए थे चूँकि षड्वर्ग विषय में यह भी संक्षेप में जान लेना आवश्यक होगा कि मुख्य भाग षड्वर्ग साधन में क्या आधार होगा। षड्वर्ग क्यों आवश्यक है? ज्योतिष की परिभाषा के माध्यम से

षड्वर्ग हेतु आवश्यक बिन्दुओं के विषय को दर्शाया गया है। उपखण्ड एक दो और उपखण्ड तीन षड्वर्गों में विभाजित करते हुए प्रत्येक उपखण्ड में जैसे उपखण्ड एक में गृह चक्र तथा होराशास्त्र के विषय में उल्लेख किया गया है। होराशास्त्र के विषय में संक्षेप में जानकारी दी गई है। उपखण्ड दो में द्रेष्काण एवं नवमांश साधन के विषय में चक्र के माध्यम से स्पष्ट करते हुए उल्लेख किया गया है। तृतीय उपखण्ड में त्रिशांश साधन एवं द्वादशांश साधन के विषय में गणितीय आधार बनाकर चक्र निर्माण करते हुए सरलता पूर्वक साधन किया गया है। प्रयास किया गया है कि सरलतापूर्वक षड्वर्ग साधन को पाठक गण अध्ययन कर सकेंगे।

1.5 शब्दावली

षडवर्ग= छः वर्गों का समूह गृह, होरा, द्रेष्काण, नवांश, त्रिशांश और द्वादशांश।

होरा = राशि के आधे शग को होरा 15^0 अंश की एक होरा।

द्रेष्काण= राशि के तृतीय भाग को द्रेष्काण कहते है।

नवांश = राशि के नवें भाग को नवांश कहते हैं।

द्वादशांश= राशि के बारहवें भाग को द्वादशांश कहते हैं।

अप्रत्यक्षाणि= जो प्रत्यक्ष रूप से दिखाई न दे।

विवादस्तेषु = विवादों के हेतु केवल

चन्द्रार्कौ = सूर्य और चन्द्रमा

साक्षिणौ = साक्षि है। गवाह है।

हिमगुः = चन्द्रमा का नाम है

कलत्र = पत्नी का भाव नाम

मृतिः = मृत्यु के विषय में

गदिता = कहे गए हैं।

बुधैर्निर्णयः= विद्वानों के द्वारा लिया गया निर्णय

सौम्यग्रहजाः= ष्शुभग्रह

पूर्वापरवर्ण = आदि और अन्त का वर्ण

कर्मार्जितः = कर्मों के द्वारा अर्जित किया गया।

ग्रहभगणश्चिन्तयते = ग्रह एवं राशियों के विषय में चिन्तन

त्रिंशद्भागात्मकं = 30 अंशों का एक भाग

मार्तण्ड = सूर्य

समभे = समराशियाँ वृष, कक्र, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन

दृक्काणाः= द्रेष्काण राशि का तृतीय भाग

स्वभवन =अपनी राशि

सुत = पंचम स्थान या पंचम राशि

त्रित्रिकोणधिपानाम् = नवम भाव के स्वामी ग्रह

नक्र = मकर राशि का नाम

कुलीर = कक्र राशि

कुज = पृथ्वी पुत्र मंगल

यम = शनि

जीव = बृहस्पति

ज्ञ = बुध

सित = ष्शुक्र

अयुजि = विषम राशि

युजि = सम राशि

विपर्ययस्थाः = विपरीत

निजभाद्विचिन्त्या =अपनी राशि से विचार करना चाहिए

1.6 बोध प्रश्न

1. द्रेष्काण स्पष्ट करते हुए चक्र बनाकर दर्शाएँ।
2. षडवर्गों की क्या उपयोगिता है स्पष्ट करें।
3. उदाहरण देकर द्वादशांश साधन स्पष्ट करते हुए चक्र निर्माण करें।
4. अहोरात्र शब्द को स्पष्ट करते हुए होराशास्त्र की उपयोगिता सिद्ध करें।
5. स्वकल्पित उदाहरण द्वारा नवमांश साधन करते हुए नवमांश कुण्डली निर्माण करके प्रदर्शित करें।

1.7 सहायक उपयोगी पुस्तकें

1. भारतीय ज्योतिष, नेमिचन्द्रशास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, प्रकाशन नई दिल्ली।
2. भारतीय कुण्डली विज्ञान, मीठालाल हिम्मतराम ओझा, देवर्षि प्रकाशन वाराणसी, प्रकाशन वर्ष–2008
3. वृहत्पारासरहोराशास्त्रम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, टीकाकार, पद्मनाभशर्मा, प्रकाशन वर्ष 2012
4. जातकपारिजात, वैद्यनाथ, व्याख्याकार डॉ. हरिशंकर पाठक, प्रकाशन वर्ष 2012, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।
5. भारतीय ज्योतिष विज्ञान, डॉ. सुरकान्त झा, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
6. लघुपारासरी सिद्धान्त भाष्य, डॉ रत्नलाल, सत्यम् पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
7. बृहद्वकहोडाचक्रम्, डॉ. रत्नलाल, सत्यम् पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
8. जातकालंकार, सद्मनसेश्वरी व्याख्या सहित, डॉ. रत्नलाल, सत्यम् पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
9. विवाह, डॉ. रत्नलाल, सत्यम् पब्लिकेशन, सद्मनसेश्वरी व्याख्या सहित, नई दिल्ली।

इकाई 2 दृष्टि विचार

संरचना

2.1 उद्देश्य

इस इकाई का प्रमुख उद्देश्य है ग्रहों की दृष्टि विचार की सामान्य जीवन में उपयोगिता क्या है? वस्तुतः सामान्य व्यवहार में हम सब समाज में रहते हुए परस्पर दृष्टि वश इशारों इशारों में बहुत से कार्यों को सम्पन्न करते हैं। उसमें जिस प्रकार से समाज में हम लोग रहते हुए परस्पर मित्र/शत्रु या समान व्यवहार के साथ जीवन यापन करते हैं। हमारा व्यवहार जिस व्यक्ति विशेष के साथ मित्रवत् होता है तो हृदय में उत्साह रहता और आत्मनिर्भरता रहती है और हम कई कार्यों को परस्पर सहयोग के माध्यम से सम्पन्न कर लेते हैं। और जब यही स्थिति विपरीत होती है अर्थात् शत्रुवत् दृष्टि होती है तो भय से आक्रान्त होकर जीवन यापन करने में स्वछन्दता नहीं रहती है और प्रत्येक कार्य को करने से पूर्व हम अनेकों बार उसके परिणाम के विषय में चिन्तन करते हैं। ठीक इसी प्रकार से ग्रह गोचर विचार में दृष्टि का अहम् स्थान है। मित्र ग्रह दृष्टि होने पर ग्रह को आत्मबल की प्राप्ति होती है और उस ग्रह की दशा अन्तर दशा में कई शुभ कार्य सिद्ध हो जाते हैं। इस इकाई का प्रमुख उद्देश्य दृष्टि विचार, दृष्टि के प्रकार, शत्रु मित्र, सम दृष्टि के द्वारा कार्य सिद्धि के विषय में ज्ञान प्राप्त करना हेतु ही इस इकाई का उद्देश्य है।

2.2 प्रस्तावना

इस इकाई में हम दृष्टि ज्ञान के विषय में अध्ययन करेंगे। वस्तुतः शत्रुदृष्टि, मित्रदृष्टि, समदृष्टि के विषय प्रायः ज्योतिष शास्त्र के प्रत्येक ग्रन्थों में वर्णन उपलब्ध होता है। परन्तु दृष्टि के विषय में विस्तृत जानकारी हेतु अलग–अलग प्रकार की दृष्टि का उल्लेख हमें प्राप्त होता है। महर्षि पाराशरीय ग्रहदृष्टि विचार, जातक शास्त्रों में चरणबद्ध दृष्टि विचार, प्रश्न ग्रन्थों में गुप्त दृष्टि, प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष दृष्टि विचार इत्यादि प्रत्येक पद्धति द्वारा ग्रहगोचर विचार में उपयोग होने वाली दृष्टि के विषय में हम इस इकाई में अध्ययन करेंगे।

2.3 मुख्य भाग दृष्टि विचार

भारतीय ज्योतिष शास्त्र में अनेकों प्रकार की दृष्टि का उल्लेख हमें प्राप्त होता है। वस्तुतः दृष्टि विचार जिस प्रकार से मानव एक सामाजिक प्राणी है वह समाज में रहते हुए प्रत्येक मानव के साथ मित्रवत् व्यवहार या शत्रुवत् व्यवहार और एक जैसा व्यवहार प्रत्येक काल में सम्भव नहीं है। ठीक उसी प्रकार ग्रहों का भी परस्पर गुण दोष तत्त्वों के आधार पर परस्पर शत्रु मित्र सम्बन्ध हुआ करते हैं। ठीक उसी प्रकार से मानव जब समाज में रहता है तो उसके कई प्रकार के परस्पर सम्बन्ध होते हैं।उन्हीं सम्बन्धों के आधार पर हम बहुत से कार्यों को सिद्ध कर लेते हैं। ठीक उसी प्रकार से ग्रह दृष्टि भी परस्पर एक दूसरे ग्रह के लिए कार्य करते हुए कार्य सिद्धि को पूर्णता प्रदान करती है। दृष्टि के विषय में आचार्यों के भिन्न मत मतान्तर हैं।

महर्षि पाराशर के मतानुसार पूर्ण दृष्टि और विशेष दृष्टि के विषय में उल्लेख प्राप्त होता है जबकि जातक शास्त्र के आचार्य वराहमिहिरादि चरण दृष्टि के विषय में बल देते हैं। प्रश्नशास्त्र गुप्त, स्नेहकरी, न्यून दृष्टि को प्रधानता प्रदान करते हैं। जबकि जैमिनि ऋषि द्वारा राशि दृष्टि को प्रधानता दी गई है जबकि अन्य सभी ज्योतिष के ग्रन्थों में ग्रह दृष्टि के विषय में भिन्न भिन्न उल्लेख प्राप्त होते हैं। यहाँ पर हम भिन्न भिन्न आचार्यों द्वारा भिन्न भिन्न प्रकार की दृष्टि के विषय में अध्ययन करेंगे। सामान्य व्यवहार में दैवज्ञगण विशेष दृष्टि या पूर्ण दृष्टि के विषय में चर्चा करते हैं। परन्तु ज्योतिष के अलग अलग ग्रन्थों में दृष्टि के विषय में मत मतान्तर है। जातकशास्त्र चरण दृष्टि को बल देते हैं। जबकि महर्षि पाराशरशास्त्र में पूर्ण दृष्टि और विशेष ग्रह दृष्टि को बल प्रदान किया गया है। इसी क्रम में महर्षि जैमिनि द्वारा रचित जैमिनि सूत्र राशि दृष्टि पर बल देते हैं जबकि अन्य जातकशास्त्र ग्रह दृष्टि के विषय में समर्थन करते हैं। प्रश्नशास्त्र में कई प्रकार की दृष्टि का उल्लेख प्राप्त होता है जिसमें गुप्तस्नेह, प्रत्यक्षदृष्टि, एकपाददृष्टि, गुप्तशत्रुप्रदायिनी, न्यूनदृष्टि, त्र्यंशोन दृष्टि के विषय में वर्णन उपलब्ध होते हैं। वस्तुतः फलादेश के क्षेत्र में ग्रहों और राशियों में भिन्न भिन्न मत मतान्तर हैं तथापि उन मत मतान्तरों में अतिशयोक्ति इसलिए नहीं हो सकती क्योंकि महर्षि जैमिनि केवल अरिष्ट विषय को प्रधानता देते हैं। उनके मतानुसार जातक के जीवन में कदम कदम पर कष्ट आते हैं जिससे शरीरिक एवं मानसिक दोनों स्थितियों का ह्रास होता है। जिसके कारण कोई भी मानव जीवन में उन्नति नहीं कर पाता है। अतः सर्वप्रथम अरिष्ट निवारण का ध्यान देना चाहिए।महर्षि पाराशर विशेष दृष्टि के विषय में चर्चा करते हैं उनके मतानुसार ग्रहों की परस्पर दृष्टि के बल पर जातक के जीवन में पग पग पर आने वाली बाधाएँ स्वतः ही परस्पर दो ग्रहों अथवा तीन ग्रहों के सहयोग से दृष्टि वशात् सिद्ध हो जाती हैं। जातकशास्त्र के अनुसार दृष्टि का भिन्न स्थान है।

जातकशास्त्र पूर्ण दृष्टि तथा चरण दृष्टि को महत्त्व प्रदान करता है। जातकशास्त्र में फलादेश करने की विधा किंचिद् भिन्न है। अतः उसके आधार पर जातक का फलादेश करने पर चरण दृष्टि ही उपयुक्त फल प्रदान करती है और लोगों को ग्रहानुसार शुभाशुभ फल प्राप्त होते हैं। वस्तुतः ग्रहों की दृष्टि का जातक के जीवन पर विशेष प्रभाव पड़ता है। जिसके फलस्परूप जातक का आचार व्यवहार परिवर्तित होता है।यहाँ तक कि दृष्टि के प्रभाव से जातक के आकृति–प्रकार वर्णादि में भी परिवर्तन होता है। उसी दृष्टि के आधार पर दैवज्ञ जातक के मानसिक एवं बाह्य व्यवहार के विषय में भी बता पाने में समर्थ होते हैं। अतः यह निर्धारित करता है कि ग्रहों की परस्पर मित्र या शत्रुदृष्टि के उपर उसी के अनुरूप शुभाशुभ फल प्रदान करने में योगदान करते हैं। इसलिए ज्योतिष विज्ञान में दृष्टि की अहम् भूमिका है। फलादेश के सिद्धान्त में भाव, भावेश से सम्बन्ध, भावेश की स्थिति, भावेश के उपर शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टि का अहम्

योगदान रहता है। इसी के आधार पर जातक के भूत, भविष्य और वर्तमान के विषय में सही एवं सटीक जानकारी प्रदान की जा सकती है।

2.3.1 महर्षि पाराशरीय दृष्टि विचार

महर्षि पाराशरीय लघु पाराशरी में दृष्टि विचार को अन्य जातक ग्रन्थों से भिन्न माना गया है। जातक ग्रन्थों में दृष्टि को एकपाद, द्विपाद, त्रिपाद दृष्टि के रूप में तथा सभी ग्रह स्व–स्थान से 180अंश की डिग्री अर्थात् अपने से सप्तम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं जबकि पाराशरीय ग्रह दृष्टि विचार किंचिद् भिन्न है। महर्षि पाराशरीय सिद्धान्त में सभी ग्रह अपने स्थान से सप्तम स्थान स्थित ग्रह को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं। इसी क्रम से कुछ विशेष ग्रह जैसे शनि, बृहस्पति तथा मंगल अपनी विशेष दृष्टि रखते हैं। यथा शनि ग्रह अपने स्थान से तीसरे स्थान और दसवें स्थान को देखता है। बृहस्पति अपने स्थान से नवें और पाँचवें स्थान को और मंगल ग्रह अपने स्थान से चौथे और आठवें स्थान को विशेष दृष्टि से देखते हैं। यथा–

पश्यन्ति सप्तमं सर्वे शनिजीवकुजाः पुनः।
विशेषतश्च त्रिदशत्रिकोणचतुरष्टमान्।।

अन्य जातक ग्रन्थों में तीसरे और दसवें स्थान को एकपाद दृष्टि से, त्रिकोण अर्थात् नवें और पाँचवें स्थान को द्विपाद दृष्टि से, चतुर्थ और अष्टम स्थान को त्रिपाद दृष्टि का उल्लेख प्राप्त होता है।

परन्तु महर्षि पाराशर द्वारा एकपाद, द्विपाद, त्रिपाद दृष्टि नहीं मानी गई है अपितु शनि, बृहस्पति और मंगल की पूर्ण दृष्टि मानी गई है। यहाँ पाद दृष्टि की मान्यता नहीं है। उपर्युक्त श्लोक में सप्तम व त्रिकोणादि पदों का प्रयोग केवल सप्तमादि स्थान स्थित ग्रहों के लिए ही किया गया है। यहाँ सप्तम स्थित राशियों के लिए नही। पाराशर होराशास्त्र में ग्रहों की दशा का वर्णन उपलब्ध होता है। राशियों की दशा का वर्णन नहीं। यदि कोई राशि किसी ग्रह से दृष्ट मानी जाए और दृष्ट राशि में कोई ग्रह नहीं बैठा है तो क्या उस दृष्ट राशि के स्वामी पर उस द्रष्टा ग्रह का प्रभाव पड़ेगा इस प्रकार का वर्णन इस शास्त्र में उपलब्ध नहीं होता है।

उदाहरण– मान लीजिए किसी जातक की वृष लग्न कुण्डली में मंगल लग्नस्थ और शनि सप्तमस्थ, बृहस्पति तृतीयस्थ, तथा सूर्य नवमस्थ हो तो मंगल, शनि तथा सूर्य बृहस्पति परस्पर दृष्ट होकर परस्पर सम्बन्धित होंगे। ये योगकारी ग्रह कहलायेंगे। अब यदि हम इनकी राशियों के विषय में चर्चा करें तो सिंह और धनु राशि चतुर्थाष्टम के अनुसार मंगल ग्रह से दृष्ट मानी जाएगी तो उन दृष्ट राशियों के स्वामी सूर्य, बृहस्पति और मंगल का प्रभाव माना जाएगा। ऐसा इस शास्त्र के अनुसार मान्य नहीं है। जबकि जातकशास्त्र में ग्रह से दृष्ट राशि को फलादेश के लिए श्रेष्ठ माना गया है। परन्तु इस पाराशरशास्त्र के अनुसार ऐसा नहीं है।

जैमिनीय ज्योतिष में ग्रहों की दशा न चलकर राशियों की दशा किसी विशिष्ट नियम के अनुसार चलती है। इसलिए वहाँ पर यह नियम लागू नहीं होता है। वहाँ पर प्रत्येक राशि किसी न किसी राशि को देखती है चाहे वहाँ पर द्रष्टा ग्रह हो न हो। चूँकि वहाँ पर राशि दृष्टि का उल्लेख प्राप्त होता है। जैमिनीय ज्योतिष में राशियों की प्रधानता है राशि स्वामिग्रहों को नहीं। जबकि महर्षि पाराशर में राशिस्वामियों को प्रधानता है राशि स्वामी ग्रहों को नहीं। जबकि महर्षि पाराशर में राशि स्वामियों को प्रधानता है न कि राशियों को उसके लिए राशि स्वामी को प्रधानता होना महर्षि जैमिनि का अपना सिद्धान्त कार्य करता है। वहाँ द्वादश भावों का उल्लेख न होकर त्रिपताकि चक्र को प्रधानता दी गई है। वहाँ राशियों का राशियों से सम्बन्ध है और यहाँ भाव से राशियों

का उसके उपरान्त राशियों के स्वामियों का सम्बन्ध अन्त में भाव का भावेश से सम्बन्ध रह जाता है। यथा महर्षि पाराशरीय ग्रहों की दृष्टि–सीमा इस प्रकार होनी चाहिए।

1. सप्तम दृष्टि – बिन्दु = ग्रह स्पष्ट + 180^0 – सभी ग्रहों के लिए
2. तृतीय दृष्टि – बिन्दु = ग्रह स्पष्ट + 60^0 } शनि ग्रह की दृष्टि
   दशम , ,   , ,   = , ,   , ,   + 270^0
3. पंचम दृष्टि – बिन्दु = ग्रह स्पष्ट + 120^0 } गुरु ग्रह की दृष्टि
   नवम , , – बिन्दु = , , , , + 240^0
4. चतुर्थ दृष्टि – बिन्दु = ग्रह स्पष्ट + 90^0 } मंगल ग्रह की दृष्टि
   अष्टम , , – बिन्दु =, , , , + 210^0

इन दृष्टि बिन्दुओं के आस–पास अथवा आगे पीछे एक सीमा के मध्य की दृष्टि होनी चाहिए। यदि दृष्टि की यह सीमा 15^0 अंश आगे और 15^0 अंश पीछे रखी जाए तो उपयुक्त होगा। वास्तव में दृष्टि की सीमा निर्धारण करना अनुभव का विषय है। चूँकि ग्रह तो प्रत्येक पूर्ण दृष्टि से 180^0 अंश पर देखते हैं परन्तु क्या वह ग्रह स्पष्ट में बलवान् भी है क्या उस ग्रह के अन्दर इतनी सामर्थ्य है कि वह सामने वाले भाव अथवा ग्रह को देख सकता है। वस्तुतः जो दृष्ट ग्रह द्रष्टा के दृष्टि बिन्दु से जितना समीप होगा उस पर द्रष्टा ग्रह की उतनी ही तीव्र एवं प्रभावकारी दृष्टि होगी। दूर होने पर दृष्टि निर्बल होगी।

ग्रहों कर स्पष्टीकरण सायन हो या निरयण ग्रहों की दृष्टि का एक सा प्रभाव रहता है। उसमें निरयण या सायन स्पष्ट से कोई अन्तर नहीं पड़ता है। फलादेश में सायन या निरयण ग्रहस्पष्टीकरण में कोई अन्तर नहीं आएगा। वह एक समान ही फल देगा। अन्तर यदि होगा तो स्थानाधिप का हो सकता है।

पाश्चात्य ज्योतिष के अनुसार ग्रहों की सारणी

ग्रह का दृष्ट स्थान	अंग्रेजी नाम	दृष्टि का साधारण फल
ग्रह स्फुट + 40^0	samisextill	उत्तम फल
ग्रह स्फुट + 45^0	semisquare	निकृष्ट फल
ग्रह स्फुट + 60^0	sextile	उत्तम फल
ग्रह स्फुट + 72^0	quintile	मध्यम फल
ग्रह स्फुट + 90^0	square	निकृष्ट फल
ग्रह स्फुट + 120^0	trine	उत्तम फल
ग्रह स्फुट + 125^0	sesquiquadrate	निकृष्ट फल
ग्रह स्फुट + 144^0	Biquincumx	साधारण फल
ग्रह स्फुट + 150^0	quincumx	निकृष्ट फल
ग्रह स्फुट + 189^0	Oppositiou	निकृष्टफल

यह उपर्युक्त सारणी दृष्टि चक्र सभी ग्रहों के लिए है। सभी ग्रहों की दृष्टि की क्षमता 188 है। इसके उपरान्त जो ग्रह होते हैं वह दृष्ट के स्थान द्रष्टा हो जाते हैं अर्थात् वह देखने की अपेक्षा स्वयं देखे जाते हैं। यह दृष्टि यहाँ पर आवश्यक इसलिए भी थी कि आपको सम्पूर्ण दृष्टि के विषय में ज्ञान होना परमावश्यक है।

2.3.2 जातकशास्त्रीय ग्रह दृष्टि विचार

उपखण्ड एक में हमने महर्षि पाराशरीय ज्योतिष की दृष्टि के विषय में अध्ययन किया। यहाँ पर जातकशास्त्र सम्मत दृष्टि के विषय में अध्ययन करेंगे। वस्तुतः जातक व पाराशर में भिन्नता है केवल ग्रहों की यहाँ पर दोनों को प्रधानता दी गई है और पाराशर में जहाँ विशेष दृष्टि के विषय में चर्चा होती है। परन्तु उन्हीं स्थानों पर पाद दृष्टि के विषय में उल्लेख प्राप्त होता है पाराशरीय दृष्टि में शनि, मंगल और बृहस्पति के विषय में कहा गया है जबकि जातकशास्त्र उन्हीं स्थानों को आधार मानकर प्रत्येक ग्रह के लिए चरण दृष्टि या पाद दृष्टि के विषय में चर्चा करता है। पाराशरीय ज्योतिष केवल ग्रहों को आधार मानकर दृष्टि के विषय में चर्चा करता है जबकि जातकशास्त्र ग्रह, भाव एवं भावेश सभी को आधार मानकर विचार करता है। वहाँ पर विशेष दृष्टि का विशेष भागों को लेकर उल्लेख प्राप्त होता है जबकि यहाँ पर प्रत्येक निर्धारित भाव को एकपाद, द्विपाद, त्रिपाद दृष्टि के आधार पर चर्चा की जाती है। यथा–

संपश्यन्ति स्थानात्सदा ग्रहश्चरणवृद्धितः सर्वे।
त्रिदशत्रिकोणचतुरस्रसप्तमानां फलं क्रमेणैव।।

अर्थात् सभी ग्रह अपने स्थान से चरणबद्ध ढंग से तीसरे और दसवें स्थान को एक चरण दृष्टि से नवम और पंचम स्थान को दो चरणों की दृष्टि से और चतुर्थ अष्टम को तृतीय चरण की दृष्टि से तथा इसी के साथ सप्तम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं।

यहाँ यह बात धातव्य है कि राहु और केतु को ज्योतिषशास्त्र में छाया ग्रह की संज्ञा से उद्बोधित किया जाता है उनका कोई अपना पिण्ड नहीं है।आकाश में स्वाभाविक बात है कि जिसका कोई पिण्ड नहीं होगा तो उसकी दृष्टि भी नहीं होनी चाहिए परन्तु कुछ जातकशास्त्र के आचार्यों ने राहु केतु की दृष्टि का उल्लेख किया है। पंचम और सप्तम भाव पर राहु केतु की पूर्ण दृष्टि के विषय में कहा है। तृतीय स्थान पर शत्रुदृष्टि एकपाद से, द्वितीय और दशमभाव में आधी दृष्टि और अपने घर पर केतु त्रिपाद दृष्टि से देखता है। यथा–

सुते सप्तमे पूर्णदृष्टिस्तमस्य तृतीये रिपौ याददृष्टिर्नितान्तम्।
धने राज्यगेहेर्धदृष्टिं वदन्ति स्वगेहे त्रिपादं भवेच्चैव केतोः।।

जैमिनीय दृष्टि– पूर्व में भी जैमिनीय दृष्टि के विषय में उल्लेख कर चुके हैं कि जैमिनीय ज्योतिष में ग्रहों का नहीं अपितु दृष्टि में राशियों की प्रमुख भूमिका रहती है। उदाहरण के लिए– मेष राशि, सिंह, वृश्चिक या कुम्भ राशि में भी कोई ग्रह हुआ तो मेषराशिस्थ ग्रह सिंहस्थ या कुम्भस्थ ग्रहों को देखेगा। यहाँ ग्रहों की दृष्टि का नियम भी राशियों की दृष्टि के अधीन है। ग्रहों का अपना स्वतन्त्र कोई दृष्टि का नियम नहीं है।

जैमिनीय मतानुसार ग्रह दृष्टि चक्र–

द्रष्टाराशि	दृष्टराशि	द्रष्टाराशि	दृष्टराशि
1	5, 8, 9	10	2, 5, 8
2	4, 7, 10	11	1, 4, 7
3	6, 9, 12		
4	2, 12, 8	12	3, 6, 9
5	1, 10, 7		

6 9, 12, 3

7 11, 2, 5

8 10, 1, 4

9 12, 3, 6

2.3.3– ग्रहों द्वारा दृष्टि फल विचार/जातकशास्त्रीय ग्रह दृष्टि फल

भौम राशिस्थ सूर्य पर क्रम से चन्द्रकुजबुधों के दृष्टि फल विचार–

यदि मेष अथवा वृश्चिक राशि गत सूर्य को चन्द्रमा देखता हो, तो मनुष्य दान में लीन, बहुत भृत्य से युक्त, सुन्दर तथा युवतिप्रिय और कोमल शरीर वाला होता है। मेष अथवा वृश्चिक राशि गत सूर्य को मंगल देखता हो, तो पुरुष संग्राम में अत्यन्त बली, क्रूर, लाल नेत्र तथा हाथ, पैर से युक्त और तेज व बल से युक्त होता है। मेष तथा वृश्चिक राशि गत सूर्य को बुध देखता हो तो पुरुष दास वृत्ति करने वाला, सर्वदा परकार्य में रत, अल्प धनी, बलहीन तथा अत्यन्त दुःखी और मलिन शरीर से युक्त होता है।

भौम राशिस्थ सूर्य पर क्रम से गुरुशुक्रशनि दृष्टि फल विचार– मेष अथवा वृश्चिक राशि गत रवि को बृहस्पति देखता हो, तो पुरुष धनाढ्य, दानी, राजमन्त्री अथवा उत्तम दण्ड नायक होता है। मेष अथवा वृश्चिक राशि गत रवि को शुक्र देखता हो, तो पुरुष कुस्त्री का पति, बहुत शत्रु वाला, क्षीण बान्धव वाला, दीन और कुष्ठी होता है। मेष अथवा वृश्चिक राशि गत रवि को शनि देखता हो तो पुरुष दुःख युक्त शरीर वाला, कार्य में प्रमाद करने वाला, मूढ मति और मूर्ख होता है।

शुक्र राशिस्थ सूर्य पर क्रम से चन्द्र कुज का दृष्टि फल विचार– वृष या तुला राशि गत सूर्य को चन्द्रमा देखता हो, तो वैश्या का प्रेमी, मृदुभाषी, बहुत युवतियों का आश्रयी तथा जल जीवी होता है। वृष या तुला राशि गत सूर्य को मंगल देखता हो, तो पुरुष शूर, संग्राम में रुचि रखने वाला, तेजस्वी व साहस से धन तथा कीर्ति को पैदा करने वाला और व्याकुल होता है।

शुक्र भवनस्थ सूर्य पर क्रम से बुधगुरुसितशनि दृष्टि फल विचार– वृष अथवा तुला राशि में स्थित सूर्य, बुध से दृष्ट हो, तो पुरुष लिपि, लेख, काव्य, पुस्तक, ज्ञान, वाद्य आदि विधि में अत्यन्त निपुण तथा सुन्दर शरीर वाला होता है। वृष अथवा तुला राशि में स्थित सूर्य को बृहस्पति देखता हो, तो बहुत शत्रु तथा मित्र पक्ष से युक्त, राजमन्त्री, सुन्दर नेत्र वाला, प्रिय तथा राजा से सन्तुष्ट होता है। वृष तथा तुला राशि स्थित सूर्य यदि शुक्र से दृष्ट हो, तो राजा अथवा राजमन्त्री, बहुत धन और स्त्रियों से युक्त व बुद्धिमान् तथा डरपोक होता है। एवं वृष या तुला राशि में स्थित सूर्य यदि शनि से दृष्ट हो, तो पुरुष नीच, आलसी, दरिद्र, वृद्ध स्त्री से साथ करने वाला, विषमशील से युक्त तथा रोगी होता है।

बुध राशिस्थ सूर्य पर क्रम से चन्द्रकुज का दृष्टि फल विचार– बुध राशि में स्थित सूर्य को चन्द्रमा देखता हो, तो पुरुष शत्रु तथा बान्धवों की पीडा से तथा विदेश गमन से पीडित व अत्यन्त विलापी होता है। मिथुन अथवा कन्या राशि में स्थित सूर्य, मंगल से दृष्ट हो, तो पुरुष शत्रु जनित भय तथा कलह से युक्त और रण सम्बन्धी अपवादादि से दुःखी, दीन तथा सलज्ज होता है।

बुध राशिस्थ सूर्य पर क्रम से बुधगुरुसितशनि का दृष्टि फल विचार– मिथुन या कन्या राशि में स्थित सूर्य, यदि बुध से दृष्ट हो, तो पुरुष राजा के सदृश चरित वाला, प्रसिद्ध बान्धवों से युक्त, शत्रुओं से रहित तथा आँख के रोग से युक्त होता है। मिथुन या

कन्या राशि में स्थित सूर्य, बृहस्पति से दृष्ट हो, तो बहुत शास्त्रों का ज्ञाता, राजदूत, विदेशगामी, प्रचण्ड तथा सर्वदा उन्मादी होता है। मिथुन या कन्या राशि में स्थित सूर्य, शुक्र से दृष्ट हो, तो धन, स्त्री तथा पुत्र से सुखी, मन्द, स्नेह युक्त, निरोगी, सुखी तथा चपल होता है। मिथुन या कन्या राशि में स्थित सूर्य, शनि से दृष्ट हो, तो बहुत नौकरों से सर्वदा उद्विग्न रहने वाला, बहुत बन्धुओं के पोषण पालन में सर्वदा निरत तथा धूर्त होता है।

कर्कराशिस्थ सूर्य पर क्रम से चन्द्रकुजदृष्टि फल विचार— कर्क राशिस्थ सूर्य, चन्द्रमा से दृष्ट हो, तो पुरुष राजा वा राजतुल्य, जल सम्बन्धी व्यापार करने वाला, स्थिर धन से युक्त तथा क्रूर होता है। यदि वह मंगल से दृष्ट हो तो पुरुष शोष तथा भगन्दर रोग से तप्त, भाईयों से विरक्त तथा पिशुन (परनिन्दक) होता है।

कर्क राशिस्थ सूर्य पर क्रम से बुधगुरुशुक्रशनि दृष्टि फल विचार— कर्क राशि स्थित सूर्य, बुध से दृष्ट हो तो पुरुष विद्यावान्, यश से प्रसिद्ध, राजप्रिय, निपुण तथा शत्रुरहित होता है। यदि वह बृहस्पति से दृष्ट हो तो पुरुष राजमन्त्री, अथवा सेनापति, सुप्रसिद्ध तथा कला—कौशल से युक्त होता है। यदि वह शुक्र से दृष्ट हो तो पुरुष स्त्रीसेवी, स्त्रीधन से युक्त, पराए का कार्य करने वाला, संग्राम में प्रचण्ड तथा प्रिय आलाप से युक्त होता है। यदि वह शनि से दृष्ट हो तो वह वायु रोग से पीड़ित, पराए का धन हरण करने वाला, विपरीत मति व चेष्टा से युक्त तथा परनिन्दक होता है।

सिंह राशिस्थ सूर्य पर क्रम से चन्द्रकुजदृष्टि फल विचार—सिंह राशि स्थित सूर्य, यदि चन्द्रमा से दृष्ट हो तो पुरुष मेधावी, सुन्दर, स्त्रियों से युक्त, कफ से पीड़ित तथा राजप्रिय होता है। वह यदि मंगल से दृष्ट हो तो पुरुष परदारा में लीन, शूर, साहसी, कार्य में उद्यमी, भयंकर तथा प्रसिद्ध होता है।

सिंह राशिस्थ सूर्य पर क्रम से बुधगुरुशुक्रशनि का दृष्टि फल विचार— जन्म के समय सिंहस्थ सूर्य यदि बुध से दृष्ट हो तो पुरुष विद्वान्, लिपि तथा लेख करने में कुशल, नपुंसक, सेवी, हीनदशा को प्राप्त होकर परिभ्रमण करने वाला तथा साधारण बली होता है। वह यदि बृहस्पति से दृष्ट हो तो देवालय, वाटिका, जलाशय आदि का निर्माण कर्त्ता, बलवान्, निर्जन स्थान में वास करने वाला और अत्यन्त बुद्धिमान् होता है। उस पर यदि शुक्र की दृष्टि हो तो दुर्नाम कुष्ठ तथा अन्य रोग से सन्तप्त, निर्दयी, निर्लज्ज होता है। शनि से दृष्ट हो तो कार्य विनाश करने में दक्ष, नपुंसक और दूसरों को सताने वाला होता है।

गुरु राशिस्थ सूर्य पर क्रम से चन्द्रकुज बुध दृष्टि फल विचार— धनु अथवा मीन राशिगत सूर्य यदि चन्द्रमा से दृष्ट हो तो पुरुष वाणी, बुद्धि, विभव और पुत्रों से युक्त, राजातुल्य, शोकरहित और सुन्दर होता है। यदि वह मंगल से दृष्ट हो तो संग्राम में यश प्राप्त करने वाला, स्पष्टवादी तथा धन—सौख्य से सम्पन्न और चण्ड होता है। बुध से यदि वह दृष्ट हो तो मृदुभाषी, लिपिक, काव्य—कला—सभा यात्रा व धातु का ज्ञाता तथा लोकप्रिय होता है।

गुरु राशिस्थ सूर्य पर क्रम से गुरुसितशनि दृष्टि फल विचार—धनु या मीन राशिगत सूर्य को यदि बृहस्पति देखता हो तो पुरुष सर्वदा राजा के भवन में विचरने वाला अथवा राजा, हाथी—घोड़े व धन से युक्त और विद्वान होता है। शुक्र यदि उसे देखता हो तो सुन्दर स्त्री व भोगविलास से युक्त और सुगन्धित द्रव्य—मालादि से युक्त तथा शान्त होता है। शनि से यदि वह दृष्ट हो तो अपवित्र, परान्नभोजी, नीच कुकर्म में लीन तथा चतुष्पद के साथ खेलने वाला होता है।

मकरराशिस्थ सूर्य पर क्रम से चन्द्रकुज दृष्टि फल विचार–शनि गृह स्थित सूर्य यदि चन्द्रमा से दृष्ट हो तो पुरुष माया में प्रवीण, स्त्री संग के कारण समस्त धन तथा सुख का नाश करने वाला होता है। मंगल से वह यदि दृष्ट हो तो पुरुष व्याधि व शत्रु से ग्रस्त, दूसरे के झगड़े से शस्त्र द्वारा विक्षत शरीर वाला तथा विकल होता है।

मकर राशिस्थ सूर्य पर क्रम से बुधगुरुशुक्रशनि दृष्टि फल विचार– यदि वह शनि ग्रह में स्थित सूर्य, बुध से दृष्ट हो तो पुरुष शूर, नपुंसक प्रकृति वाला, परधन का अपहरण करने वाला, सर्वांग सारतत्त्व से हीन होता है। बृहस्पति से वह यदि दृष्ट हो तो शुभ कार्य करने वाला, मतिमान्, सभी व्यक्तियों का आश्रय, अत्यन्त यशस्वी तथा मनस्वी होता है। शुक्र से वह यदि दृष्ट हो तो शंख, प्रवाल तथा मणि इत्यादि के व्यापार से जीविका करने वाला, वैश्या व स्त्री के धन से युक्त तथा सुखी होता है। शनि से यदि वह दृष्ट हो तो शत्रु पक्ष का नाश करने वाला तथा राजा के सम्मान से समृद्ध हिम्मत वाला होता है।

मेष राशिस्थ चन्द्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार– मेष गत चन्द्रमा यदि रवि से दृष्ट हो तो पुरुष अत्यन्त उग्र, राजा, प्रणत (विनयी) पुरुषों से नम्रीभूत, धीर और संग्राम में प्रेम (रुचि) वाला होता है।

यदि वह मंगल से दृष्ट हो तो पुरुष दाँत तथा आँख के रोग से सन्तप्त, अग्नि तथा वायु आदि से नष्ट शरीर वाला, माण्डलिक तथा भूत से पीड़ित होता है। मेष गत चन्द्रमा यदि बुध से दृष्ट हो तो पुरुष अनेक विद्या का आचार्य, सुन्दर वाक्य बोलने वाला, इच्छित मन वाला, कवि तथा अत्यन्त कीर्ति युक्त होता है। बृहस्पति से दृष्ट हो तो बहुत नौकर तथा धन से परिपूर्ण, राजमन्त्री अथवा सेनापति होता है। शुक्र से दृष्ट हो तो सुन्दर पुत्र तथा धन से युक्त, श्रेष्ठ स्त्री से विभूषित तथा थोड़ा भोजन करने वाला होता है। शनि से दृष्ट हो तो विद्वेषी, अत्यन्त दुःख से युक्त, दरिद्र, तनु तथा मलिन और मिथ्यावादी होता है।

वृषराशिस्थ चन्द्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टिफल विचार– वृष राशि स्थित चन्द्रमा यदि सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष खेती करने वाला, अत्यन्त परिश्रमी, कार्यकर्त्ता, नौकर, दो पैर वाला पशुओं से परिपूर्ण, बहुत बुद्धि वाला तथा प्रायोगिक होता है। वृषराशि स्थित चन्द्रमा मंगल से दृष्ट हो तो पुरुष अतिकामी, स्त्रियों के लिए नष्ट दार व मित्रवाला, औरतों के हृदय को हरण करने वाला तथा माता का अनिष्टकारक होता है। वृष राशिस्थ चन्द्रमा यदि बुध से दृष्ट हो तो पुरुष बुद्धिमान्, विधिपूर्ण वाक्य का ज्ञाता, प्रसन्न, समस्त प्राणियों का पूज्य तथा अद्‌भुत गुणों से युक्त होता है। वह यदि बृहस्पति से दृष्ट हो तो स्थिर पुत्र, स्त्री तथा मित्रों से युक्त, माता–पिता का भक्त, अत्यन्त निपुण, धार्मिक तथा अतिविख्यात होता है। यदि वह शुक्र से दृष्ट हो तो मनुष्य अलंकरण, वाहन, गृह, शयन, भोजन, गन्ध, वस्त्र, माला इत्यादि से सम्पन्न तथा भोग करने वाला होता है। यदि वह शनि से दृष्ट हो तो पुरुष धनहीन, अनिष्टकारी, सर्वदा स्त्रियों का द्वेषी तथा पुत्र–मित्र–बन्धुओं से युक्त होता है।

वृषराशि के पूर्वोत्तरार्धस्थ चन्द्रफल विचार– यदि चन्द्रमा वृष राशि के पूर्वार्द्ध भाग में हो तो माता की शीघ्र मृत्यु, उत्तरार्ध में हो तो पिता की शीघ्र मृत्यु होती है। तो पुरुष नौकर–चाकर तथा पशु–पक्षियों से युक्त, अत्यन्त भ्रमणशील, विस्तृत शरीर युक्त, बुद्धिमान और राजमन्त्री होता है। चन्द्रमा यदि उसे देखता हो तो अत्यन्त धनवान्, अतिमधुर, माता तथा स्त्रियों का प्रिय व अत्यन्त भोगी होता है। मंगल उसे यदि देखता हो तो बालक तथा स्त्रियों का प्रिय, बुद्धिमान्, शूर, अत्यन्त धनी, सुखी और राजपुरुष होता है। जन्म के समय शुक्र के वृष या तुला गृह में स्थित बृहस्पति को बुध देखता हो तो पुरुष बुद्धिमान्, चतुर, मधुर, धनी, वैभवशाली, गुणवान्, सुन्दरशील युक्त तथा

रमणीय होता है। शुक्र से यदि उसे देखता हो तो अत्यन्त सुन्दर, अत्यन्त धनी, दूसरे के भूषण को धारण करने वाला, शरीर की सफाई करने वाला, सुन्दरशयन–शय्या और सुन्दर वस्त्रों से युक्त होता है। शनि से यदि वह देखा जाता हो तो बुद्धिमान्, बहुत धन–धान्यों से युक्त, ग्राम तथा नगर के पुरुषों में श्रेष्ठ, मलिन, कुरूप, और भार्या रहित होता है।

मिथुन राशिस्थ चन्द्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार– मिथुन राशि स्थित चन्द्रमा को यदि सूर्य देखता हो तो पुरुष बुद्धि व धन से युक्त, प्रसिद्ध, सुरूपवान्, धर्मात्मा, दुःखी और अल्पधन से युक्त होता है। मंगल यदि उसे देखता हो तो पुरुष अत्यन्त शूर, बुद्धिमान व सुख–वाहन–विभव और रूप से सम्पन्न होता है। मिथुन राशि स्थित चन्द्रमा यदि बुध से दृष्ट हो तो पुरुष धनोपार्जन से कुशल, अजेय, गम्भीर, राजा और अत्यन्त बुद्धिमान होता है। बृहस्पति से यदि वह दृष्ट हो तो पुरुष विद्या या शास्त्र का आचार्य, प्रसिद्ध सत्यवादी, अत्यन्त रूपवान्, पूज्य तथा वाग्मी होता है। शुक्र से यदि वह दृष्ट हो तो पुरुष श्रेष्ठ स्त्री–माला–वस्त्र–श्रेष्ठ वाहन–रथ–भूषण तथा मणियों से विभूषित होता है। शनि से वह यदि दृष्ट हो तो पुरुष बान्धवरहित, स्त्रीसुख व विभूति से वर्जित, दरिद्र तथा लोकद्वेषी होता है।

कर्क राशिस्थ चन्द्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार– कर्क राशि स्थित चन्द्रमा सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष कुत्सित राजा, धनरहित अथवा क्लेशकारक तथा दुर्गपालक होता है। मंगल से यदि दृष्ट हो तो शूर, विकल शरीर से युक्त, माता का अनर्थकारक, प्रिय व चतुर और कृशित शरीर युक्त होता है। कर्क राशि स्थित चन्द्रमा यदि बुध से दृष्ट हो तो पुरुष धीर बुद्धि व नीतिज्ञ, धन, स्त्री तथा पुत्र से युक्त, राजमन्त्री और सुखी होता है। बृहस्पति से यदि वह दृष्ट हो तो मनुष्य राजा, राजगुण से युक्त, सुखी, सुन्दर भार्या से युक्त, न्याय, विनय और पराक्रम से युक्त होता है। शुक्र से यदि दृष्ट हो तो पुरुष धन–सुवर्ण–स्त्री व रत्नों का भोगी, वेश्यजनों का स्वामी तथा सुन्दर होता है। शनि से यदि वह दृष्ट हो तो पुरुष भ्रमण में दुःखी, दरिद्र, माता का अनिष्टकारक, मिथ्याप्रिय, पापी तथा नीच होता है।

सिंह राशिस्थ चन्द्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार– सिंह राशि गत चन्द्रमा यदि सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष राजा का शत्रु, उत्कृष्ट, गुण युक्त, महाश्रयी, वीर, पाप में लीन तथा विकर्ण होता है। मंगल से वह यदि हो तो पुरुष सेनापति, प्रचण्ड, नौकर आदि, स्त्री, पुत्र, धन तथा वाहनों से युक्त तथा श्रेष्ठ होता है। सिंह राशि गत चन्द्रमा बुध से दृष्ट हो तो पुरुष स्त्री से बली युक्त, स्त्री से प्रसन्न चित्त वाला (स्त्री का प्रिय), स्त्री का वशी भूत, स्त्री का सेवक और धन, सुख तथा भोग से युक्त होता है। बृहस्पति से यदि वह दृष्ट हो तो पुरुष प्रसिद्ध कुल का पुत्र, अत्यन्त विख्यात, ज्ञानी, गुण युक्त तथा राजा तुल्य होता है। शुक्र से वह यदि दृष्ट हो तो स्त्री विभवों से युक्त रोगी होता है। स्त्री का सेवक व कामविधि में निपुण तथा विद्वान होता है। शनि से वह यदि दृष्ट हो तो पुरुष कृषि करने वाला, दरिद्र, मिथ्या भाषण करने वाला, दुर्गपालक, स्त्री सुखों से हीन तथा लघु होता है।

कन्या राशिस्थ चन्द्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार– रवि दृष्ट चन्द्रमा यदि कन्या राशि का हो तो पुरुष राजकोश का संरक्षक, प्रसिद्ध, वचन का पालन करने वाला, विशिष्ट कर्म करने वाला और भार्या हीन होता है। कन्या राशिगत चन्द्रमा यदि मंगल से दृष्ट हो तो पुरुष शिल्पाचार्य, प्रसिद्ध, धनवान्, शिक्षित, सुन्दर, धैर्यवान् और माता का अनिष्टकारक होता है। कन्या राशिगत चन्द्रमा यदि बुध से दृष्ट हो तो पुरुष निश्चय ज्योतिष और काव्य विधिज्ञ, विवाद तथा कलह में विजयी तथा अत्यन्त निपुण होता है। बृहस्पति से वह यदि दृष्ट हो तो पुरुष बन्धु जनों से युक्त, सुखी, राजा का कार्य करने वाला, अपने वाक्य पर दृढ रहने वाला तथा ऐश्वर्य युक्त होता है। शुक्र से

यदि वह दृष्ट हो तो बहुत स्त्रियों से युक्त, विविध अलंकारादि का भोगी, अत्यन्त सम्पन्न, सर्वदा उपार्जन में सक्त, तथा प्रसन्न होता है। शनि से वह यदि दृष्ट हो तो पुरुष स्मरण शक्ति से रहित, दरिद्र, सुख रहित, मातृहीन, स्त्री का सेवक तथा स्त्री धन का भोगी होता है।

तुलाराशिस्थ चन्द्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार– तुला राशिगत चन्द्रमा यदि रवि से दृष्ट हो तो पुरुष दरिद्र, रोग से पीड़ित होकर भ्रमण करेन वाला, पराजित, भोग रहित, पुत्र रहित तथा अकिंचन होता है। मंगल से वह यदि दृष्ट हो तो पुरुष तीक्ष्ण, चोर, क्षुद्र, पराए स्त्री व गन्ध और माल्यादि से युक्त, बुद्धिमान् तथा नेत्र से आतुर होता है। तुला राशि गत चन्द्रमा यदि बुध से दृष्ट हो तो पुरुष कला में प्रवीण, अतिधनी, शुभवाक्य युक्त, बुद्धिमान् तथा देश प्रसिद्ध होता है। बृहस्पति से वह यदि दृष्ट हो तो पुरुष सर्वत्र पूजित, रत्नादि क्रय–विक्रय में कुशल होता है। तुला राशि गत चन्द्रमा यदि शुक्र से दृष्ट हो तो पुरुष सुन्दर, निरोगी, सुभग, समान वर्धितशरीर युक्त, धनवान्, बुद्धिमान्, विविध उपाय तथा विधि का ज्ञाता होता है। शनि से वह यदि दृष्ट हो तो पुरुष धनाढ्य, प्रिय वाक्य युक्त, वाहन युक्त, विजयी, सुख रहित तथा माता का हित करने वाला होता है।

वृश्चिक राशिस्थ चन्द्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार–वृश्चिक राशि गत चन्द्रमा यदि रवि से दृष्ट हो तो पुरुष लोकद्वेषी, भ्रमण में चतुर, धनवान् तथा सुख रहित होता है। मंगल से वह यदि दृष्ट हो तो अद्भुत् धैर्य से युक्त, राजा सदृश, विभूति युक्त, समर में शूर, अजेय तथा विशेष भोजन करने वाला होता है। वृश्चिक राशिगत चन्द्रमा यदि बुध से दृष्ट हो तो पुरुष चतुरता रहित व कटुवाक्य वाला, यमलापत्य युक्त, युक्तिमान, कूट करने वाला और गीतज्ञ होता है। यदि वह बृहस्पति से दृष्ट हो तो कार्य में प्रवीण, लोक द्वेषी, धनवान् और रूपवान् होता है। यदि वह शुक्र से दृष्ट हो तो पुरुष अत्यन्त बुद्धिमान्, सुभग, धन, वाहन व भोग से सुशोभित और स्त्री द्वारा वीर्य का नाश कर्त्ता होता है। शनि से वह यदि दृष्ट हो तो नीच सन्तान वाला, कृपण, रुग्ण, दरिद्र, मिथ्यावादी तथा नीच होता है।

धनु राशिगत चन्द्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार– धनु राशि गत चन्द्रमा यदि सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष राजा, सम्पन्न, शूर, प्रख्यात, पौरुषवाला, अनुपम सुख तथा वाहन से युक्त होता है। यदि मंगल से वह दृष्ट हो तो पुरुष सेनापति, बुद्धि युक्त, सुन्दर, प्रख्यात, पौरुष वाला, अनुपम नौकर से युक्त होता है। धनु राशि गत चन्द्रमा यदि बुध से दृष्ट हो तो बहुत नौकरों से युक्त, पुष्टवर्ग युक्त, ज्योतिष–शिल्प–कार्यादि में निपुण तथा नागाओं का अथवा नाट्यकारों का आचार्य होता है। बृहस्पति से यदि वह दृष्ट हो तो अनुपम देह युक्त, राजमन्त्री व धन, धर्म और सौख्य से युक्त होता है। शुक्र से वह यदि दृष्ट हो तो पुरुष अत्यन्त सुखी, ललित, सुभग पुत्र व धन और काम से युक्त, सुन्दर मित्र तथा भार्या से युक्त होता है। यदि वह शनि से वह दृष्ट हो तो पुरुष प्रियभाषी, सुन्दर वाक्य युक्त, बहुत विख्यात, सत्यवादी, सौम्य और राजपुरुष होता है।

मकर राशिगत चन्द्र पर क्रम से सूर्यादिग्रहों की दृष्टि फल विचार–मकर राशि गत चन्द्रमा यदि रवि से दृष्ट हो तो पुरुष दरिद्र, दुःखित, भ्रमणशील, परकर्म में रत और मलिन और शिल्पज्ञ होता है। यदि मंगल से वह दृष्ट हो तो पुरुष अत्यन्त विभव व उदारता से युक्त, सुभग, धनवान्, वाहनयुक्त तथा प्रचण्ड होता है। मकर राशिगत चन्द्रमा यदि बुध से दृष्ट हो तो पुरुष मूर्ख, परदेशी, स्त्रीरहित, चंचल, दुःखी और दरिद्र होता है। बृहस्पति से वह यदि दृष्ट हो तो राजा, अत्यन्तबली, राजगुणयुक्त और बहुत स्त्री, पुत्र और मित्रों से युक्त होता है। शुक्र से वह यदि दृष्ट हो तो पुरुष श्रेष्ठ, स्त्री, धन, भूषण, वाहन, माता से युक्त, निन्दा से युक्त तथा पुत्र से रहित होता है। शनि से

यदि वह दृष्ट हो तो पुरुष आलसी, मलिन, धनवान्, काम से पीड़ित होकर पराए स्त्री में लीन तथा मिथ्याभाषी होता है।

कुम्भ राशि गत चन्द्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार– कुम्भ राशिगत चन्द्रमा सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष अत्यन्त मलिन बुद्धि वाला, शूर व राजा सदृश रूपवाला, धार्मिक और किसान होता है। यदि मंगल से दृष्ट हो तो पुरुष अत्यन्त सत्यवादी, माता व गुरु तथा धन से रहित, आलसी, कठोर और परकार्य में लीन रहता है। कुम्भ राशिगत चन्द्रमा यदि बुध से दृष्ट हो तो पुरुष शयनोचार में कुशल, गीतविधिज्ञ, स्त्रियों का प्रिय तथा शरीर विभव व सुख से युक्त होता है। यदि बृहस्पति से वह दृष्ट हो तो पुरुष ग्राम, खेत, बगीचा, श्रेष्ठ भवन और स्त्रियों का भोगी, श्रेष्ठ तथा सज्जन होता है। शुक्र से वह दृष्ट हो तो पुरुष नीच, पुत्र तथा मित्ररहित, कायर, आचार्य, निन्दित, पापी, अल्पसुखी तथा कुस्त्री से युक्त होता है। यदि शनि से वह दृष्ट हो तो पुरुष नख और रोमयुक्त शरीर वाला, मलिन परदार में रत, शठ, विधर्मी और स्थावर भागी तथा सम्पन्न होता है।

मीन राशिगत चन्द्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार– मीन राशिगत चन्द्रमा यदि सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष अत्यन्त शीघ्र कामातुर होने वाला, सुखी, सेनापति, धनयुक्त तथा सुन्दर व प्रसन्न भार्यायुक्त होता है। बुध मकर राशि का हो तो पुरुष नीच, मूर्ख, नपुंसक, दासवृत्तियुक्त, कुल खान–दान के गुण से हीन, अनेक दुःखों से सन्तप्त, स्वप्न में ही विहारादि भोगने वाला, परनिन्दक, असत्य चेष्टायुक्त, भाइयों से सम्बन्धिरहित, चंचल, आत्मावान, मलिन, भय से भयभीत तथा द्वेषी होता है।

भौम राशि नवांशस्थ चन्द्र पर सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार–यदि चन्द्रमा मंगल की मेष या वृश्चिक राशि के नवांश में हो और मंगल से दृष्ट हो तो पुरुष काटने का काम करने वाला और प्रचण्ड होता है। शनि से दृष्ट हो तो मायावी और ठगने वाला होता है। सूर्य से दृष्ट हो तो चोरों का नाशकर्त्ता अथवा रक्षा करने वाला और शूर होता है। बृहस्पति से दृष्ट हो तो जनेश, प्रसिद्ध और विद्वानों से पूज्य होता है। शुक्र से दृष्ट हो तो राजमन्त्री, धनयुक्त तथा स्त्री के विभूषण से निरत रहता है। बुध से दृष्ट हो तो शीघ्री तथा चंचल होता है।

शुक्र राशि नवांशस्थ चन्द्र पर सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार– यदि चन्द्रमा शुक्र की वृष या तुला राशि के नवांश का और शुक्र से दृष्ट हो तो पुरुष स्त्री, वस्त्र, अन्न, पान तथा धन का सुखी होता है। बुध से दृष्ट हो तो वाद्य, नृत्य, तथा गान में निपुण होता है। बृहस्पति से दृष्ट हो तो पुरुष कवियों में प्रधान, नीतिशास्त्र में निपुण तथा राजमन्त्री होता है। मंगल से दृष्ट हो तो पराए स्त्री के दर्शन में तत्पर, कामी और बहुभृत्यों से युक्त होता है। सूर्य से दृष्ट हो तो महामूर्ख, प्रिय बोलने वाला, और सर्वदा खाने–पीने में रुचि रखने वाला होता है।

बुध राशि नवांशस्थ चन्द्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार– यदि चन्द्रमा बुध की मिथुन या कन्या राशि के नवांश का हो और बुध से दृष्ट हो तो पुरुष शिल्पशास्त्राचार्य तथा कवि होता है। शुक्र से दृष्ट हो तो पुरुष विस्तृत शरीर वाला, गीतशास्त्र का ज्ञाता व वाणी या वचन का पालन करने वाला होता है। गुरु से दृष्ट हो तो पुरुष राजमन्त्री, गुणवान्, प्रतिष्ठित, और सुन्दर होता है। मंगल से दृष्ट हो तो पुरुष अत्यन्त चोर, विवाद में निपुण तथा भयंकर होता है। शनि से दृष्ट हो तो पुरुष शास्त्रार्थ तथा काव्य में प्रवीण, बुद्धिमान् तथा शिल्पज्ञ होता है। सूर्य से दृष्ट हो तो नाट्यकला कुशल और विख्यात होता है।

कर्क राशि नवांशस्थ चन्द्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रह की दृष्टि फल विचार– यदि चन्द्रमा कर्क राशि के नवांश का हो और सूर्य से दृष्ट हो तो कृषित तथा अक्षत शरीर होता

है। मंगल से दृष्ट हो तो परधन की रक्षा में निपुण तथा सदा लोभी होता है। शनि से दृष्ट हो तो अकार्य (कुकर्म) को करने वाला, वध–बन्धन तथा विवाद से सर्वदा सन्तप्त होता है। शुक्र से दृष्ट हो तो स्त्री द्वेषी अथवा नपुंसक सदृश होता है। बृहस्पति से दृष्ट हो तो राजमन्त्री अथवा राजा होता है। बुध से दृष्ट हो तो अधर्मी, बहुत सोने वाला तथा सर्वदा मार्ग पर चलने वाला होता है।

सिंह राशि नवांशस्थ चन्द्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों का दृष्टि फल विचार यदि चन्द्रमा सिंह राशि के नवांश का हो और सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष तेजस्वी तथा अच्छी तरह कीर्ति तथा धन को प्राप्त करता है। शनि से दृष्ट हो तो पापी, निर्दयी तथा जीव हिंसक होता है। मंगल से दृष्ट हो तो सुवर्ण धन से युक्त प्रसिद्ध राजा से सत्कृत और अत्यन्त प्रचण्ड होता है।

गुरु राशि नवांशस्थ चन्द्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार– यदि बृहस्पति की धनु व मीन राशि के नवांश में चन्द्रमा स्थित हो और बृहस्पति से दृष्ट हो तो पुरुष प्रख्यात, राजप्रिय तथा यशस्वी होता है। शुक्र से दृष्ट हो तो पुरुष स्त्रियों के भोग से युक्त होता है। बुध से दृष्ट हो तो मनुष्य हँसी (दिल्लगी) करने वाला, राजप्रिय तथा सेना का नायक होता है। मंगल से दृष्ट हो तो शस्त्र सिखाने वाला आचार्य तथा सर्वत्र प्रसिद्ध होता है। सूर्य से दृष्ट हो तो अनेक दोषों से प्रसिद्ध तथा प्रमाण भूत होता है। शनि से दृष्ट हो तो पुरुष वृद्ध जैसा दिखने वाला तथा बलवानों से तिरस्कृत और नीच होता है।

शनि राशि नवांशस्थ चन्द्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार–यदि शनि की मकर व कुम्भ राशि के नवांश में चन्द्रमा स्थित हो और शनि से दृष्ट हो तो पुरुष कृपण, रोगों से युक्त अथवा मृत सन्तान वाला होता है। सूर्य से दृष्ट हो तो अल्प सन्तान युक्त, रोगी तथा कुरूप होता है। मंगल से दृष्ट हो तो राजा के तुल्य, धन से युक्त, कुरूप स्त्री तथा सुख से युक्त होता है। शुक्र से दृष्ट हो तो विषमशील विपरीत स्वभाव वाला, स्त्रियों में लीन तथा धर्यवान् होता है। बुध से दृष्ट हो तो पाप में लीन तथा कुचरित्र युक्त होता है। बृहस्पति से दृष्ट हो तो स्वकार्य में तत्पर और सर्वदा दीन भाव वाला होता है।

स्वराशिस्थ कुज पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि विचार– जन्म के समय मंगल अपनी मेष या वृश्चिक राशि का हो और सूर्य देखता हो तो पुरुष धनवान्, स्त्रीवान्, पुत्रवान व राजमन्त्री, दण्डनायक, प्रसिद्ध अथवा उदार राजा होता है। चन्द्रमा यदि उसे देखता हो तो माता रहित, किसी अंग में घाव से हतित, स्वजनों का द्वेषी, मित्ररहित, ईर्ष्यायुक्त तथा कन्याप्रिय होता है। जन्म के समय यदि मंगल स्वराशि मेष या वृश्चिक का हो तो और बृहस्पति देखता हो तो पुरुष प्राज्ञ, मृदु, सुभग, माता–पिता का प्रिय, धनवान् तथा अनुपम सामर्थ्य युक्त होता है। शुक्र से यदि वह दृष्ट हो तो स्त्री के कारण बन्धनभोगी, एक बार या बारम्बार विभव प्राप्त तथा स्त्री के कारण अर्जित धन का नाश करता है। शनि से वह यदि दृष्ट हो तो पुरुष चोर को नाश करने में शूर, निवीर्य (बलहीन), स्वजन से हीन तथा अन्य स्त्री का स्वामी होता है।

शुक्र राशिस्थ कुज पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार–जन्म के समय में मंगल शुक्र की वृष या तुला राशि का हो और सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष वन–पर्वतों में विचरने वाला, स्त्रीद्वेषी, बहुत शत्रुओं से युक्त, प्रचण्ड वेषयुक्त तथा धीर होता है। चन्द्रमा से यदि वह दृष्ट हो तो माता का अहित कारक, कठिन स्वभावयुक्त, बहुत स्त्रियों का पति व उनका प्रिय और संग्राम भीरु होता है। बुध से वह यदि दृष्ट हो तो कलहप्रिय, मृदु वाणी व शरीर से युक्त, अल्पधन व पुत्र से युक्त तथा शास्त्रज्ञ होता है।

बुध राशिस्थ कुज पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टिफल विचार—जन्म के समय में मंगल, बुध की मिथुन या कन्या राशि का हो और रवि देखता हो तो पुरुष विद्या, धन से ऐश्वर्य से युक्त, पर्वत–वन व दुर्गप्रिय और महाबलवान् होता है। चन्द्रमा उसे यदि देखता हो तो अन्तःपुर का रक्षक, युवति स्त्रियों का स्वामी, सद्विनीत, अत्यन्त सुन्दर तथा राजगृह का पालक होता है। बुध से यदि वह दृष्ट हो तो लिपि –गणित व काव्य में कुशल, बहुत मिथ्या व मृदुवाक्य बोलने वाला, दूत तथा बहुत दुःख सहने वला होता है। जन्म के समय यदि मंगल बुध की मिथुन या कन्या राशि का हो और बृहस्पति देखता हो तो पुरुष राजपुरुष, प्रसिद्ध, दूत होने के कारण विदेशगामी, सभी कार्यों में कुशल और नायक होता है। शुक्र से यदि दृष्ट हो तो स्त्री के कार्य को करने वाला, शक्तिशाली, सुभग और वस्त्र व अन्न का भोग करने वाला होता है। शनि से यदि वह दृष्ट हो तो खान–पर्वत व दुर्ग में लीन, खेती करने वाला अत्यन्त दुःखी, शूर, मलिन तथा विभव हीन होता है।

कर्क राशिस्थ कुज पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टिफल विचार—यदि जन्म के समय चनद्रमा की कर्क राशि का मंगल हो और सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष पित्त से पीड़ित, तेजस्वी, दण्डनायक तथा गम्भीर होता है। चन्द्रमा यदि उसे देखता हो तो बहुत व्याधियों से पीड़ित, नीच आचार वाला, रुपहीन तथा शोकयुक्त होता है। बुध यदि उसे देखता हो तो मलिन, पापाचारी, क्षुद्र कुटुम्बयुक्त, स्वजनों से बहिस्कृत तथा निर्लज्ज होता है। जन्म के समय कर्क राशि के मंगल को बृहस्पति देखना हो तो पुरुष विख्यात, राजमन्त्री, विद्वान्, दानी, धन्य तथा भोग से रहित होता है। शुक्र से वह यदि दृष्ट हो तो स्त्रीसंग से उद्विग्न व पराजित और अन्य दोषों से धनरहित होता है। शनि से वह यदि दृष्ट हो तो जल–संयान से प्राप्त धन वाला, राजा के समान और ललित चेष्टायुक्त तथा रमणीय होता है।

सिंह राशिस्थ कुज पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टिफल विचार— जन्म के समय सिंह राशि का मंगल, सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष प्रणतजनों का हितकारी, मित्र व सज्जनों से युक्त, पराक्रमी, गोकुल तथा वन व पर्वत में रमण करने वाला होता है। चन्द्रमा से वह यदि दृष्ट हो तो माता का अहितकर, बुद्धिमान्, कठिन शरीरयुक्त, अत्यन्त यशस्वी तथा स्त्री से प्राप्त धन वाला होता है। बुध से दृष्ट हो तो अत्यंत शिल्पज्ञ, लोभी, काव्यकौशल में लम्पट, विषमशील युक्त और अत्यंत निपुण होता है। जन्म के समय सिंह राशि का मंगल, बृहस्पति से दृष्ट हो तो पुरुष राजा का समीपवर्ती, विद्या का शिक्षक, विशुद्ध बुद्धियुक्त तथा सेनापति होता है। शुक्र से वह यदि दृष्ट हो तो अनेक स्त्री के भोग से युक्त, स्त्रियों का प्रिय तथा यौवन से प्रसन्न रहता है। शनि से वह यदि दृष्ट हो तो वृद्धसदृश, दरिद्र, परगृह में भ्रमणशील, दुःखी तथा शीलवान् होता है।

गुरुराशिस्थ कुज पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टिफल विचार— जन्म या प्रश्न के समय मंगल, बृहस्पति की धनु या मीन राशि का हो और सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष लोक में पूज्य, सुभग, वन–पर्वत व दुर्ग में रहने वाला और शूर होता है। चन्द्रमा से वह यदि दृष्ट हो तो विकल, झगड़ालू, बुद्धिमान्, विद्वान् और राजा के विरुद्ध रहता है। बुध से यदि दृष्ट हो तो मेधावी, निपुण, शिल्पाचार्य तथा विद्वान् होता है। जन्म या प्रश्न कि समय मंगल, बृहस्पति की धनु या मीन राशि हो और बृहस्पति देखता हो तो पुरुष स्त्री व सुख से रहित, शत्रु से निर्भय रहने वाला, धनवान् तथा व्यायाम में तत्पर रहता है। शुक्र से वह यदि दृष्ट हो तो कन्याओं का अतिप्रिय, चित्रविचित्र आभूषणों का भोक्ता, उदार, विषयी बुद्धि वाला और अति सुन्दर होता है। बृहस्पति से दृष्ट हो तो सेनापति अथवा राजा होता है। शुक्र से दृष्ट हो तो सुतार्थी अथवा मृतक सन्तान से युक्त होता है। बुध से दृष्ट हो तो भाग्य चिन्तक, इतिहास में लीन और खजाने का भोक्ता होता है।

कुज राशिस्थ बुध पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों का दृष्टि फल विचार– जन्म समय में मंगल की मेष या वृश्चिक राशि का बुध, सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष सत्यवादी, सुखी, राजा के सत्कार से सत्कृत तथा भाइयों में क्षमाशील होता है। चन्द्रमा से वह यदि दृष्ट हो तो पुरुष स्त्रियों का मन हरण करने वाला, सेवक, अत्यन्त मलिन और शीलरहित होता है। मंगल से वह यदि दृष्ट हो तो मिथ्याप्रिय, सुन्दर बोलने वाला, झगड़ालू, पण्डित, धनी, राजा का प्रिय और वीर होता है। जन्म के समय बुध, मंगल की मेष या वृश्चिक राशि का हो और बृहस्पति देखता हो तो पुरुष सुखी, चिक्कन शरीरयुक्त, रोमयुक्त और सुन्दर केश वाला, अत्यन्त धनी, आज्ञा देने वाला तथा पापी होता है। शुक्र उसे यदि देखता हो तो राजा का कार्य करने वाला, सुभग, समूह ग्राम तथा नगर में विचरने वाला, चतुर वाक्य वाला, विश्वासी और स्त्रीयुक्त रहता है। शनि उसे यदि देखता हो तो मनुष्य दुःखी, उग्र, हिंसा में रत तथा कुलजनों से रहित होता है।

शुक्र राशिस्थ बुध पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों का दृष्टि फल विचार– जन्म के समय बुध, शुक्र की वृष या तुला राशि में हो और सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष दारिद्र व दुःख से सन्तप्त, रोगी, परोपकार में लीन और लोक में निन्दित होता है। चन्द्रमा से वह यदि दृष्ट हो तो विश्वासी, धनवान्, दृढ़ भक्तियुक्त, निरोग, दृढ़ कुटुम्ब से युक्त, प्रसिद्ध और राजमन्त्री होता है। मंगल उसे यदि देखता हो तो व्याधि तथा शत्रु से ग्रस्त, कृशित, राजा के द्वारा अपमान से दुःखी तथा सभी विषयों से बहिष्कृत होता है। जन्म के समय बुध, शुक्र की वृष या तुला राशि में हो और बृहस्पति से दृष्ट हो तो पुरुष प्राज्ञ, अपने वाक्य का प्रतिपालक, देश–पुर तथा सभाओं का नायक और प्रसिद्ध होता है। शुक्र से वह यदि दृष्ट हो तो सुभग, सुन्दर, सुखी, वस्त्राभूषण का भोगी और कन्याओं के हृदय को हरने वाला होता है। शनि से यदि वह दृष्ट हो तो सुख रहित, भाई के शोक से कृशित, रोगी, मलिन और अनेकों अनर्थों को करने वाला होता है।

स्वराशिस्थ बुध पर क्रम से सूर्यादि ग्रह दृष्टिफल विचार– जन्म के समय स्वराशि मिथुन या कन्या राशि में स्थित बुध, सूर्य से दृष्ट हो, तो पुरुष तथ्यवादी, मधुर, राजा का प्रिय, समर्थ, ललित चेष्टायुक्त और लोक में प्रिय होता है। चन्द्रमा उसे यदि देखता हो, तो मधुर, वाचाल, कलहप्रिय, शास्त्रप्रेमी, दृढ़तायुक्त, तथा सभी कार्यो में कुशलता प्राप्त करता है। मंगल से वह यदि दृष्ट हो, तो हतित अंगयुक्त, मलिन, प्रतिभाशाली, राजा का भृत्य तथा अत्यंत प्रिय होता है। जन्म के समय स्वराशि मिथुन या कन्या राशि में स्थित बुध, बृहस्पति से दृष्ट हो तो पुरुष राजमन्त्रियों में श्रेष्ठ, स्वरुपवान्, उदार, विभव तथा परिवारयुक्त और शूर होता है। शुक्र से वह यदि दृष्ट हो, तो बुद्धिमान् राजा का नौकर, दूत अथवा सन्धिपालक और नीच स्त्री में सक्त होता है। शनि से वह यदि दृष्ट हो, तो सर्वदा उन्नतिशील, विनीत, कार्य में सफल और वस्त्रादि से वृद्धियुक्त होता है।

कर्क राशिस्थ बुध पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों का दृष्टिफल विचार– कर्क राशि स्थित बुध, सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष धोबी, माली या मिस्त्री तथा मणिकार का काम करने वाला होता है। यदि वह मंगल से दृष्ट हो तो पराजित, सुख रहित, कुलटा का पुत्र, पाप में निरत तथा शूर होता है। मीन राशि गत चन्द्रमा यदि बुध से दृष्ट हो तो पुरुष राजा, अत्यन्त सुखी, श्रेष्ठ स्त्री से युक्त और वशी होता है। बृहस्पति से वह यदि दृष्ट हो तो पुरुष ललित, माण्डलिकों में श्रेष्ठ, अति सम्पन्न, सुकुमार और बहुत स्त्रियों से युक्त होता है। शुक्र से वह यदि दृष्ट हो तो पुरुष सुशील, रतिशील, नाच–गान–वाद्य में लीन और स्त्रियों का हृदय हरने वाला होता है। यदि वह शनि से दृष्ट हो तो पुरुष विकल, माता का अहितकारक, कामपीड़ित, पुत्र स्त्री और बुद्धि से रहित, नीच और विरूप स्त्री में लीन होता है।

सिंह राशिस्थ बुध पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों का दृष्टिफल विचार–जन्म के समय सिंह राशि स्थित बुध, सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष सेवकयुक्त, धन तथा गुण से पूर्ण, हिंसक, क्षुद्र, चंचल, भाग्यवाला और निर्लज्ज होता है। चन्द्रमा से यदि वह दृष्ट हो तो रूपवान्, चतुर, काव्य–कला–गान तथा नृत्य का प्रेमी, धनी और सुशील वेश युक्त होता है। मंगल यदि उसे देखता हो तो नीच, दुःखी, हतित अंग युक्त, समकाय, अचतुर, खेल से युक्त और नपुंसक होता है। जन्म के समय सिंह राशि स्थित बुध, बृहस्पति से दृष्ट हो तो पुरुष बुद्धिमान, वाग्मी, अतिप्रसिद्ध तथा सेवक और वाहन से युक्त होता है। शुक्र से वह यदि दृष्ट हो तो अत्यन्त सुन्दर, सबका प्रिय, वाहन युक्त, गम्भीर, मन्त्री व राजा होता है। शनि से वह यदि दृष्ट हो तो विस्तृत शरीर वाला, कान्ति रहित, पसीना से उग्र दुर्गन्ध युक्त शरीर वाला और अत्यन्त दुःखी होता है।

गुरुराशिस्थ बुध पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों का दृष्टि फल विचार– जन्म समय में बृहस्पति की धनु या मीन राशि में स्थित बुध, सूर्य से देखा जाता हो तो पुरुष शूर, प्रमेह रोग से पीड़ित, पत्थर से घायल, आतुर और शान्त होता है। चन्द्रमा यदि उसे देखता हो तो लेखक, अत्यन्त सुकुमार, विश्वासी, सर्वसम्मत, सुखी और अत्यन्त सम्पन्न होता है। मंगल से यदि वह देखा जाता हो तो श्रेणी, भृत्य, नगर व चोर और वनवासियों का लिपिकारों का भी स्वामी होता है। जन्म के समय गुरु की धनु या मीन राशि स्थित बुध गुरु से दृष्ट हो तो पुरुष प्रसिद्ध, अतिसम्पन्न कुल में उत्पन्न, श्रेष्ठ विज्ञान का ज्ञाता, राजमन्त्री तथा कोषाध्यक्ष होता है। शुक्र से यदि वह दृष्ट हो तो कन्या तथा कुमारों का लेखकाचार्य, धनी, सुकुमार तथा ऐश्वर्य युक्त होता है। शनि से वह यदि दृष्ट हो तो दुर्ग तथा वन का निवासी, बह्वासी (अधिक भोजन करने वाला), दुष्ट, अति मलीन और सभी कार्यों में भ्रष्ट होता है।

शनि राशिस्थ बुध पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों का दृष्टि फल विचार– जन्म के समय शनि की मकर या कुम्भ राशि में बुध को यदि सूर्य देखता हो तो पुरुष मल्ल, अत्यन्त बली, बहुत भोजन करने वाला, निष्ठुर, आलाप प्रिय और प्रसिद्ध होता है। चन्द्रमा यदि उसे देखता हो तो जलजीवी, सम्पन्न अथवा पुष्प–मदिरा, डरपोक तथा स्थिर होता है। मंगल यदि उसे देखता हो तो वाणी का अत्यन्त चंचल, सुन्दर, लज्जाशील, आलसी तथा धीरे–धीरे चलने वाला और सुखी होता है। जन्म के समय शनि की मकर या कुम्भ राशि में स्थित बुध को यदि बृहस्पति देखता हो तो पुरुष बहुत धन–धान्य से सम्पन्न, ग्राम–पुर तथा सभाओं से पूजित, सुखी तथा प्रसिद्ध होता है। शुक्र यदि उसे देखता हो तो पुरुष नीच का स्वामी, कुरूप, बुद्धिहीन, कामी तथा बहुत पुत्रों का उत्पन्न करने वाला होता है। शनि यदि उसे देखता हो तो पापी, दरिद्र, कर्मकार, दुःखी तथा दरिद्र होता है।

कुज राशिस्थ गुरु पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों का दृष्टि फल विचार– जन्म या प्रश्न के समय मंगल की मेष या वृश्चिक राशि में स्थित बृहस्पति यदि सूर्य सें दृष्ट हो तो पुरुष धर्मिष्ठ, झूठ से डरने वाला, प्रसिद्ध पुत्र से युक्त, अत्यन्त भाग्यवान तथा अत्यन्त रोम से युक्त होता है। चन्द्रमा से यदि वह दृष्ट हो तो इतिहास तथा काव्य में कुशल, बहुत रत्नों से युक्त, स्त्री में प्रेम करने वाला, राजा तथा बुद्धिमान् होता है। मंगल से यदि वह दृष्ट हो तो राजपुरुष, शूर, उग्र, न्याय तथा विनय से युक्त, धनी, अयोग्य स्त्री और सेवक से युक्त होता है। जन्म या प्रश्न के समय मंगल की मेष या वृश्चिक ग्रह में स्थित बृहस्पति बुध से दृष्ट हो तो पुरुष मिथ्या वादी, ठग, पापी, दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर, निपुण, सेवा तथा विनय में लीन और कृतज्ञ तथा कपटी होता है। शुक्र यदि उसे देखता हो तो गृह, शयन, वस्त्र, गन्ध, माला, भूषण तथा स्त्रियों के वैभव से युक्त और अत्यन्त डरपोक होता है। शनि यदि उसे देखता हो तो मलिन, लोभी, तीक्ष्ण, साहसी, सहमत, सिद्ध और चंचल मित्र तथा पुत्र से युक्त होता है।

शुक्र राशिस्थ गुरु पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों का दृष्टिफल विचार–जन्म के समय शुक्र के वृष या तुला ग्रह में स्थित बृहस्पति यदि सूर्य से दृष्ट हो तो असक्त, लम्बे बाहुओं से युक्त, सुन्दरशरीर तथा रमणीय दाँत, आँख व कर्णों से युक्त, विद्वान्, आचार्य, धर्मिष्ठ, प्रियभाषी, सत्यशौच प्रधान, धीर, बलवान्, दयावान्, परदेश में रत, शान्ति तथा सौभाग्य का भोगी, प्रायः कन्या सन्तान वाला और विशेष कामासक्त होता है।

बुध राशिस्थ गुरु पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों का दृष्टि फल विचार– जन्म के समय बुध के मिथुन या कन्या ग्रह में स्थित बृहस्पति सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष आर्य, ग्राम में श्रेष्ठ, कुटुम्ब तथा स्त्री, पुत्र और धन से युक्त होता है। चन्द्रमा से वह यदि दृष्ट हो तो धनवान्, माता का प्रिय, धन्य, सुख स्त्री व पुत्र से युक्त, अत्यन्त रूपवान् और अद्वितीय होता है। मंगल से वह यदि दृष्ट हो तो पुरुष सर्वदा सुन्दर, विषयों को प्राप्त करने वाला, विचित्रशरीर युक्त, धनवान् और लोक में मान्य होता है। जन्म के समय बुध की मिथुन या कन्या ग्रह में स्थित बृहस्पति, बुध से दृष्ट हो तो पुरुष ज्योतिषशास्त्रों में कुशल, बहुत पुत्र व स्त्रियों से युक्त, सूत्रकार, अत्यन्त कुरूप तथा कुवाक्य से युक्त होता है। शुक्र से वह यदि दृष्ट हो तो पुरुष देवता के मन्दिरों का कार्य करने वाला, वेश युक्त तथा स्त्री के भोग से युक्त और स्त्रियों के हृदय को हरने वाला होता है। शनि से वह यदि दृष्ट हो तो श्रेणी गणों का व देश व ग्रामों का अग्रतर स्वामी और सुन्दर शरीर से युक्त होता है।

कर्क राशिस्थ गुरु पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों का दृष्टि फल विचार– जन्म या प्रश्न के समय कर्क राशि का बृहस्पति, सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष विख्यात, समूह अग्रगण्य, सुखधन और स्त्री से रहित तथा अन्त अवस्था में सम्पन्न होता है। चन्द्रमा से वह यदि दृष्ट हो तो अत्यन्त धनवान्, कान्तिमान, राजा, बहुत से कोश, वाहन से युक्त, तथा उत्तम स्त्री तथा पुत्रों से युक्त होता है। मंगल से यदि वह दृष्ट हो तो कुमार अवस्था वाली स्त्री से युक्त, सुवर्ण और अलंकार का भागी बुद्धिमान्, शूर तथा व्रण युक्त होता है। जन्म या प्रश्न के समय कर्क राशि में स्थित बृहस्पति, बुध से दृष्ट हो तो पुरुष भाइयों के लिए केवल धनी, झगड़ालू तथा पाप रहित, विश्वासी और मन्त्री होता है। शुक्र से वह यदि दृष्ट हो तो बहुत सी स्त्री, भूषण तथा वैभव से युक्त, सुखी और सुन्दर होता है। शनि से वह यदि दृष्ट हो तो ग्राम, सैन्य तथा नगर में श्रेष्ठ, वाचाल तथा बहु वैभव युक्त और वृद्धावस्था में भोग युक्त होता है।

सिंह राशिस्थ गुरु पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों पर दृष्टि फल विचार– जन्म या प्रश्न के समय सिंह राशि स्थित बृहस्पति, सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष प्रिय, प्रसिद्ध, सज्जन, राजा, अत्यन्त धनी तथा अत्यन्त सुशील होता है। चन्द्रमा से वह यदि दृष्ट हो तो अत्यन्त सुभग, अति मलीन तथा स्त्री के भाग्य से भाग्यवान्, धन से अत्यन्त सम्पन्न तथा जितेन्द्रिय होता है। मंगल से वह यदि दृष्ट हो तो पुरुष सत्य युक्त, सज्जन तथा गुरुओं का भक्त, विशिष्ट क्रम युक्त, उदण्ड, अत्यन्त निपुण, शुद्ध, शूर और क्रूर होता है। जन्म या प्रश्न के समय सिंह राशि स्थित बृहस्पति यदि बुध से दृष्ट हो तो पुरुष ग्रह वास्तु के ज्ञान में लीन, विज्ञान गुण युक्त, सुन्दर बोलने वाला, मन्त्रियों में श्रेष्ठ व प्रसिद्ध होता है। शुक्र से वह यदि दृष्ट हो तो स्त्रियों का प्रिय, सुभग, राजा के सत्कार से पूजित तथा महाबलवान् होता है। शनि से वह यदि दृष्ट हो तो बहुत बोलने वाला, मधुर भाषी, सुखरहित, विचित्र भाग्ययुक्त, तीक्ष्ण और देवता की स्त्री तुल्य स्त्री से सुखी होता है।

स्वराशिस्थ गुरु पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों का दृष्टि फल विचार– जन्म या प्रश्न के समय स्वराशि स्थित बृहस्पति यदि सूर्य से यदि दृष्ट हो तो पुरुष राजा से विरुद्ध, सन्तप्त, धन तथा बन्धु जनों से मुक्त होता है। चन्द्रमा से वह यदि दृष्ट हो तो अनेक

प्रकार के सुख से युक्त युवती का अतिप्रिय, मान–धन तथा ऐश्वर्य से युक्त व गर्वित होता है।

कुज राशिस्थ शुक्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार– जन्म समय मंगल के मेष या वृश्चिक गृह में स्थित शुक्र यदि सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष स्त्री के कारण दुःख से आर्त, स्त्री के कारण समस्त धन तथा सुख का नाश करने वाला, राजा और बृद्धिमान् होता है। चन्द्रमासे वह यदि दृष्ट हो तो बन्धनयुक्त, अत्यन्त चंचल, काम से पीड़ित तथा नीच स्त्री का स्वामी होता है। मंगल से वह यदि दृष्ट हो तो पुरुष धन–सुख तथा मान से रहित, परसेवक और मलिन चेष्टायुक्त होता है। जन्म के समय मंगल के मेष या वृश्चिक गृह में स्थित शुक्र को यदि बुध देखता तो पुरुष मूर्ख, धूर्त, नीच, स्वबन्धुओं से झगड़ा करने वाला, विनयरहित, चोर, क्षुद्र और क्रूर होता है। बृहस्पति उसे यदि देखता हो तो सुन्दर नेत्रवाली उदार स्त्री से युक्त, सुन्दर शरीर युक्त, विस्तृत और बहुत पुत्रों से युक्त होता है। शनि से वह यदि दृष्ट हो तो पुरुष अत्यन्त मलिन, आलसी, भ्रमणवान्, स्वभिमत जनों का सेवक और चोर होता है।

स्वराशिस्थ शुक्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार– जन्म के समय स्वराशि वृष या तुला में स्थित शुक्र, सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष सुन्दर स्त्रियों का भोग करने वाला, धनवान्, श्रेष्ठ तथा स्त्री के कारण पराजित होता है। चन्द्रमा से वह यदि दृष्ट हो तो परम कुलीन स्त्री का पुत्र, सुख–धन–दान तथा पुत्रों से युक्त, अत्यन्त श्रेष्ठ, बुद्धि वाला तथा सुन्दर होता है। मंगल से वह दृष्ट हो तो पुरुष दुःशीला स्त्री का स्वामी, स्त्री के कारण धन–गृह इत्यादि का नाश करने वाला और कामी होता है। जन्म के समय स्वगृह वृष या तुला में स्थित शुक्र को यदि बुध देखता हो तो पुरुष कान्त, मधुर, सुभग, सुख, धैर्य से अत्यन्त संयुक्त, बहुत बलवान् व सर्वगुण सम्पन्न और प्रसिद्ध होता है। बृहस्पति यदि उसे देखता हो तो स्त्री–पुत्र–गृह–रथवाहन तथा स्वप्नोभिलषित वस्तु का भोग कर्त्ता होता है। शनि उसे देखता हो तो स्वल्प सुखी, धनी, दुःशील, पुँश्चली स्त्री का स्वामी और रोगी होता है।

बुध राशिस्थ पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार– जन्म के समय बुध के मिथुन या कन्या गृह में स्थित शुक्र यदि सूर्य से दृष्ट हो तो पुरुष राजा के माता तथा पत्नी का कार्य करने वाला, पण्डित, धनी और सुखी होता है। चन्द्रमा से वह यदि दृष्ट हो तो पुरुष कृष्णनयन युक्त, सुन्दर केश वाला, शयन–भोजन और वाहन का भोगी, सुकुमार तथा सुभग होता है। मंगल से वह यदि दृष्ट हो तो कामी, अत्यन्त सुभग और स्त्री के कारण धनरहित होता है। जन्म के समय बुध की मिथुन या कन्या राशि में स्थित शुक्र को यदि बुध देखता हो तो पुरुष बुद्धिमान्, मधुर, धनवान्, वाहन तथा परिवार से युक्त, सुभग, गणपति अथवा धनेश होता है। बृहस्पति उसे यदि देखता हो तो पुरुष अत्यन्त सुखी, दीन, नकल करने वाला, पण्डित और आचार्य (अध्यापक) होता है। शनि यदि देखता हो तो पुरुष अत्यन्त दुःखी, पराजित, चंचल, द्वेषी और मूर्ख होता है।

कर्क राशिस्थ शुक्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार–जन्म के समय कर्क राशि स्थित शुक्र को यदि सूर्य देखता हो तो उस पुरुष की स्त्री कार्य में प्रवीण, शुभ अंगों से युक्त, रोष तथा धन से युक्त तथा राजा की लड़की होता होती है।

सिंह राशिस्थ शुक्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार– जन्म के समय सिंह राशि स्थित शुक्र को सूर्य देखता हो तो पुरुष ईर्ष्यालु, कन्याप्रिय, कामपीड़ित, स्त्री के कारण धनवान् तथा ऊँटों से युक्त होता है। सिंह राशि स्थित शुक्र को चन्द्रमा देखता हो तो पुरुष सौतेली माँ से युक्त, स्त्री के कारण दुःखी, विभव सम्पन्न और अनेक बुद्धि वाला होता है। मंगल यदि उसे देखता हो तो राजपुरुष, स्त्री के कारण

प्रसिद्ध, धनवान्, प्रिय, सुभग और अन्य स्त्री में सक्त होता है। जन्म के समय सिंह राशि स्थित शुक्र को बुध देखता हो तो पुरुष संग्रहशील, लोभी, स्त्री में चंचल, अन्य स्त्री में सक्त, शूर, शठ, मिथ्यावादी और धनवान् होता है। बृहस्पति उसे यकद देखता है तो वाहन–धन और बहुत नौकरों से युक्त, बहुत स्त्रियों का पति तथा राजमन्त्री होता है। शनि उसे यदि देखता हो तो राजा अथवा राजातुल्य, प्रसिद्ध, कोश व वाहन से युक्त, रण्डा स्त्री का स्वामी, रूपवान् और दुःखी होता है।

गुरु राशिस्थ शुक्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार– जन्म के समय गुरु के धनु या मीन गृह में स्थित शुक्र को यदि देखता हो तो पुरुष अत्यन्त भयंकर, शूर, प्राज्ञ, धनी, अत्यन्त प्रिय और विदेशवासी होता है। चन्द्रमा उसे देखता हो तो प्रसिद्ध राजपुरुष, अत्यन्त भोग और भोजन से युक्त तथा अनुपम बलयुक्त होता है। मंगल उसे यदि देखता हो तो अत्यन्त द्वेषी, स्त्री जनित विचित्र सुख–दुःख से समन्वित, धनवान्, तथा गोधन में श्रेष्ठ होता है। जन्म के समय गुरु की धनु या मीन राशि स्थित शुक्र को बुध देखता हो तो पुरुष आभरण–भूषण व अन्नपान, धन का भोक्ता, वाहन से विशेष समन्वित होता है। बृहस्पति यदि उसे देखता हो तो घोड़ा–हाथी–गौ तथा धन से युक्त, बहुत पुत्र और स्त्रियों से युक्त, अत्यन्त सुख और विभव से युक्त होता है। शनि उसे यदि देखता हो तो पुरुष सर्वदा धनवान्, सुखी और भोग समन्वित तथा सुभग होता है।

शनिराशिस्थ शुक्र पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि फल विचार– जन्म के समय शनि की मकर या कुम्भ राशि स्थित शुक्र को यदि सूर्य देखता हो तो पुरुष बैल की तरह निश्चल, स्त्रियों का अतिप्रिय, सत्त्व, सौख्य सम्पन्न और शूर होता है। चन्द्रमा उसे यदि देखता हो तो बलवान्, अत्यन्त शूर, धनवान्, रूपवान्, सुभग और सुन्दर होता है। मंगल उसे यदि देखता हो तो स्त्रीनाश के कारण बहुत अनर्थ, भोक्ता, रोगी, परिश्रम से खिन्न और बाद में सुखी होता है। जन्म समय शनि की मकर या कुम्भ राशि स्थित शुक्र को बुध देखता हो तो पुरुष प्राज्ञ, धन एकत्रित करेन में सक्त, कोश प्रिय, अत्यन्त विद्वान, सत्य तथा सौख्य युक्त होता है। बृहस्पति उसे यदि देखता हो तो प्रिय, वस्त्र, माला, गन्ध से समन्वित, सुकुमार, गीतवाद्यादि में चतुर और सुशील स्त्री से समन्वित होता है। शनि उसे यदि देखता हो तो नौकर–वाहन–धन और भोग से युक्त, मलिन, श्याम रेग वाला, सुन्दर शरीर युक्त और दीर्घकाय युक्त होता है।

कुज राशिस्थ शनि पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों का दृष्टि फल विचार– जन्म के समय मंगल की मेष या वृश्चिक राशि में स्थित शनि सूर्य को देखता हो तो पुरुष कृषि कार्य में रत, सम्पन्न, गौ–भैंस–भेड़ तथा बकरे से युक्त, धन्य तथा कार्य में सर्वदा तत्पर रहने वाला होता है। चन्द्रमा उसे यदि देखता हो तो पुरुष चंचल, नील प्रकृति से युक्त, नीच तथा कुरूप स्त्री में सक्त, सुख और धन से रहित होता है। मंगल उसे यदि देखता हो तो जीवहिंसक, क्षुद्र, चोरों का स्वामी, विख्यात तथा युवति–मांस व मद्यपान प्रिय होता है।जन्म के समय मंगल की राशि में स्थित शनि को बुध देखता हो तो पुरुष मिथ्याभाषी, अधर्मी, बहुत आशायुक्त, तस्कर, प्रसिद्ध, सुख तथा विभव से रहित होता है। बृहस्पति उसे यदि देखता हो तो पुरुष सुख–धन तथा सौभाग्ययुक्त और राजा के मन्त्रियों में श्रेष्ठ मन्त्री होता है। शुक्र उसे यदि देखता हो तो पुरुष अत्यन्त चंचल, कुरूप, परांगना तथा वेश्या में सक्त और भोगरहित होता है।

शुक्र राशिस्थ शनि पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों का दृष्टि फल विचार–जन्म के समय शुक्र की वृष या तुला राशि में स्थित शनि को सूर्य देखता हो, चन्द्रमा उसे यदि देखता हो तो माता रहित, सुशील, नामद्वय से संयुक्त, स्त्री–पुत्र तथा धन से सम्पन्न होता है। मंगल उसे यदि देखता हो तो वातरोग से ग्रस्त, लोकद्वेषी, पापी तथा क्षुद्र और निन्दितशील से युक्त होता है। जन्म के समय गुरु की धनु या मीन राशि स्थित शनि

को बुध देखता हो तो पुरुष राजा के तुल्य, सुखी, आचार्य, प्रतिष्ठित, धनी, सौम्य तथा सुभग होता है। बृहस्पति उसे यदि देखता हो तो राजा अथवा राजा के तुल्य, मन्त्री अथवा सेनापति और सभी आपत्तियों से वर्जित होता है। शुक्र उसे यदि देखता हो तो दो माता–पिता से युक्त, वन तथा पर्वत में जीने वाला, अनेक प्रकार के शील तथा कर्म से सम्पन्न होता है।

स्वराशिस्थ शनि पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों का दृष्टि फल विचार– जन्म के समय स्वराशि मकर या कुम्भ में स्थित शनि को यदि सूर्य देखता हो तो पुरुष रोगी, स्त्री रहित, परान्नभोजी, अत्यन्त दुःखी, भ्रमण में रत तथा भारवाहक होता है। चन्द्रमा उसे यदि देखता हो तो चपल, मिथ्यावादी, पापी, माता का अनिष्टकारक, मिथ्याप्रिय, धनयुक्त, भ्रमोत्पन्न दुःख से युक्त होता है। मंगल उसे यदि देखता हो तो अत्यन्त शूर, भयंकर, गुण में विख्यात, श्रेष्ठजनों का मुखिया, तेज और साहसी होता है। जन्म के समय स्वराशि मकर या कुम्भ में स्थित शनि यदि बुध से दृष्ट हो तो पुरुष भारवाहक, तामसी, सुरूप, भ्रमणज्ञ, अल्पधनयुक्त तथा नीच होता है। वृहस्पति उसे यदि देखता हो तो सम्यक् गुणवान्, राजा अथवा राजातुल्य वंशोत्पन्न, दीर्घायु और निरोगी होता है। शुक्र उसे यदि देखता हो तो पुरुष धनवान्, परदार में सक्त, सुभग, सुखी धनवान और अपने से उत्पन्न किए हुए मद्यपान को ग्रहण करने वाला होता है।

बुध राशिस्थ शनि पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों का दृष्टि फल विचार– जन्म के समय बुध की मिथुन या कन्या राशि में स्थित शनि को यदि सूर्य देखता हो तो पुरुष सुखरहित, अत्यन्त दरिद्र, धार्मिक, अक्रोधी, क्लेशसहिष्णु और गम्भीर होता है। चन्द्रमा यदि से देखता हो तो राजा तुल्य, चिक्कन शरीरयुक्त, स्त्रियों से सत्कार तथा विभव प्राप्त करने वाला अथवा स्त्रियों का कार्य करने वाला होता है। मंगल उसे यदि देखता हो तो प्रसिद्ध बाहुयोद्धा, भावुक बुद्धि वाला, अत्यन्त भार ढ़ोने वाला तथा विकृत शरीर युक्त होता है। जन्म के समय बुध की मिथुन या कन्या राशि में स्थित शनि को बुध देखता हो तो पुरुष धनी, युद्ध में कुशल, नाटयाचार्य, गीत कुशल तथा अत्यन्त निपुण शिल्पकार होता है। बृहस्पति उसे यदि देखता हो तो राजकुल में विश्वासी, सर्वगुण सम्पन्न, सज्जनों का प्रिय, गुणवान् और गुप्तधन से युक्त होता है। शुक्र यदि उसे देखता हो तो स्त्रीसमूह में चतुर, योगाचार्य अथवा योगी तथा स्त्रियों का प्रिय होता है।

कर्क राशिस्थ पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों का दृष्टिफल विचार– जन्म के समय कर्क राशि में स्थित शनि को यदि सूर्य देखता हो तो पुरुष बाल्यावस्था में पिता से रहित, धन–सुख और स्त्री से हीन, कुभोजन से संतुष्ट और पापी होता है। चन्द्रमा उसे यदि देखता हो तो जन्म समय में माता का अनिष्टकारक, धनवान् तथा भाइयों से पीड़ित होता है। मंगल यदि उसे देखता हो तो राजा को समर्पित, विभव से युक्त, विकल शरीर युक्त, सुवर्ण–रत्न तथा परिवार से युक्त और कुबन्धु व स्त्री में अनुरक्त होता है। जन्म के समय कर्क राशि में स्थित शनि को यदि बुध देखता हो तो पुरुष निष्ठुर, अत्यन्त बोलने वाला, शत्रुओं का दमन करने वाला, घमण्डी तथा उत्तम चेष्टायुक्त होता है। वृहस्पति यदि उसे देखता हो तो क्षेत्र, गृह, मित्र, पुत्र, धन, रत्न और स्त्री का भोक्ता होता है। शुक्र यदि उसे देखता हो तो उत्तम कुल में उत्पन्न होकर भोग–विलास तथा सुख से रहित होता है।

सिंह राशिस्थ शनि पर क्रम से सूर्यादि ग्रहों का दृष्टिफल विचार– जन्म के समय सिंह राशि स्थित शनि को सूर्य देखता हो तो पुरुष सुख व धन से हीन, अनार्य, मिथ्याप्रिय, मद्यपान में सक्त, कुरुप, सेवक और अत्यंत दुःखी होता है। चन्द्रमा उसे यदि देखता हो तो अनेक प्रकार के रत्न–धन व स्त्री कर भोक्ता, अत्यन्त कीर्तियुक्त और राजा का प्रिय होता है। मंगल यदि उसे देखता हो तो प्रत्येक दिन भ्रमण करने वाला, निन्द्य, चोर, पर्वत व किला का निवासी, क्षुद्र, स्त्री तथा पुत्र से हीन होता है। जन्म के समय

सिंह राशि स्थित शनि को यदि बुध देखता हो तो पुरुष धूर्त, आलसी, दरिद्र, स्त्री के कार्य को करने वाला, मलिन और दीन होता है। बृहस्पति उसे यदि देखता हो तो ग्राम–पुर और शूद्रों का मुखिया, धनवान्, पुत्रवान्, विश्वासी तथा सुशील होता है। शुक्र उसे यदि देखता हो तो युवतियों का द्वेषी, सुन्दर, अल्प सुखभागी, धनवान् तथा अन्त में अच्छा होता है।

2.4 सारांश

इस इकाई में दृष्टि के विषय में अध्ययन किया। उपखण्ड एक में महर्षि पाराशरीय दृष्टि के विषय में चर्चा की गई है। महर्षि पाराशरानुसार सभी ग्रह अपने स्थित स्थान में 180 अंश अर्थात् सप्तम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं और कौन से भाव को देख रहे हैं? कौन सी राशि को देख रहे हैं ? उसी के अनुसार फल को प्रदान करते हैं। वस्तुतः द्रष्टा ग्रह गुण, दोष, धर्म अथवा उसकी प्रकृति क्या है इसके आधार पर ही फल देता है। मान लिए सूर्य सप्तमस्थ होकर लग्नभाव को देख रहा है तो स्वाभाविक है कि सूर्य के गुण, दोष, प्रकृति को पित्त अर्थात् उष्ण प्रकृति, कम बालों वाला, आलस्यविहीन चतुरस्राकार इत्यादि तो स्वाभाविक है। ऐसी स्थिति में जातक गर्म स्वभाव वाला क्रोधी, मध्यम आकार वाला, कम बालों वाला, आलस्यविहीन होगा। इस प्रकार से दृष्टि कार्य करती है यहाँ तक कि आकार प्रकार, वर्ण विशेष पर भी दृष्टि अपने प्रभाव से प्रभावित करती है। इसी क्रम में जातक दृष्टि के विषय में उपखण्ड दो में आपने अध्ययन किया कि सभी ग्रह पूर्ण दृष्टि से सातवें स्थान को देखते हैं और तृतीय व दशम स्थान को शनिग्रह, पंचम भाव को बृहस्पति ग्रह और चौथे और आठवें भाव को मंगल क्रमशः एकपाद, द्विपाद, त्रिपाद दृष्टि से देखते हैं। इसी के साथ जैमिनि दृष्टि का भी उल्लेख इस खण्ड में किया गया है। जिसमें ग्रहों को आधार न मानकर राशियों को आधार माना गया है। राशियों के अनुसार फलाफल इसी प्रकार से किया जाता है। जातक का एक प्रश्नशास्त्र भी है जिसमें गुप्तदृष्टि, गुप्तशत्रुमित्र दृष्टि, पादोन दृष्टि के विषय में चर्चा की गई है। तृतीय उपखण्ड में विभिन्न ग्रहों द्वारा दृष्टि फल का उल्लेख किया गया है।

2.5 शब्दावली

प्रत्यक्षदृष्टि= प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देने वाली दृष्टि।

एकपाददृष्टि= एक पाद या एक चरण जैसे ग्रह अपने स्थान से तीसरे और दसवें स्थान को एक पाद दृष्टि से देखते हैं।

गुप्तशत्रुमित्रप्रदायिनी= अर्थात् प्रश्नशास्त्र में गुप्त रूप से स्नेह प्रदान करने वाली अथवा गुप्त रूप से शत्रुता को प्रदान करने वाली दृष्टि।

न्यूनदृष्टि= न्यून अर्थात् एक पाद कम होना ही न्यून दृष्टि कहलाती है।

पश्यन्ति= सभी ग्रहों के देखने के अर्थ में प्रयुक्त, पश्य देखना होता है।

सप्तमं= सप्तम भाव को या ग्रह जहाँ स्थित है वहाँ से सप्तम स्थान।

सर्वे= सभी ग्रह

शनिजीवकुजः= अर्थात् शनि, बृहस्पति और कुज से मंगल ग्रह।

पुनः= दोबारा विशेष दृष्टि के अर्थ में उपयोग।

त्रिदशत्रिकोणचतुरष्टमान= त्रिदश अर्थात् तीसरा और दसवां स्थान, त्रिकोण नवम–पंचम स्थान और चतुरष्टमान चौथा और आठवाँ स्थान कहलाता है।

पूर्णदृष्टि= 180 अंश पर स्थित ग्रह को जब द्रष्टा ग्रह देखता है तो उसे पूर्ण दृष्टि कहते हैं।

जैमिनीय ज्योतिष= महर्षि जैमिनि द्वारा प्रणीत ज्योतिष

सम्पश्यति=देखना

ग्रहश्चरणवृद्धितः= ग्रह चरणबद्ध ढंग से।

चतुरस्र= चतुर्थ और अष्टम स्थान को।

क्रमेणैव= क्रमशः जब ग्रह फल देते हैं तो उसमें एक चरण, द्विचरण, त्रिचरण दृष्टि के अनुसार ही क्रम से फल प्रदान करते हैं।

2.6 बोध प्रश्न

1. ग्रह दृष्टि का क्या प्रभाव पड़ता है विस्तृत रूप से उल्लेख करें।
2. महर्षि पाराशरीय दृष्टि का विस्तार पूर्वक उल्लेख करें।
3. दृष्टि की वैज्ञानिकता सिद्ध करते हुए लघु निबन्ध लिखें।
4. जातक एवं पाराशर दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए स्पष्टीकरण प्रस्तुत करें।
5. दृष्टि कितने प्रकार की हैं? विस्तृत उल्लेख करें।

2.7 सहायक उपयोगी पुस्तकें

1. भारतीय ज्योतिष, नेमिचन्द्रशास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, प्रकाशन नई दिल्ली।
2. भारतीय कुण्डली विज्ञान, मीठालाल हिम्मतराम ओझा, देवर्षि प्रकाशन वाराणसी, प्रकाशन वर्ष–2008
3. वृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, टीकाकार, पद्मनाभशर्मा, प्रकाशन वर्ष 2012
4. जातकपारिजात, वैद्यनाथ, व्याख्याकार डॉ. हरिशंकर पाठक, प्रकाशन वर्ष 2012, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।
5. भारतीय ज्योतिष विज्ञान, डॉ. सुरकान्त झा, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
6. लघुपारासरी सिद्धान्त भाष्य, डॉ रत्नलाल, सत्यम् पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
7. बृहद्वकहोडाचक्रम्, डॉ. रत्नलाल, सत्यम् पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
8. जातकालंकार, सद्मनसेश्वरी व्याख्या सहित, डॉ. रत्नलाल, सत्यम् पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
9. षट्पंचाशिका, सद्मनसेश्वरी व्याख्या सहित, डॉ. रत्नलाल, सत्यम् पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

इकाई 3 राशि एवं ग्रह का स्वरूप

संरचना

3.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप :

- राशि एवं ग्रहों की खगोलीय स्थिति का निरूपण कर सकेंगे।
- ग्रहों के स्वरूप का वर्णन कर सकेंगे।
- मेषादि राशियों के स्वरूप को बता सकेंगे।
- मेषादि राशियों के वर्ण प्रकृति आदि का वर्णन कर सकेंगे।
- ग्रहों के स्वरूप में विभिन्न मतों की तुलना कर सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

आकाशस्थ असंख्य पिण्डों में राशियों के स्वरूप के दर्शन होते हैं। ऐसे में एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि राशियों की उत्पत्ति और उत्पत्ति का आधार क्या हो सकता है? राशियों का मानव समाज पर पड़ने वाला प्रभाव जन्मराशि के आधार पर नामकरण करने की वैज्ञानिकता का आधार क्या हो सकता है? राशियों और ग्रहों का परस्पर सम्बन्ध एवं आधार क्या है? लग्नादि द्वादशभावों में क्या क्या स्वरूप होगा? ग्रहों का भौतिक स्वरूप क्या और कैसा होता है? मानव समाज के लिए ग्रह भाग्य के निर्माता हैं अथवा मानव के भाग्य में घटित होने वाली शुभाशुभ घटनाएँ ग्रहों द्वारा प्राप्त होती है। क्या वास्तव में ग्रह भाग्य के सूचक हैं। यह समस्त विषयों का विस्तृत रूप से हम इस इकाई में अध्ययन करेंगे। ज्योतिष एक विज्ञान है इस विषय में जान सकेंगे यही इस इकाई का प्रस्तावित विषय है।

3.2 राशि एवं ग्रह स्वरूप

भारतीय मान्यता के अनुसार जो कुछ वेद में है वही सर्वत्र भी है और जो वेद में नहीं है वह अन्यत्र भी नहीं है। **यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तद् क्वचित्**'' महर्षि मनु

के अनुसार मानव के जीवन में धर्म का आधार वेद है ''**वेदोऽखिलः धर्ममूलम्**''। वह वेद ''**अणोरणीयान्महतो महीयान्**'' स्वरूप का बोधक एवं ईश्वर का निःश्वास भूत है जो प्राणियों को आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक त्रिविध कष्टों का उद्धारक तथा पुरुषार्थ चतुष्टय धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का पथप्रदर्शक है। इसी वेद में संसार के समस्त विज्ञान निहित हैं। इसी वेद के प्रयोजन को सिद्ध करने के लिए षड् वेदांगशास्त्र हैं। इन षड्वेदांगशास्त्रों में ज्योतिष को अतिमहत्वपूर्ण माना गया है। महर्षि लगध ने इसे काल का ज्ञापक या कालविधानशास्त्र भी कहा है। इसका प्रधान प्रतिपाद्य विषय काल ही है। नारद संहिता के अनुसार ज्योतिषशास्त्र के सिद्धान्त, संहिता, होरा तीन प्रधान स्कन्ध हैं। आचार्य वराहमिहिर ने भी ''**अनेकभेदविषयं स्कन्धत्रयाधिष्ठितम्**'' कहकर अनेकों भेदों में प्रमुख तीन भेदों को स्वीकार किया है। सिद्धान्त स्कन्ध में ग्रहों की गति, स्थिति, युति, ग्रहयुद्ध, ग्रहण इत्यादि समस्त विषय समाहित रहते हैं। संहिताशास्त्र में सम्पूर्ण भूगर्भीय, भूमण्डलीय, खगोलीय, भूगोलीय, दिग्देश, दशा, काल में होने वाले समष्टि गत फलों का विवेचन समाहित रहता है। होराशास्त्र में जातक के जन्म–जन्मान्तर कृत कर्मों के द्वारा वर्तमान समय में प्राप्त होने वाले शुभाशुभ फलों का विवेचन एवं वर्तमान समय में प्राप्त होने वाले तथा भविष्य में प्राप्त होने वाले ष्शुभाशुभ कर्मों को जानने की विधि, दशाएँ विंशोतरी, अष्टोत्तरी, योगिनी आदि ग्रहों का भौतिक स्वरूप एवं राशियों का भौतिक स्वरूप, राशियों और ग्रहों द्वारा भूमण्डल वासियों को प्राप्त होने वाले गुण–दोष आदि का विस्तृत रूप से उल्लेख समाहित रहता है। ज्योतिष के अष्टादश आचार्यों ने अपने अपने विवेक के अनुसार अपने अलग अलग मत राशियों और ग्रहों के स्वरूप के विषय कहे हैं। तथापि सामान्य अन्तर आचार्यों के अनुभव में प्रतीत होता है यदि पाठकों को सम्पूर्ण ज्ञान परमावश्यक है। अन्तः दृष्टि से पृथक् पृथक् आचार्यों द्वारा वर्णित पृथक्–पृथक् ग्रन्थों का अवलोकन करना एवं अध्ययन करना ही इस विषय के ज्ञान के लिए श्रेयस्कर रहेगा। ज्योतिष जगत में राशियाँ, ग्रह, नक्षत्र, एक श्रेष्ठ दैवज्ञ के लिए विस्तृत रूप से ज्ञान प्राप्त करना उनके स्वरूप को जानना, उनके आन्तरिक एवं बाह्य स्वरूप में बोध होना परमावश्यक है।

3.2.1 राशि की खगोलीय स्थिति एवं संरचना

सृष्टि के रचना काल से ही मानव मस्तिष्क में इस प्रकार के असंख्य प्रश्न आए होगें तथा वर्तमान में भी मस्तिष्क में इस प्रकार के असंख्य प्रश्नों को अपने मन मस्तिष्क में लिए हुए बैठा है। मानव जब सर्वप्रथम वह जब आकाश की ओर दृष्टिपात करता है तो आश्चर्यचकित होकर अपने अभिभावकों से इस प्रकार के प्रश्न प्रायः आज पूछता है यह रात्रि में चमकने वाला गोलाकार पिण्ड क्या है? दिन में चमकने वाला सूर्य क्या है? रात्रि में टिमटिमाने वाले असंख्य छोटे–छोटे चमकने वाले बिन्दु क्या है? ये कहाँ से आते हैं? और कहाँ विलीन हो जाते हैं? इनका घर परिवार इनकी उत्पत्ति का आधार क्या है? ये समस्त प्रश्न आज भी मानव मस्तिष्क में विद्यमान हैं। इसलिए इन उपर्युक्त सभी प्रश्नों का उत्तर ज्योतिष शास्त्र के पास है।

आकाश में जब हम देखते हैं तो रात्रि में हमें असंख्य तारे टिमटिमाते दृष्टिगोचर होते हैं। इन्हीं असंख्य तारों में कुछ राशियाँ होंगी कुछ ग्रह होंगे, कुछ उपग्रह होंगे तो कुछ क्षुद्रग्रह होंगे। वस्तुतः नीलगगन को हम देखते हैं उसके चारों ओर दृष्टिपात करते हैं तो हमें एक बृहद् गोल दिखाई पड़ता है। यह बृहद् गोल आपको सर्वत्र एक जैसा गोलाकार दिखाई देगा। इस गोल को देखने के लिए आप चाहे देश के अथवा विदेश के किसी भी कोने में जाएँ सर्वत्र आपको गोल ही दिखाई देगा। इसी बृहद्गोल का सिद्धान्त ज्योतिष की भाषा में खगोल नाम भी है। 'ख' अर्थात् शून्य या आकाश अर्थात् खगोल का अर्थ हुआ कि ष्शून्य की तरह गोल या ऐसे समझें आकाश गोल है। यहाँ

पर हम चर्चा करेंगे राशियों के विषय में। अतः राशियों के स्वरूप को जानने से पूर्व हमें यह भी जान लेना आवश्यक होगा कि राशियाँ कहाँ अवस्थित हैं? और किस स्थिति में हैं ? राशियाँ इस बृहद्गोलाकार के चारों ओर स्थित हैं, लेकिन आप उनको नंगी आँख से नहीं देख सकते। इनको देखने के लिए आपको दूरदर्शी यन्त्र अथवा टेलिस्कोप का सहारा लेना होगा और आप इन राशियो ंको भूमण्डल के किसी भी कोने से देख सकते हैं और वह स्थान या गोल छोटा हो अथवा बड़ा सभी का मान 360^0 अंश ही होगा। इस प्रकार से 360^0 अंशों के इस बृहद्गोल को जब हम बारह 12 बराबर भागों में विभाजित करते हैं तो प्रत्येक भाग का परिमाण 30^0 अंश होता है। और अब प्रत्येक भाग की बात करें तो एक भाग में असंख्य छोटे–बड़े तारों का समूह व्याप्त है और प्रत्येक भाग को जब आप सूक्ष्मदर्शी यन्त्र से देखते हैं तो प्रत्येक भाग की आकृति भिन्न भिन्न रूप से दृग्गोचर होती है। इसी प्रतिकृति के आधार पर एवं गुण–दोषों के आधार पर राशियों का नामकरण किया गया है। जैसे मेष राशि के विषय में बात करें तो 0^0 से 30^0 अंश तक का परिक्षेत्र आकाश में मेढा के आकार प्रकार के सदृश दिखलाई पड़ता है और उनके गुण धर्मों के विषय में यदि और अधिक जानकारी ग्रहण करेंगे तो उस मेढे के समस्त गुण–दोष, आकार–प्रकार, शारीरिक स्वरूप एवं आन्तरिक, मानसिक समस्त गतिविधियाँ उसके अन्दर विद्यमान हैं और उसी को आधार मानकर दैवज्ञ जन जब आकलन करते हैं तो वह बिल्कुल सटीक बैठता है। जैसे मेष की आँखों को देखने पर आप देखते है कि अत्यधिक सौन्दर्यपूर्ण, मुख का आकार, लम्बायमान, मेष की टांगें पतली और लम्बी, भेड़चाल का एक गुण प्रसिद्ध है। प्रायः अधिकतर पर्वतीय प्रदेशों में विचरण करने वाली हरियाली के पीछे भागने वाली अर्थात् प्रकृति प्रेमी, सुन्दर, स्वच्छ वातावरण में निवास करना मेष राशि का प्राकृतिक गुण है। ठीक इसी प्रकार से मेष राशि जातक के गुण–दोष, आकार–प्रकार, मनन, चिन्तन आदि का प्रभाव पड़ता है। इसी क्रम में वृष राशि के परिक्षेत्र में भी असंख्य तारागणों के समूह के द्वारा बनने वाली आकृति एक विशालकाय वृषभ के समान दृग्गोचर होती हैं। वृषभ के प्रत्येक अंग एवं बाह्य आकार–प्रकार का आकलन करें तो वृषभ की आँखें गोल, और सुन्दरता लिए हुए, टाँगें लम्बी पतली, स्कन्ध मजबूत, शरीर बलिष्ठता लिए हुए सात्विक प्रवृतियुक्त होता है। ठीक इसी प्रकार से सम्पूर्ण गतिविधियों से युक्त वृषभ राशि वाले जातकों की प्रकृति होती है। मिथुन राशि दो ऐसे नवोढा कन्या और पुरुष का संगम है, दो मन, दोशरीर, दो प्रकृतियाँ, नवयुवक है। ऐसे में जिस जातक की मिथुन राशि होगी वह द्विस्वभाव युक्त, दो प्रकृतियों से युक्त, तथा पत्नी–पति दोनों का परस्पर परमकाष्ठा पर प्रेम होगा। कक्रराशि जलचरराशि है– केकड़ा पत्थर के नीचे छुपकर रहना उसका स्वभाव जल केआस–पास निवास और बहुत गहरी पकड़ को बनाए रखने वाली कक्र राशि के जातकों की प्रकृति भी कुछ इस प्रकार की ही होती है। उनको उसी प्रकार कक्र के स्वभाव को दृष्टिगत रखते हुए विचार करना चाहिए। सिंह राशि वाले जातकों में सिंह की तरह स्वाभिमान, राजा के समान गुण, क्रूरता लिए हुए के कारण पित्त का रोगी होना इत्यादि समस्त सिंह में पाए जाने वाले सभी गुण–दोष सिंह राशि वाले जातकों में पाए जाते हैं। कन्या राशि एक नवोढा बालिका है सिर के उपर आग की टोकरी धारण किए हुए है। द्विस्वभाव वाली है, शान्तचित्त है, जब कभी उग्र होती है तो कामरूपी भस्म करने की शक्ति रखती है। कन्या सामांजस्य स्थापित करने में अहम् भूमिका रखती है। ठीक इसी प्रकार से कन्या राशि वाले स्वभाव के विषय में जानना चाहिए। तुला राशि धर्म का प्रतीक, अपनी लम्बाई को लिए हुए है। इसलिए तुलाराशि वाला जातक प्रायः प्रत्येक विषय में तोल–तोल कर निष्कर्ष निकालता है। और प्रत्येक कार्य में अपना स्वार्थ भी देखता है। वृश्चिक (बिच्छू) एक कोटर में छुपा हुआ जीव है। मौका आने पर प्रहार करता है। वैसे शान्त चित्त स्थिर रहता है। अतः इसी प्रकार से वृश्चिक राशि वाले जातक समय आने पर प्रहार करते हैं। और बिच्छू के समान

इनका भयानक प्रहार होता है। धनु राशि में पूर्व का 15^0 अंश वाला भाग पुरुष का है और 15^0 अंश के उपरान्त वाला अश्व का है। इसलिए इस प्रकार के जातक दो मानसिक विचार धारा वाले होते है। पहले 15^0 अंश तक की स्थिति में एक सामान्य मानव की तरह व्यवहार करते हैं परन्तु दूसरी स्थिति में वह अपने बाहुबल का प्रयोग करते हुए समय स्थिति के अनुसार प्रहार करने से नहीं चूकते है। मकर राशि पूर्वार्धभाग बाहर एवं उत्तरार्धभाग जलचर में रहता है जिसके कारण आकाश तत्त्व व जलतत्त्व की प्रधानता लिए हुए है। लेकिन मनोवृत्ति एक क्रूर मानसिकता वाली है। इसलिए मकरराशि वाले जातकों का स्वभाव कुछ इस प्रकार से जानना चाहिए। कुम्भराशि की स्थिरता धारण किए हुए जलपूर्ण घट है। आकार–प्रकार सामान्य है। अतः आकार–प्रकार एवं स्थिरता की द्योतक राशि के गुण धर्म कुम्भराशि वाले जातकों में मिलते हैं। मीन राशि की स्थिति एक जलचर राशि की है सुन्दरतायुक्त, द्विस्वभावयुक्त और जल में जीवन को धारण करने वाली है। इस राशि के जातक द्विस्वभाव युक्त, पानी के किनारे या पानी सम्बन्धित खाद्य–पेय तथा झरने, झीलें, समुद्री किनारा इनके लिए रुचिकर होते हैं। इसी प्रकार से हमें राशियों के भौतिक स्वरूप के विषय में ज्ञान ग्रहण करने के उपरान्त जातकों के गुण–दोष–धर्म का आकलन करके फलादेश करना चाहिए।

3.2.2 ग्रहों की खगोलीय स्थिति एवं संरचना

राशि एवं ग्रहों की खगोलीय स्थिति एवं संरचना भी ग्रहों के रूप में इनके प्रभाव को लेकर सम्भ्रम में है– गृह्यते अनेन इति ग्रहः। भारतीय ज्योतिष में सात प्रमुख ग्रहों के अतिरिक्त राहु व केतु को दो छाया ग्रहों के रूप में मान्यता प्राप्त है। आधुनिक वैज्ञानिकों द्वारा नैप्च्यून, प्लूटो आदि को मान्यता दी गई है परन्तु भूमिवासियों के लिए भारतीय ज्योतिष सौर परिवार में आज के दिन तक इन ग्रहों को मान्यता प्राप्त नहीं हुई है। भारतीय ज्योतिष में राशियों के साथ इनका सामंजस्य स्थापित नहीं किया जा सकता। ग्रहों और राशियों का परस्पर संयोग ही भूमिवासियों को प्रभावित करता है और उसी के आधार पर भारतीय ज्योतिष शुभाशुभत्व के विषय में अपना योगदान प्रदान करता है। हम जानते है कि 30^0 अंश की राशि का भोग काल होता है। इसी क्रम से 360^0 अंशों को 12 राशियों में विभाजित किया गया है जिसके फलस्वरूप सूर्य और चन्द्रमा को छोड़कर प्रत्येक ग्रह को दो राशियों का अधिपति ग्रह माना गया है। सूर्य और चन्द्रमा का आकलन भौतिक दृष्टि से कुछ इस प्रकार से है। ग्रहों में सूर्य को राजा की संज्ञा प्राप्त है। आकाश के केन्द्र में राजा के समान सभी ग्रहों, नक्षत्रों, राशियों का नेतृत्त्व करता है। अहर्निशं सेवामहे की भावना के साथ एक क्षण के लिए भी विराम नहीं और अत्यधिक उर्जा एवं तेज को धारण किए हुए पृथ्वी वासियों के लिए दिन और रात्रि का द्योतक है। इसलिए प्रत्येक क्रियाकलाप में भौतिक जगत सूर्य के उपर आश्रित है। स्वयं सूर्यांश पुरुष ने सूर्यसिद्धान्त में मयासुर संवाद में इस विषय को कहा है कि– **'न मे तेजस्सहः कश्चिदाख्यातुं नास्ति मे क्षणः मदंशः पुरुषः अयम् ते निश्शेषं कथयिष्यति।'** इस प्रकार अत्यन्त तेज को धारण किए हुए सूर्य ग्रह है। सूर्य जीवन प्रदाता है। यह सिंह राशि का स्वामी ग्रह है। इसलिए स्वयं सूर्य तेजयुक्त होने के फलस्वरूप सिंह राशि का नेतृत्त्व करता है। यही कारण है कि सिंह राशि के जातकों में स्वाभिमान की प्रवृत्ति और क्रूरता देखने को मिलती है। सूर्य ग्रह चतुरस्राकार है। पित्त प्रकृति है। उष्ण स्वभाव है। स्थिरराशि का स्वामी ग्रह है वस्तुतः सामान्य व्यवहार में सूर्य आकाश में चलायमान ग्रह प्रतीत होता है परन्तु सूर्य स्थिर है और भूमण्डल चलायमान होने के फलस्वरूप इस प्रकार से आकाशीय स्थिति दृग्गोचर होती है।

चन्द्रमा–चन्द्रमा ग्रहों में स्त्री कारक ग्रह है। कक्र राशि का स्वामी ग्रह है। यह चंचलता के लिए जाना जाने वाला ग्रह है। अत्यधिक सुन्दरता का कारक ग्रह, स्त्रियों के गुण–दोष से युक्त चंचल एवं चपल ग्रह है। सूर्य और चन्द्रमा का परस्पर सम्बन्ध मित्रता पूर्ण है। यह मित्रता कोई तात्कालिक नहीं अपितु नैसर्गिक है। शरीर में मन का नेतृत्त्व यह ग्रह करता है। जैसे शरीर में आत्मा का नेतृत्त्व सूर्य ग्रह करता है ठीक उसी प्रकार से तन–मन में पूर्ण प्रतिनिधित्व चन्द्रमा का है। प्रति सवा दो दिन के अन्तराल में राशि परिवर्तन का योग होता है। सूर्य चन्द्रमा कभी भी वक्रगामी नहीं होते हैं। चन्द्रमा का शरीर चतुरस्राकार है। गोलमुख, अतिसुन्दर नयन नक्शों को धारण किए हुए शुक्लपक्ष में बलहीन् और कृष्ण पक्ष में बललीन रहता है। इसलिए शुक्लपक्ष में पूर्ण प्रभाव युक्त होता है। वृषराशि के 30 अंशों तक इस ग्रह का पूर्ण अधिकार है। कभी कभी ग्रह गति स्थिति वशात् पूर्णिमा को दोनों पिण्डों की स्थिति के अनुसार चन्द्रग्रहण की सम्भावना होती रहती है। चन्द्रमा तीव्र गति कारक ग्रह है। शीत प्रकृति होने के कारण कफ का कारक ग्रह है। ग्रहों में इस ग्रह को रानी कहा जाता है।

मंगल–मंगल ग्रह को भूसुत, भूमिपुत्र, भूमितनय इत्यादि नामों से जाना जाता है। आकाश में स्थित यह ग्रह अति क्रूर प्रकृति का है। पित्त इसकी प्रकृति रहती है। ग्रहों में सेनापति का नेतृत्त्व करता है। तमो गुणी प्रधान है, शरीर में रुधिर का कारक ग्रह है। के रूप में ग्रह उत्पात के लिए जाने जाते हैं। संहिता ग्रन्थों में भी ऐसे ग्रहों के विषय में उल्लेख प्राप्त होता है कि उत्पात कारक ग्रह इसलिए मंगल से प्रभावित जातकों पर इस प्रकार से क्रूरता पूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। यहाँ पर मंगल ग्रह अपने स्थित स्थान से चौथे और आठवें स्थान को त्रिपाद दृष्टि से देखते है। इसलिए दृष्टि पात् स्थान को सगुण दोष धर्म के अनुसार प्रभावित करते है।

बुध– बुध ग्रह शान्त, सौम्य प्रकृति युक्त ग्रह है, यह पित्त और वायु का कारक ग्रह है। अतः वायु कारक होने के फलस्वरूप कफ की प्रकृति को देने वाला है। राशियों में बुध ग्रह का प्रतिनिधित्व मिथुनराशि तथा कन्या राशि का प्रतिनिधि है। अतः मिथुन और कन्या राशि वाले जातक विशेष रूप से प्रभावित होते हैं। परन्तु इसके साथ–साथ यदि जन्मकुण्डली में बुध ग्रह की स्थिति ठीक होगी तो बुध अपने प्रभाव के द्वारा कवि, लेखक, वक्ता, एडमिस्ट्रेटिव, अध्यापक आदि का निर्माण करता है। बुध ग्रह जातक की दृष्टि के अनुसार तीसरे, दशवें, नवम, पंचम और चौथे–आठवें स्थान को एकपाद, द्विपाद, त्रिपाद दृष्टि से क्रमशः देखता है।

बृहस्पति– बृहस्पति को ग्रहों एवं समस्त देवताओं का गुरु की संज्ञा से जाना जाता है। अत्यधिक प्रभाव एवं बृहदाकार स्वरूप युक्त, पीत वर्ण वाला, उर्ध्व दृष्टि वाला, बुद्धिमान कफ प्रकृति से युक्त ग्रह है। इसलिए बृहस्पति आध्यात्म के प्रति समर्पित ग्रह है। धनु और मीन राशियों का स्वामी ग्रह है। परस्पर सूर्य, चन्द्र, मंगल ग्रह के साथ गुरु का मैत्री सम्बन्ध है। अतः इस दृष्टि से मन, आत्मा और रुधिर पर रक्त के विषय में बृहस्पति का प्रभाव देखा जा सकता है। इसलिए बृहस्पति के द्वारा प्रभावित जातक धर्मात्मा, ज्ञानवान्, उच्चशिक्षित अधिकारी, प्रोफेसर, लेखक, समाज सुधारक हो सकता है।

शुक्र–शुक्र ग्रह भौतिक आधुनिक संसाधनों का प्रदाता, स्त्रीकारक ग्रह अथवा स्त्री की प्रकृति वाला, बहुत सुन्दर नेत्रों वाला, कफ का कारक एवं वायु प्रकृति युक्त ग्रह, वृष तथा तुला राशियों पर स्वामित्व, ऐसे जातक जो शुक्र ग्रह से प्रभावित होते हैं। वह प्रकृतिप्रेमी, स्त्रीप्रिय, आधुनिक भौतिक सुख संसाधन, वाहनादि से सम्पन्न होते, कफ और वायु रोग से पीड़ित रहते हैं।

शनि–शनि को ग्रहों में सेवक की संज्ञा से जाना जाता है। कहते हैं यदि सेवक अच्छा हो तो मालिक को तार देता है अन्यथा की स्थिति में मार देता है। अतः शनि से प्रभावित जातक कुछ इस प्रकार से ही प्रकृति युक्त होते है– मन्द प्रकृतिवाला, आलसी, सिकुड़ा हुआ शरीर, लम्बा चौड़ा शरीर को धारण किए हुए यह ग्रह प्रायः भूमण्डलवासियों को धर्म के साथ वास्तविकता के साथ सामंजस्य बैठाते–बैठाते लोग इसे दुःकारक ग्रह कहने लगे, भयभीत होने लगे। वस्तुतः जब मानव ने मूल उद्देश्य को भुला दिया तो मानव का स्वभाव है कि वह नकारात्मक कहीं ज्यादा सोचता है सकारात्मक कम और उसी नकारात्मकता के कारण वह ग्रहों के दोषी ठहराता है। शनि ग्रह का स्वामित्व मकर और कुम्भ राशियों पर है। इस राशि वाले जातक विशेष रूप से प्रभावित होते हैं।

राहु और केतु– राहु और केतु ग्रहों का आकाशस्थ पिण्ड नहीं है। इसलिए जिसका पिण्ड नहीं, स्वरूप नहीं उसका प्रभाव भी नहीं। परन्तु यहाँ पर धातव्य है कि पिण्ड न होने के कारण भी दोनों ग्रहों का जातकों की कुण्डली पर विशेष प्रभाव दृग्गोचर होता है। क्या कारण है? वस्तुतः यह दोनों ग्रहों की उत्पत्ति छाया के रूप में हुई है। छाया अन्धकार का द्योतक है। वास्तविक रूप से छाया होना भी तभी सम्भव है जब कोई न कोई द्रव्य अथवा पदार्थ किसी प्रकाशमान पिण्ड के समाने हो। ये दोनों छाया–ग्रह वस्तुतः सूर्य (जो कि प्रकाशमान पिण्ड है) और च्रन्दमा (जो अप्रकाशक है) के सहयोग से अस्तित्व में आते हैं। यहाँ इन ग्रहों के छायात्व का अर्थ है 'अप्रकाशत्व एवं अपिण्डत्व'। अर्थात इन दोनों का सूर्य, चन्द्रमा आदि के समान पिण्ड रू नहीं है ऐसे में इनका अप्रकाशतत्व तो स्वतः सिद्ध ही है। अब प्रश्न यह है कि ऐसे में सूर्च चन्द्रमा के कारण इनके अस्तित्व से क्या अभिप्राय है? वस्तुतः सूर्य और चन्द्रमा के भ्रमण पथ जो कि वृत्तकार है, एक दूसरे से प्रायः 5अंश का कोण बनाते हुए ऐसे अवस्थित हैं कि उन दोनों का परस्पर दो स्थानों पर सम्पर्क होता है। यही दोनों सम्पात् बिन्दु राहु एवं केतु कहलाते हैं। चूंकि वत्तों का सम्पातों में 180 अंश का अन्तर होता है, अतः राहु व केतु में भी सदैव 180 (या 6 राशि) का अन्तर रहता है। वही छाया राहु और केतु है। और वही राहु और केतु प्रायः परस्पर एक दूसरे सप्तम राशि के अन्तर में रहते हैं। विभिन्न मत मतान्तरानुसार वृष एवं मिथुन राशि को राहु की उच्च राशि तथा कन्या को स्वराशि ठीक उनसे सप्तम राशियों को वृश्चिक एवं धनु केतु की उच्च राशियाँ होगी। मीन केतु की स्वराशि होगी। संसार में सबसे ज्यादा भ्रमित आज लोग अज्ञानता के कारण है यही अज्ञानता लोभ, मोह, अहंकारवश, क्लेश, दुःख, नाना प्रकार के आधि–व्याधियों का कारक है। अतः इन छाया ग्रहों से प्रभावित जातक प्रायः उपर्युक्त स्थितियों से ज्यादा प्रभावित होते हैं।

3.2.3 राशि स्वरूप एवं आकाशीय संरचना

भारतीय ज्योतिष में ग्रह–नक्षत्र, राशियों के विषय में प्रत्येक आचार्य का अपना मत है। इस उपखण्ड में आचार्य नीलकण्ठ के मतानुसार राशियों का मत कुछ इस प्रकार से है–

मेषराशि– मेषराशि का स्वरूप आचार्य नीलकण्ठानुसार इस प्रकार है– पुरुष संज्ञक अर्थात् पुरुष राशि है, चर इसकी प्रकृति है, अग्नि तत्त्व है, सुदृढ अर्थात् अंगों से बलवान् पुष्ट, चतुष्पाद, (चार पैरों वाली), रक्त वर्ण, उष्ण प्रकृति, पित्त कारक, अत्यधिकशब्द करने वाली, पर्वतों में विचरण करने वाली, क्रूर राशि, पीतवर्णीय, दिवावली, पूर्वदिशा निवासिनी, विषमोदयी, कम सन्तति युक्त, रुक्ष, राजा, दिन में बलवान समचतुरस्त भौतिक जगत में मेष राशि में उत्पन्न जातक वह भले स्त्रियाँ हो अथवा पुरुष हों, उनकी प्रकृति मेष के स्वभाव के साथ मेल–जोल वाली होगी। जैसे–ऐसे जातक चर प्रकृति के होंगे, भेड़ चाल के समान अपने आगे वाले का

अनुसरण करने वाले, छोटी–छोटी बातों पर क्रोध करने वाले, शारीरिक दृष्टि से बलवान्, ऐसे जातकों की मनोवृत्ति चारों दिशाओं के विषय में चिन्तन अर्थात् मानसिक स्थिरता का अभाव, उग्र पित्ताधिक्य, उँचे स्वर में बात करना, पर्वतों और पहाड़ों, घाटियों में विचरण करना इनको अच्छा लगता है। दिन में बलवान, पूर्व दिशा की स्वामिनी, कम सन्तान वाले, रुक्ष त्वचा वाले, राजा की तरह व्यवहारशील, समोदयी इस प्रकार का मेष राशि के जातकों का स्वभाव होता है। यथा–

पुमांश्चरोऽग्नि सुदृढश्चतुष्पाद्रक्तोष्णपित्तोऽतिरवोऽद्रिरुग्रः।
पीतो दिनं प्रग्विषमोदयोऽल्पसंगप्रजोरुक्षनृपः समोऽजः।।

वृषराशि– वृषराशि आकाश में स्थित अनेक तारों के समूह द्वारा निर्मित एक झुंड के रूप में विद्यमान है। सूक्ष्मदर्शी यन्त्र के द्वारा देखने पर वह वृहदाकार विशालकाय, वृष के सदृश दृष्टिगोचर होता है। इस राशि के विषय में आकाशस्थ गति स्थिति के अनुसार विशालकाय शरीर, स्थूल आकार को धारण किए हुए है। आँखें गहरी काली सौन्दर्य युक्त, जंघाएँ पतली मजबूत, स्थिर प्रकृति वाला, शान्त चित्त राशि है। इसका शास्त्रीय स्वरूप कुछ इस प्रकार से है। वृषराशि स्थिर संज्ञा, स्त्री राशि है, शीतलता युक्त भूमि पर भ्रमणशील, रुखी त्वचायुक्त, दक्षिणदिशा के स्वामिनी, भूमि तत्त्व प्रधान, वायु प्रकृति, रात्रिचारी, चतुष्पाद युक्त, श्वेतवर्ण, अतिउच्चशब्दकर्त्री, विषमपरिस्थिति में उदय, मध्यम सन्तति कम सन्तान, वणिक्, वृद्धि, शुभराशि है। यथा–

वृषः स्थिरः स्त्री–क्षिति–शीत–रुक्षो याम्येट्सुभूर्वायु निशा–चतुष्पात्।
श्वेतोऽतिशब्दो विषमोदयश्च मध्यप्रजासंगशुभोऽपि वैश्यः।।

मिथुनराशि–पश्चिमदिशा में एकाधिकार, वायु तत्त्व तथा तोते के रंग के समान, द्विपाद, यमल, द्विशरीरधारी, विषमस्थिति में उदय, द्विस्वभाव राशि, मध्यम सन्तान, वन में विहार करने वाली, शूद्रवर्ण वाली, लम्बाशब्द करने वाली, चिक्कणयुक्त, दिन में बलवान, उग्र प्रकृतियुक्त राशि है। यथा–

प्रत्यक् समीरः शुकभा द्विपन्ना द्वन्द्वो द्विमूर्ति–विषमोदयोष्णः।
मध्यप्रजा संग–वनस्थशूद्रो दीर्घस्वनः स्निग्ध–दिनेट् तथोग्रः।।

वस्तुतः मिथुन राशि वाले जातक द्विस्वभाव युक्त होते हैं। पश्चिम दिशा में इनका भाग्योदय होता है, विषमोदय राशि होने के कारण विषम परिस्थितियों में स्थिरता बनाए रखते हैं। अल्प सन्तान वाले, वन में आहार–बिहार, उँची आवाज में बात करना, चिक्कणपन अर्थात् प्रेम सौहार्द के साथ उग्र स्वभाव वाले जातक होते हैं।

कर्कराशि–कक्रराशि वाले जातक प्रायः बहुत सन्तान युक्त होते हैं। चर राशि, पाटलवर्ण वाली, और कम बात करने वाली राशि, शुभ राशि है, कफ प्रकृतियुक्त, स्निग्ध, जल में विचरण करने वाली, समान उदय वाली, रात्रिबली, उत्तरदिशा की स्वामिनी राशि है। यथा–

बहुप्रजा संगप्रदः कुलीराचरोगंना पाटलहीनशब्दः।
शुभ कफि स्निग्ध–जलाम्बुचारी समोदयो विप्र–निशोत्तरेशः।।

कक्र राशि उत्पन्न जातक अत्यधिक सन्तान वाले, चंचल स्वभाव युक्त, पाटलवर्ण, कम बोलने वाले, शुभ विचारवान, कफ के रोगी, प्रेमी, जलविहार, नौका विहारादि में रुचि रखने वाले, ब्राह्मण वर्ण, रात्रि बली, उत्तर दिशा की स्वामिनी उत्तरदिशा में एकाधिकार एवं भाग्योदय होना निश्चित होता है।

सिंहराशि– पुरुष संज्ञक राशि, अग्नितत्त्व प्रधान, पीतवर्णीय, रुक्ष, पित्त के साथ उष्ण प्रकृति, पूर्व दिशा की स्वामिनी, कठोर चतुष्पद उदयस्थिति में सम, अत्यधिक उँचे स्वरयुक्त, कम सन्तति, पर्वताचारी, राजा के समान उग्र, धूम्रवर्णीय सिंह राशि होती है। यथा–

पुमान् स्थिरोऽग्निर्दिन–पीत–रुक्षः पित्तोष्ण–पूर्वेश–दृढचतुष्पात्।
समोदयो दीर्घरवोऽल्पसंगप्रजो हरिः शैल–नृपोग्र–धूम्र ।।

सिंह राशिस्थ उत्पन्न जातकों में पुरुषताधिकता, इनके शरीर में अग्नितत्त्व की प्रधानता वशात् उग्र एवं गर्म प्रवृत्ति रहती है। पीतवर्णीय राशि, रुक्षकान्ति युक्त जातक का स्वभाव होता है। ऐसे जातक प्रायः पूर्व दिशा में ही कार्यक्षेत्र की स्थिति होती है। ऐसे जातक किसी एक मार्ग का अनुसरण नहीं करते हैं अपितु इन जातकों की मनोवृत्ति एक साथ दस–दस जगह पर इनका चिन्तन चला करता है। जब प्रारम्भ करते हैं अपने जीवन काल के प्रथमचरण में किसी कार्य को तो ये जातक समस्थिति में होते हैं। इनकी सन्तान कम होती है। राजा के समान अपना जीवन जीते हैं और वनविहार, पर्वतों में भ्रमण करना, एकान्त वास में रहना इनकी प्रकृति में रहता है।

कन्या राशि– कन्या राशि द्विपद, स्त्रीसंज्ञकराशि है रात्रि में बलवान् रहती है, वायु एवं शीतप्रकृति युक्त है, समस्थिति, दक्षिण में स्थित, कम बोलने वाली, शुभराशि, वैश्य प्रकृति, रुक्ष, कम सन्ततियुक्त शुभराशि है। यथा–

पाण्डुर्द्विपाद–स्त्री द्वितनुर्यमाशा निशा मरुच्छीत–समोदयक्ष्मा।
कन्यार्धशब्दा शुभभूमिवैश्या रुक्षाल्पसंगप्रसवा शुभा च।।

कन्या राशि वाले जातक इनके मन में भी दो मार्गों पर चलने की प्रवृति या दो कार्यक्षेत्र होते है। स्त्री के गुण, धर्म ऐसे जातक में अधिक में अधिकतर पाए जाते हैं। ये जातक रात को यात्रा करना, रात्रि में किसी कार्य को सम्पन्न करना इस मानसिकता वाले जातक होते हैं। इनके शरीर में वायु तत्त्व की अधिकता होती है। शीतलता मन मस्तिष्क में विद्यमान रहती है। ये अधिकतर एक समान अवस्था में जीवन यापन करते हैं। दक्षिणदिशा इनके लिए विशेष लाभकारी होती है। ये लोग कम वाचाल होते हैं। व्यापार इनके मन मस्तिष्क में रहता है। व्यापार से अच्छा लाभ कमा पाते हैं। इनके सन्तान कम होती है। रूखापन इनके स्वभाव में रहता है।

तुलाराशि– तुलाराशि पुरुष संज्ञक, चरराशि, सम स्थिति में उदय, पश्चिम दिशा में उदय, वायु प्रकृति, चिक्कणापन आधिक्य, कम बातचीत करने वाली, कम सन्तति वाली, शूद्रवर्णीय, उग्र प्रकृति युक्त, दिवाबली, द्विपद्युक्त समान राशि है। यथा–

पुमांश्चरचित–समोदयोष्णः प्रत्यङ्मरुत–स्निग्ध–रवोन्वन्यः।
स्वल्पप्रजासंगत–शूद्र उग्रस्तुलो द्युवीर्यो द्विपदः समानः।।

अर्थात् तुला राशि वाले जातकों का प्राकृतिक स्वभाव इस प्रकार का होता है। यह जातक पुरुषत्व युक्त, स्थिरता की न्यूनता, समान रूप से रहने वाले उष्णता, क्रोध आदि यदा कदा रहता है। पश्चिम दिशा बलवान् राशि, प्रेमयुक्त, चिक्कण, स्वभावयुक्त अर्थात् ऐसे जातक मेल–जोल बढाने में अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हैं। कम सन्तान वाले, छोटे कार्यों के प्रति सेवा भाव इत्यादि समस्त कार्यों में इनकी मानसिक वृत्ति रहती है। उग्रता यदा कदा इनमें रहती है। दिन में ये पूर्ण कायिक, वाचिक एवं

मानसिक बल का प्रयोग करते है। दो पैरों वाली समान राशि है। अर्थात् दो नावों पर सवार रहते हैं ऐसे जातक।

वृश्चिक राशि– वृश्चिक राशि स्थिर संज्ञक राशि है, श्वेतवर्ण, स्त्रीराशि, जलचर, उत्तरदिशा की स्वामिनी, रात्रि बली, कम बोलने वाली, वातयुक्त और कफवाली, समान उदय वाली, जलचर राशि अधिक सन्तति युक्त, शुभ राशि, स्निग्ध प्रकृति, ब्राह्मण वर्ण की वृश्चिक राशि है। यथा–

स्थिरः सितः स्त्री जलमुत्तरेशो निशारवोना बहुपात् कफी च।
समोदयो वारिचरोऽतिसंगप्रजः शुभः स्निग्धतनुर्द्विजोऽलिः।।

अर्थात् वृश्चिक राशि के जातक स्थिर प्रकृति वाले, श्वेत वर्णीय, स्त्रीत्व गुणों वाले, जल में कार्य करने वाले, जल में मन को लगाए रखना, उत्तर दिशा इनकी जीवनदायिनी, रात्रि में कम वार्ता करने वाले, वात और कफ रोगी, समान उदय वाली जलचर और अधिक संन्तानों वाली, शुभता लिए ब्राह्मण वर्ण अर्थात् ईश्वर में विश्वास रखने वाले, प्रेम व्यवहार में वार्तालाप में सम्बन्ध बनाने शीघ्रता वाले रहते हैं।

धनु राशि– स्वर्णकान्ति युक्त, पर्वतचारी, समोदयी, अतिशब्दचारी, दिवावली, प्राक् दिशा में स्थित, कठोर रुक्ष, पीत वर्ण, रजो गुण प्रधान, पित्त प्रकृति, कम सन्तति, द्विस्वभाव, द्विपद राशि, अग्नि के समान उग्र राशि है। यथा–

न स्वर्णभाः शैल–समोदयोऽतिशब्दो दिनं प्राग दृढरुक्ष–पीतः।
रजोष्ण–पित्तो धनुरल्प–सूतिसंगो द्विमूर्तिद्विपदोऽग्निरुग्रः।।

अर्थात् धनुराशि के जातकों के बाह्य मस्तक एवं शारीरिक कान्ति स्वर्ण के समान पीलापन लिए हुए सौन्दर्य बना रहता है। वनों, पहाड़ों, घाटियों में भ्रमण करना इनको अच्छा लगता है। यह समान रहने वाले जातक होते है परन्तु उँचे स्वर में वार्ता करना इनकी आदत में रहता है। दिन में अपने समस्त कामों को सम्पन्न करने में विश्वास रखने वाले, पूर्व दिशा इनका कार्य क्षेत्र बलिष्ठ, रुक्ष प्रकृति, रजोगुणी होते हैं। अर्थात् कामी इसके साथ पित्त की अधिकता, कम सन्तान पैदा करने वाले, दो स्वभाव वाले जातक, दो दो स्थानों में मानसिक वृत्ति को लगाए हुए, क्रोधी और उग्र प्रकृति के जातक होते हैं।

मकरराशि–मकरराशि चर संज्ञक, अर्ध भूमिचारी, आधे स्वर युक्त, दक्षिण दिशा स्वामिनी, स्त्री संज्ञक, पिंगल वर्ण, रुक्ष, स्वच्छ भूमिचारी, शीत प्रकृति युक्त, कम सन्तति, वायु प्रकृति, रात्रि के प्रारम्भ, चतुपाद, विषमोदयी, वैश्य राशि है। यथा–

मृगश्चरः क्षमाऽर्धरवो यमाशा–स्त्री–पिंग–रुक्षः शुभभूमि शीतः।
स्वल्पप्रजासंगसमीर–रात्रिरादौ–चतुष्पाद विषमोदयो विट।।

अर्थात् मकर राशि के जातक चर प्रकृति वाले, इनकी भूमि और आकाश दोनों में मिला जुला कार्य होता है। कम बोलने वाले, ये जातक दक्षिण दिशा में निवास करना, कार्य करना, या दक्षिण दिशा से इनका सम्बन्ध रहना होता है। स्त्री प्रकृति के आचार विचारों एवं मानसिक कार्यों से युक्त होते है। पिंगल वर्ण होता है, साफ–सुथरे सुन्दर भूमि भवन में इनका निवास होता है। इनकी प्रवृत्ति शीतलता, शान्त रहती है। ये सन्तान पैदा करने में विश्वास करते हैं। वात प्रकृति या वायु के रोगों अथवा वायु प्रकृति वाले होते है। सायं काल में इनके मन में द्विमानसिकता रहती है। ऐसे जातक विषम परिस्थिति में भी अपने कार्य को सम्पन्न करने में सक्षम रहते हैं। इनकी बुद्धि व्यापारिक होती है।

कुम्भ राशि– कुम्भ राशि पद रहित, दिवस मध्य में बली, स्थिर संज्ञक, कर्बुर वर्ण, वनचारी, वायुप्रकृति, स्निग्ध, उष्ण प्रकृति, अर्धस्वर, समान धातु, शूद्रवर्ण, पश्चिमदिशा की स्वामिनी, विषमराशि, उग्र स्वभाव युक्त होती हैं। यथा–

कुम्भोऽपदी न दिनमध्य संगप्रसू स्थिरः कर्बुर–वन्यः वायुः।
स्निग्धोष्ण खण्डस्वर तुल्यधातु शूद्रः प्रतीची विषमोदयोग्रः।।

कुम्भराशि वाले जातक स्थिर प्रकृति के होते हैं। यह किसी एक स्थान पर स्थिर रहकर कार्य करना इनके स्वभाव में रहता है। दिवावली, होने के कारण ये जातक दिवस में भी कामासक्त हो जाते हैं। कर्बुर वर्ण युक्त होने के फलस्वरूप इनको धूम्रवर्ण या आकाशीय मेघाछन्न के समान वर्ण प्रिय होता है। वन्य प्रदेश एवं पर्यावरण प्रेमी होते हैं। वायु प्रकृति के लोग होते हैं। परस्पर मेल–जोल में विश्वास रखने वाले, यदा कदा अपनों के साथ क्रोधपूर्ण व्यवहार, कम बोलने वाले, वात–पित्त–कफ त्रिधातु इनकी सम रहती है, सेवा भाव इनके भाव मन में कूट–कूट के भरा रहता है। ये जातक पश्चिम दिशा में कार्य करना, एवं पश्चिम दिशा में भ्रमण करना या पश्चिम दिशा में गृह निर्माण करना इनके स्वभाव में रहता है। कभी विकट परिस्थितियों में इन जातकों में उग्रता भी देखी जाती है।

मीनराशि–मीनराशि पद रहित राशि, कफप्रकृति, जलचरराशि, रात्रिचारी, शब्दरहित, वभ्रूवर्ण, द्विस्वभाव, स्निग्ध, अतिकामी, ब्राह्मणवर्ण, उत्तरदिशा वासिनी, विषमोदयी राशि है। यथा–

मीनोऽपदः स्त्री–कफ–वारि–रात्रि–निःशब्द–वभ्रूर्द्वितनुर्जलस्थः।
स्निग्धोऽतिसंगप्रसवोऽपि विप्रः शुभोत्तराशेड् विषमोदयश्च।।

अर्थात् मीन राशि वाले जातक किसी जगह स्थायी नहीं होते हैं। यह स्त्री स्वभाव वाली राशि होने के फलस्वरूप ऐसे जातकों की प्रकृति स्त्रियों से मेल खाती है। जलचर राशि होने के कारण इन जातकों को जल विहार, नौका विहार, झरने, नदियाँ, सागर आदि पसंदीदा स्थान होते हैं। इन जातकों में त्रिदोषों में कफ की प्रधानता रहती है। ये अल्पभाषी होते हैं। और साथ में द्विस्वभाव युक्त भी होते हैं। इनमें परस्पर प्रेमालाप भी विशेष गुण होता है। ये सन्तान पैदा करने में विश्वास रखते हैं। ये कामी प्रकृति के होते हैं। ये वर्ण से व्यवहार से चिन्तन से ब्राह्मण के नियमों का पालन करते होते हैं। विकट परिस्थितियों में भी अडिग रहते हैं। इनका भाग्योदय उत्तर दिशा में होता है।

3.2.4 विभिन्न मतानुसार ग्रह स्वरूप

भारतीय ज्योतिष के अठारह आचार्य हुए हैं जिसमें आचार्य वराहमिहिर का विशेष स्थान है। आचार्य वराह के अनुसार ग्रहों का स्वरूप कुछ इस प्रकार से है।

सूर्य– आचार्य वराहमिहिरानुसार सूर्य ग्रहों में राजा है। खगोल का प्रमुख ग्रह है। सूर्य का अपना प्रभुत्व है। सूर्य के नेत्र शहद के सदृश सूर्य का आकार प्रकार, शारीरिक संरचना, चतुरस्राकार है। अर्थात् मध्यम कद काठी न अधिक ऊँचा, न अधिक मोटा, पित्त प्रकृति युक्त अर्थात् क्रूर स्वभाव युक्त, और कम केश उनके शरीर पर हैं। सूर्य मेष में भ्रमण करता हुआ जब 10^0 अंश पर पहुँचता है तो परमोच्च कहलाता, सूर्य के मंगल, चन्द्र और गुरुग्रह परम मित्र हैं। और बुध ग्रह सम है। इसी प्रकार से सूर्य से प्रभावित जातक सूर्य के समान तेजस्वी, ओजस्वी, पित्ताधिक्य वशात् पित्त के रोगी, क्रोधी एवं स्वाभिमानी प्रकृति के होते हैं। ऐसे जातक राजा की तरह रहना पसंद करते हैं। साथ ही साथ अपने फैसले लेने में हिचकिचाते नहीं है। यथा–

मधुपिंगलदृक्चतुरस्रतनु पित्तप्रकृतिस्सवितात्पकचः।

चन्द्रमा– चन्द्रमा ग्रह गोल आकृति अर्थात् गोलाकार आकृति और इसका व्यवहार में उपयोग करेंगे तो चन्द्र प्रभावित जातक मध्यमाकार, छोटा शरीर, वात एवं कफ का आधिक्य, बहुत बुद्धिमान्, मिष्ठान प्रिय, सुन्दर, दर्शनीय, सुचारु अर्थात् सुन्दर देह को धारण किए हुए, दर्शनीय नेत्रों से युक्त चन्द्र ग्रह है। भौतिक संसार में चन्द्र ग्रह का बहुत अहं भूमिका है। चूँकि चन्द्र ग्रह की उत्पत्ति का आधार विराट पुरुष का मन है। इसलिए वेद कहता है '' **चन्द्रमा मनसो जातः**'' अतः शरीर में मन का नेतृत्त्व चन्द्रमा का है। ऐसे में चन्द्रमा से प्रभावित जातक यदि चन्द्रमा वृष राशिस्थ, कक्र राशिस्थ एवं वृश्चिक राशि को छोड़कर अन्य राशियों में स्थित हो तो जातक उपर्युक्त गुण–दोष–धर्म से युक्त होता हुआ मन से परिपक्व, सुन्दर, दर्शनीय लेकिन शत्रुराशिस्थ होने पर जातक वात रोग एवं कफ आदि रोगों से पीड़ित रहता है। यथा–

तनुवृत्ततनुर्बहुवातकफः प्राज्ञश्च शशी मृदुवाक् शुभदृक्।''

मंगल– मंगल ग्रह ग्रहों में सेनापति एवं युवराज है। यह क्रूर पाप ग्रहों की श्रेणी में आता है। भूभाग का एक खण्ड खगोल में अलग होने पर इसे भूसुत, भूमिपुत्र, अंगारक आदि नामों से जाना जाता है। यह युवा ग्रह है, क्रूर दृष्टि में अत्यधिक उदारता, दानी ग्रह, पित्त प्रकृति युक्त, चंचल स्वभाव और शारीरिक संरचना में शरीर का मध्यम भाग अति कृष्ण दुर्बल है। मंगल की भौतिक जगत में भूमिका कुछ इस प्रकार से है यह जिन जातकों के जन्मांग चक्रों में स्वराशिस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चराशिस्थ स्थित हो, वह जातक मंगल के समान दर्शनीय युवक, चौड़ी छाती, मध्यभाग शरीर की कृषता लिए हुए अर्थात् गठीला शरीर और पित्ताधिक्य से प्रभावित रहने के कारण पित्त के रोगी एवं क्रोधी होते हैं। यथा–

''क्रूरदृक् तरुणमूर्तिरदारः पैत्तिकः सुचपलः कृशमध्यः।''

बुध– बुधग्रह वाणी का कारण ग्रह है। इसके साथ साथ भौतिक जीवन में विद्या, वाक्चातुर्य, काव्य–लेखन, लेखक, अध्यापक, आचार्य आदि का सहयोगी ग्रह है। मिथुन और कन्या में स्वराशिस्थ होता है। कन्या राशि में उच्च और मीन राशि नीच राशि है। शास्त्रीय स्वरूप में बुध श्रेष्ठ अर्थात् स्वराशिस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चराशिस्थ, मूलत्रिकोणस्थ होने पर वाक्चातुर्य युक्त, बहुभाषी, सदाहास्य प्रिय, वात, पित्त–कफ तीनों गुणों से युक्त बुध ग्रह होता है। यथा–

श्लिष्टवाक्सततहास्यरुचिर्ज्ञः पित्तमारुतकफप्रकृतिश्च।''

बृहस्पति– गुरुत्वाकर्षण युक्त गुरुग्रह सभी ग्रहों, नक्षत्रों एवं देवताओं के गुरु कहलाए जाते हैं। आध्यात्म के क्षेत्र में अहम् भूमिका प्रत्येक विषय को आध्यात्म के साथ सम्बन्ध स्थापित करते हुए धर्म को आधार मानकर प्रत्येक कार्य के प्रति अग्रसर रहते हैं। गुरु और धनुराशियाँ स्वराशिस्थ, कक्रराशिस्थ होने पर परमोच्च और मकर राशिस्थ में परम नीच अवस्था में रहते हैं। स्वमित्र राशिस्थ, स्वचरराशिस्थ, स्वनवांशस्थ होने पर जातक को धर्मात्मा, राजा, नेता, प्रोफेसर, समाज–सुधारक, देवालय पूजक इत्यादि समस्त धर्माधारित कार्यों में संलग्न रहते हैं। शास्त्रीय स्वरूप गुरु का शरीर स्थूलकाय है, केश पिंगल वर्ण के हैं, श्रेष्ठ बुद्धियुक्त, और कफ प्रकृति कारक गुरुग्रह का स्वरूप है। यथा–

'बृहद्तनुः पिंगलमूर्धजेक्षणो बृहस्पतिः श्रेष्ठमतिः कफात्मकः।'

शुक्रग्रह– शुभग्रह भौतिक संसाधनों का प्रदाता, सुख–संपत्ति, भूमि, भवन, समाज में भौतिक प्रतिष्ठा का कारक ग्रह, वृष और तुला का स्वामी, मीन राशि में उच्चस्थ और

कन्या राशि नीचस्थ होता है। जातक की जन्मकुण्डली में शुक्र की स्थिति स्वराशिस्थ, स्वोच्चस्थ, स्वनवांशस्थ, होगी तो श्रेष्ठ फलप्रदाता होगा। और इसके विपरीत नीच राशिस्थ, शत्रुराशिस्थ, शत्रुनवांशस्थ राशि स्थिति वशात् भौतिक सुख–संसाधनों से वंचित होना पड़ेगा। शास्त्रीय स्वरूप शुक्र ग्रह का कुछ इस प्रकार से है। शुक्र का स्वभाव सदा सुखमय जीवन, सदा आनन्द दायक, दर्शनीय शरीर, सुन्दर नेत्र, कफ और वायु दोनों प्रकार के तत्त्व से युक्त, टेढे अर्थात् घुंघराले बालों से युक्त शुक्रग्रह की स्थिति है। सामान्य जीवन में भी कुछ इस प्रकार की स्थिति ही शुक्र से प्रभावित जातक की रहती है। यथा–

''भृगुः सुखी कान्तवपुः सुलोचनः कफानिलात्मासितवक्रमूर्धजः।।''

शनिग्रह–शनिग्रह बृहदाकार स्वरूप को धारण करने वाला, ग्रहों का सेवक तथा सूर्यपुत्र है। आकाश मण्डल में सबसे दूर स्थित होने के कारण एव बृहदाकार कक्षावशात् लगभग $2\frac{1}{2}$ वर्ष में एकराशि में भ्रमण करते हैं। मन्द, शनैश्चर, शनि इत्यादि विभिन्न नामों से प्रख्यात् आज के आधुनिक युग में सर्वपूजनीय ग्रहों के रूप में स्थित, शास्त्रों में दुःख की संज्ञा से भी जाना जाने वाला ग्रह है। वायुकारक, वायु से सम्बन्धित रोगों को देने वाला मन्दसंज्ञक ग्रह है। मकर और कुम्भ राशियों में स्वराशिस्थ, तुलाराशि उच्चस्थ और मेष राशि में नीचस्थ होते हैं। न्याय और धर्म का प्रतीक ग्रह, यम की संज्ञा के साथ जाना जाने वाला ग्रह, काल का वाचक, शनि की साढेसाती और ढैय्या का कारक ग्रह है। शास्त्रीय स्वरूप कुछ इस प्रकार से है। यथा– मन्दसंज्ञक धीरे धीरे कार्य करने का स्वभाव, कर्म में आलस्य, कपिल वर्णो के नेत्र, शरीर लम्बा, दांतों में कठोरता, स्थूल केश वाला और वात प्रकृति प्रधान है।

जातकों में नकारात्मकता की स्थितिवशात् शनि ग्रह से दुःख, क्लेश, यातना, पीड़ा आदि के प्रकोप से पीड़ित रहते हैं। और सकारात्मकता की स्थिति में न्यायकर्त्ता, समाज–सुधारक, इण्डस्ट्रीलिस्ट एवं समाज में अच्छे प्रतिष्ठित पद पर आसीनस्थ होगें। यथा–

'मन्दोऽलसः कपिलदृक् कृशदीर्घगात्रा स्थूलद्विजः परुषरोमकचोऽनिलात्मा।'

3.3 सारांश

मित्र, इस खण्ड में आपेन राशियों एवं ग्रहों की आकाशीय संरचना उनकी प्रकृति आकार प्रकार, वर्ण, त्रिदोष, बल, उच्च–नीच–मूलत्रिकोण–स्वराशि, सम्बन्ध मुखकृति निवास उदय आदि विषयों के बारे में विस्तार से अध्ययन किया। आपने यह भी जानना कि जैसी प्रकृति, स्वरूप आदि राशियों या ग्रहों के हैं उसी प्रकृति एवं स्वरूप वाला जातक होता है। जिस काल, जिस दिशा में ग्रह या राशि की बलवत है उसी काल एवं दिशा में तद्राशि ग्रह से संचालित जातक भी स्वाभाविक रूप से बल प्रापत करता है। जातक की स्थिरता चंचलता, स्त्री प्ररुष प्रकृति संतान आदि पर भी उस राशि या ब्रह का सम्पूर्ण प्रभाव होता है।

3.4 शब्दावली

प्रवक्ष्यामि = कहूँगा।

कालज्ञानम् = समय के अर्थात् ज्योतिषशास्त्र ज्ञान को।

स्कन्ध = भाग

अनेकभेदविततम् = अनेक भेदों–उपभेदों से विस्तृत

अधिष्ठितम् = कहे गए हैं।

अणोरणीयान् = छोटे से भी छोटा अर्थात् सूक्ष्म।

तेजस्सहः = तेज को सहन करने में क्षमता।

मदंशः = मेरा अंश रूपी पुरुष।

निश्शेषं = आदि से अन्त तक या आद्योपान्त।

सुदृढः = गठीला, मज़बूत शारीरिक बनावट।

रक्तोष्ण = लालिमा और उष्णता युक्त।

अतिरवो = अत्यधिक शब्दचारी या वाचाल।

समीरः = वायु या वात दोष के लिए पर्यायवाची शब्द।

याम्यट = दक्षिण दिशा कर स्वामी

चतुष्पाद् = चौपाया या चार पैर वाला अथवा विभिन्न प्रकृति युक्त।

मध्यप्रजासंग = संख्या में सन्तति मध्यम वाला।

कुलीरः = कक्र राशि के लिए प्रयुक्त शब्द।

अपदः = पद रहित या पांव रहित।

3.5 बोध प्रश्न

1) राशि किसे कहते हैं? विस्तार से विवेचना करें।
2) सामान्य जीवन में राशियों का प्रभाव केवल मानवों पर पड़ता है अथवा समस्त प्रकृति पर सिद्ध करें।
3) राशियों और ग्रहों का परस्पर सम्बन्ध क्या है ? स्पष्ट करें।
4) ग्रह किसे कहते हैं? भौतिक जीवन में उनकी उपयोगिता पर प्रकाश डालें।
5) मेषादि राशियों के स्वरूप का मानव के साथ सम्बन्ध स्थापित करते हुए प्रकाश डालें।

3.6 उपयोगी पुस्तकें

1. भारतीय ज्योतिष, नेमिचन्द्रशास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, प्रकाशन नई दिल्ली।
2. भारतीय कुण्डली विज्ञान, मीठालाल हिम्मतराम ओझा, देवर्षि प्रकाशन वाराणसी, प्रकाशन वर्ष–2008
3. वृहत्पारासरहोराशास्त्रम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, टीकाकार, पद्मनाभशर्मा, प्रकाशन वर्ष 2012
4. जातकपारिजात, वैद्यनाथ, व्याख्याकार डॉ. हरिशंकर पाठक, प्रकाशन वर्ष 2012, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।
5. भारतीय ज्योतिष विज्ञान, डॉ. सुरकान्त झा, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
6. लघुपारासरी सिद्धान्त भाष्य, डॉ रत्नलाल, सत्यम् पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
7. बृहद्वकहोडाचक्रम्, डॉ. रत्नलाल, सत्यम् पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
8. जातकालंकार, सद्मनसेश्वरी व्याख्या सहित, डॉ. रत्नलाल, सत्यम् पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

इकाई 4 नक्षत्र राशि एवं ग्रहों का पारस्परिक सम्बन्ध

संरचना

4.0 उद्‌देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप :

- ज्योतिष शास्त्र की आवश्यकता का निरूपण कर सकेंगे।
- ज्योतिष शास्त्र के महत्त्व को बता सकेंगे।
- नक्षत्रों के खगोलीय परिचय दे सकेंगे।
- ग्रहों एवं राशियों के स्वरूप का वर्णन की सकेंगे।
- ग्रहों एवं राशियों के पारस्परिक सम्बन्ध की व्याख्या कर सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

प्रस्तावित विषय खगोल विज्ञान से सम्बन्धित है। खगोल में असंख्य पिण्ड प्रवह नामक वायु के वेग से भ्रमण कर रहे हैं। लेकिन असंख्य पिण्ड दृश्यमान सूर्य, चन्द्रमादि ग्रहों से कहीं अत्यधिक विशाल हैं परन्तु ये विशाल होते हुए भी हमारी पृथ्वी की परिधि से बाहर होने के फलस्वरूप भूवासियों एव यहाँ की वनस्पति को प्रभावित करने में असमर्थ हैं। इसलिए उन असंख्य पिण्डों का कोई प्रयोजन ज्योतिष में नहीं है किन्तु अपने प्रभाव के द्वारा वे पिण्ड जो प्रत्येक जीव–जन्तु एवं प्राणी तथा धरातल पर पनपने वाले वनस्पति हैं ऐसे चल पण्डि ग्रह कहलाते हैं। इन ग्रहों का राशियों का स्थान खगोल में कहाँ पर है, उनकी स्थिति क्या है? हम इन पिण्डों से किस प्रकार से प्रभावित होते हैं? इन ग्रहों के अलावा प्रत्येक नक्षत्र का अलग–अलग प्रभाव तथा प्रभावित होने वाले प्रत्येक जीव की बाह्य एवं आन्तरिक संरचना अलग–अलग होने का क्या कारण है? उपर्युक्त समस्त प्रश्नों का समाधान इस इकाई में प्राप्त करेंगें।

4.2 होरा का स्वरूप एवं ज्योतिष शास्त्रीय सिद्धान्त का आधार

ज्योतिष मानव जीवन में प्रतिक्षण प्रतिकार्य में लक्षित होता है। **''यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे''** की वैदिक उक्ति के अनुसार मानव समाज को प्रत्येक प्रतिक्षण यत्र–तत्र–सर्वत्र ज्योतिष का प्रत्यक्ष दिग्दर्शन होता है। ज्योतिष शास्त्र के अभाव में किसी भी क्षण, किसी भी शुभाशुभ कार्य की सम्पन्नता असम्भव होगी। ज्योतिष को वेद के प्रधान अंगों में गणना की गई है। यथा–

शब्दशास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषी श्रोत्रमुक्क्तं निरुक्तं च कल्पःकरौ।
यातु शिक्षास्य वेदस्य सा नासिका पादपद्मद्वयं छन्द आद्यैर्बुधैः।।

प्राच्य मनीषियों ने ज्योतिर्पिण्डों के प्रभाव को बहुत पहले ही जान लिया था। मनीषियों के अथक प्रयासवश् मानव कल्याण की भावना से चराचर को प्रभावित करने वाले पिण्डों और उनके प्रभावों के परिणामात्मक शोध पूर्ण सुस्थिर विशिष्ट ज्ञान त्रिस्कन्धात्मक ज्योतिषशास्त्र के रूप में प्रकट हुआ। वस्तुतः ज्योतिष ज्ञान एक विज्ञान है। यह ज्ञान वेदों में जिस तरह अपने प्रयोजन के अधीन प्रस्तुत हुआ है, आज भी वह प्रयोजन उसी ज्ञान से पूर्ण होता दिख रहा है। ज्योतिष शास्त्र सिद्धान्तों के आधारभूत तत्वों में प्रमुख सूर्य है। सौरमण्डल या सौर परिवार का अध्ययन और प्रभावांकन ज्योतिषशास्त्र का प्रतिपाद्य है। यह शास्त्र अदृष्ट–व्याख्यान के प्रसंग में पूर्व जन्मादि का विवेचन कर लोक–परलोक में एक स्थापित सम्बन्ध को उद्घाटित करने का प्रयास करता है। आद्यन्तहीन सृष्टि के मर्म को समझना या उसका ज्ञान करना, उसके समीप पहुँचना, ज्योतिषशास्त्र का उद्देश्य है, जो गुप्त व सुप्त रहकर सृष्टि का संचालन कर रहा है। ज्योतिषशास्त्र प्रत्यक्षानुभूति कराने वाला व्यवहारशास्त्र है। भूत–वर्तमान–भविष्यत् की प्रत्यक्षानुभूति परक कथन करना इसका उद्देश्य है। ज्योतिष मूलतः अध्यात्मशास्त्र के रूप में हमारे समक्ष प्रकट होता है। यह प्राणियों की समस्या निष्कृति का मार्ग, ग्रह प्रभावों के मूल्यांकन द्वारा प्रशस्त कर पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष) की प्राप्ति में सहयोग प्रदान करता है। ज्योतिषशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में यह ध्यानार्ह है कि उसके कथनों की सत्यता कोई इन्द्रजालिक चमत्कार नहीं, बल्कि निःसर्गगतः वास्तविक घटनाओं का उद्घाटन है। कथन कर्त्ता की योग्यता वश कभी कुछ कथन सत्य और कभी कुछ कथन असत्य भी हो सकते हैं। जब असत्य होता है तो उसका पुनरीक्षण आवश्यक है। ज्योतिषशास्त्रीय कथनों के रूप में किया गया फलादेश निश्चय ही वक्ता की अन्तर्ज्ञानात्मिका शक्ति से प्रभावित होता है। होरास्कन्ध को ही होराशास्त्र या जातकशास्त्रादि कहा जाता है। प्राणीमात्र के उत्पत्ति समय के आधार पर उसके जीवन के शुभाशुभ घटनाओं का वाचन करना जातकशास्त्र का प्रतिपाद्य विषय है। लेकिन यहाँ उसके होराशास्त्र नाम की सार्थकता कैसे समझी जा सकती है इसका उत्तर यह है कि– एक अहोरात्र के अन्तर्वर्ती काल में जो द्वादश राशियों का उदय द्वादश लग्न के रूप में होता है, उन्हीं लग्नों के आधार पर जातकशास्त्र प्राणी के शुभाशुभ फल का वाचन करता है। उस लग्न का अपर नाम 'होरा' है। अतः जातकशास्त्र को होराशास्त्र कहा जाता है। दूसरी बात यह भी कही जाती है कि– 'अहोरात्र' शब्द के पूर्व वर्ण (अ) तथा परवर्ण (त्र) का लोप करने से स्वतः होराशब्द निष्पन्न हो जाता है। अतः अहोरात्र अन्तर्वर्ती काल में उदित होने वाली राशियों को होरा कहा जाने लगा। 'सारावली' ग्रन्थ के द्वितीय अध्याय में इस प्रकार कहा गया है –

आद्यन्तवर्णलोपाद् होराशास्त्रं भवत्यहोरात्रात्।
तत्प्रतिबद्धश्चायं ग्रह–भगणश्चिन्तयते यस्मात्।।

वारहमिहिर ने अपने 'बृहज्जातक' के प्रथम अध्याय में अहोराल को इस प्रकार व्यक्त किया है, उसके साथ यह भी कहा है कि पूर्व जन्मार्जित कर्म के फलों को भी वह स्पष्टतया बताता है।

होरेत्यहोरात्र विकल्पमेके वांछन्ति पूर्वापरवर्णलोपात्।

कर्मार्जितं पूर्वभवे सदादि यत्तस्य पंक्तिं समभिव्यनक्ति।।

यह होराशास्त्र मनुष्यों को धनादि अर्जन करने में सहायक, विपत्तिरूप समुद्र में नौका और यात्रा के समय मन्त्री सिद्ध होता है। जैसा कि 'सारावली' में कहा गया है –

अर्थार्जने सहायः पुरुषाणामपदार्णवे पोतः।

यात्रासमये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः।।

यह प्राणियों के पूर्व जन्मार्जित अच्छे बुरे कर्मों को प्रारब्धादि कर्मफल के रूप में प्रदान करता है। जिस प्रकार अंधकार में पड़ी वस्तु का ज्ञान दीपक के प्रकाश से सम्भव होता है। उसी प्रकार प्राणी के जीवन में आने वाले शुभ वा अशुभ काल या क्षण का ज्ञान होरा शास्त्र से होता है। जैसा लघुजातक में कहा गया है–

यदुपचितमन्यजन्मनि शुभाऽशुभं तस्य कर्मणः पक्तिम्।

व्यंजयति शास्त्रमेतत् तमसि द्रव्याणि दीप इवं

इसी प्रकार सारावली में भी कहा गया है कि प्राणी मात्र के ललाट पर विधाता ने जो कुछ शुभाशुभ सुख–दुःख लिख दिया है, उसे होराशास्त्र को जानने वाले दैवज्ञ अपने निर्मल दृष्टि से स्पष्टतः पढ़ लेते हैं। यथा–

विधात्रा लिखिता याऽसौ ललाटेऽक्षरमालिका।

दैवज्ञस्तां पठेद् व्यक्तं होरानिर्मलचक्षुषा।।

अन्यत्र शम्भुहोराप्रकाश में भी–"वर्णावली तु लिखिता भुवि मानवाना धात्रा ललाटपटले किल् दैववित्ताम्।।

मनुस्मृति के "**वेदोऽखिलो कर्ममूलम्**' वचनस्वरवशात् यह तो स्पष्ट ही है कि भारतीय वैदिक दर्शन में कर्मवाद अर्थात् पुनर्जन्मवाद का अपना एक विशिष्ट स्थान है। इसे इस प्रकार भी कहने में किसी प्रकार की बाधा नहीं आनी चाहिए कि '**कर्मवाद–पुनर्जन्मवाद**' वैदिकदर्शन का मूलभूत आधार है। इसके आधार पर महर्षियों और मनीषियों ने इस सिद्धान्त के प्रतिपादन में कहा है कि आत्मा ही एक मात्र कर्त्ता है अर्थात् मन–बुद्धि आदि द्वारा सम्पादित कर्म का कर्त्ता एक आत्मा ही है। अतः कहा जाता है– '**आत्मा एव कर्त्ताऽस्ति**'। अस्तु! वैदिक दर्शन के अनुसार जन्म–जन्मान्तरों में निष्पादित किए गए कर्मों की तीन श्रेणी हैं– 1.संचित, 2.प्रारब्ध, और क्रियमाण। इन तीन प्रकार के कर्मों के फलों को जानने के लिए ज्योतिषशास्त्र के प्रवर्तकों पराशर, गर्ग, जैमिनी, नारद इत्यादि ने तीन प्रविधियाँ आविष्कृत और सुविकसित की। यथा संचित कर्म फल जानने के लिए योगपद्धति, प्रारब्ध कर्म फलज्ञान के लिए दशा पद्धति और क्रियमाण कर्म फल ज्ञानार्थ गोचरपद्धति। इस प्रकार यह 'ज्योतिष (होरा) शास्त्र कुण्डली के ग्रह स्थितिवश बने ग्रहयोगों से संचित कर्म फलों का दशान्तर्दशादि से प्रारब्ध (कर्म) फलों का और गोचर (दैनन्दिनी ग्रह संचार) वश क्रियमाण कर्म फलों का विचार करता है।

संचित व प्रारब्ध कर्मों के फल को जातक अपनी वर्तमान जीवन नौका में बैठकर क्रियमाण कर्मरूपी पतवार के द्वारा संशोधन व परिवर्द्धन करते हुए उपभोग किया करते

हैं। अतएव कुण्डली से जातक के भाग्य का ज्ञान किया जाता है। सारांश में इसे इस तरह भी कहा जा सकता है कि क्रियमाण कर्मों के बल से पूर्व संचित अदृष्ट में न्यूनाधिक करने की सम्भावना भी प्राप्त होती रहती है। प्रकारान्त से इसका संकेत स्वयं भगवान करते हैं –

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।।

अर्थात् मनुष्य को चाहिए कि वह अपना उद्धार आप ही करे, निराश होकर वह अपनी अवन्नति स्वयं न करे, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य अपने कर्मवश स्वयं अपना बन्धु या हितैषी या मित्र है और स्वकर्मवश ही स्वयं अपना शत्रु या नाश करने वाला है।

इस प्रकार उपरोक्त के अनुशीलन से यह मानना पड़ता है कि मनुष्य को कुण्डली के फलाफल का विचार करते हुए अपने क्रियमाण कर्म से सम्बन्धित अपने नियोजित पुरुषार्थ का यथार्थपरक अधिकतर दोहन या शोषण करना चाहिए, जो ज्योतिष के मार्गदर्शन से निश्चय ही सम्भव है।

ज्योतिषशास्त्र की आवश्यकता और महत्त्व–ज्योतिष की प्रशंसा, उसका महत्त्व व विशेषताओं के विषय में ऋषि मुनियों व आचार्यों का क्या अभिमत है, उसे प्रदर्शित किया जाता है।

नारद के अनुसार ब्रह्मा जी ने इस शास्त्र की रचना इसलिए की कि समय पर श्रौतस्मार्त–कर्म का सम्पादन सामान्य जन सविधि करने में सक्षम हो सके और उनका सब प्रकार से कल्याण भी हो। जैसे–

विनैतदखिलं श्रौतस्मार्त कर्म न सिद्धचति।
तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा रचितं पुरा।।

ज्योतिष काल का ज्ञापक अभिव्यन्जक शास्त्र है। काल के शुभाशुभ प्रकृति का बोधक है यह ज्योतिष। कर्म व काल का अविनाभाव सम्बन्ध है। कई भी कार्य चाहे वैदिक यज्ञ यागादि अनुष्ठान हो अथवा नित्य नैतिकि–कर्म सभी की सफलता या विफलता काल के ही अधीन है। अतः कालविधायक यह शास्त्र सभी कार्यों के अनुष्ठान में परमावश्यक है। ज्योतिष के इसी महत्त्व को रेखांकित करते हुए आस्कराचार्य कहते हैं–

'वेद' के लिए ज्योतिषशास्त्र की आवश्यकता व महत्त्व को स्पष्ट करने हेतु भास्कराचार्य की भावना को इस प्रकार प्रदर्शित किया जाता है। जैसे–

वेदास्तावद्यज्ञकर्मप्रवृत्ता यज्ञाः प्रोक्तास्ते तु कालाश्रयेण।
शास्त्रादस्मात् कालबोधो यतः स्याद् वेदांगत्वं ज्योतिषस्योक्तस्मात्।

ठसी बात को भास्कर के पूर्ववर्ती वेदा ज्योतिषकर्ता लग भी कर रहे हैं।

ययज्ञिक–कर्म के अनुष्ठान हेतु ही वेद प्रवृत्त हुए हैं। ये यागादि–कर्म काल के अधीन हैं। इस काल का ज्ञान चूंकि ज्योषि शास्त्र के द्वारा होता है इसलिए ज्योतिष वेदपुरुष का अत्यावश्यक चक्षुल्प अंग है।

वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ता कालानुपूर्वा विहिताश्च यज्ञाः।
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञम्।।

अर्थात् वेद जोकि यज्ञ के ही प्रवृत्त हुए हैं वो यज्ञ कानून रूप ही अभीष्ठफल देने में प्रकृत होते हैं। अतः जो व्यक्ति इस काल विधायक ज्योषि शास्त्र को जानता है वहीं निश्चय ही वेद को जाना है। इस प्रकार यहाँ आचार्य लगध ने केवल ज्योषि की आवश्यकता को इंगति कर रहे हैं अपितु उसके महत्व का भी प्रतिपादन कर रहे हैं।

वेदचक्षुः किलेदं स्मृतं ज्योतिषं मुख्यता चांगमध्येऽस्य तेनोच्यते।
संयुतोऽपीतरैः कर्णनासादिभिश्चक्षुषांगेन हीनो न किंचित्करः ।।

यह ज्योतिष वेद के नेत्र के रूप में निश्चय ही विख्यात है। इसकी प्रधानता सभी वेदाडगों में है। क्योंकि वर्णनासिका इत्यादि से युक्त होने पर भी यदि नेत्र नहीं हैं तो व्यक्ति कुछ भी करने लायक नहीं होता है।

अब ज्योतिषशास्त्र के प्रयोजन को मनुस्मृति के अनुसार इस प्रकार व्यक्त किया जाता है। जैसे–

यज्ञाध्ययन संक्रान्ति ग्रहषोडशकर्मणाम्।
प्रयोजनं च विज्ञेयं तत्तत्कालविनिर्णयम्।।

ज्योतिष शास्त्र की इसी आवश्यकता को मनु महाराज इस प्रकार अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं कि यज्ञ अध्ययन संक्रान्ति ग्रहण इत्यादि सभी कार्यों या घटनाओं का प्रयोजन तभी पूर्ण हो सकता है जब उनके शरीर होने का स्पष्ट काल ज्ञात हो (जो ज्योतिष के द्वारा ही सम्भव है)

ज्योतिष के इसी महत्त्व को प्रशंसात्मक भावों में अभिव्यक्त करते हुए आचार्य लगध कहते हैं।–

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्ध्न्यर्वस्थितम्।।

जैसे मोर के सिर पर कलगी सुशोभित होती है, नागों के मस्तक पर मणि सुशोभित होती है ठीक उसी प्रकार वेदाडग शास्त्रों में ज्योतिष मस्तक पर सुशोभित होती है।

ज्योतिषे ग्रहणं सारं गारुड़े विषभक्षणम्।
शैवे घटवती दीक्षा कौलवे ग्रहनिग्रहौ।।

इस प्रकार ज्योतिषशास्त्र वेद काल से मानव जाति के कल्याण की भावना से ओत–प्रोत अपने स्वरूप विस्तार करता हुआ, आज अपने विविधस्वरुपों में प्रकट होकर एक आम व्यक्ति को अपने ज्ञान से लाभ पहुंचा रहा है। ज्योतिष शास्त्र का मुख्य प्रतिपाद्य विषय वेद काल से अब तक एक मात्र 'काल' ही रहा है। लगध मुनि ने वेदांग ज्यौतिष में '**कालज्ञानं प्रवक्ष्यामि**' कहकर इस बात की पुष्टि की है।

4.4 नक्षत्रों का खगोलीय परिचय

भूमण्डलस्थ समस्थ चराचर जगत में जड–चेतन के रुप में समस्त जीव–जंतु, वनस्पति तथा प्राणियों पर जो प्रभाव दृग्गोचर होता है, वह नक्षत्रों के प्रभाव के कारण ही होता है। चूंकि आकाशस्थ नक्षत्रों का कभी क्षरण नहीं होता इसलिए महर्षियों द्वारा इनको ''**नाक्षरति इति नक्षत्र**'' इस प्रकार की संज्ञा से उद्बोधित किया है। यह खगोलस्थ 360^0 अंशात्मक भचक्र या राशिचक्र अथवा नक्षत्र चक्र कह देते है तो उपर्युक्त तीनों शब्द एक ही अर्थ को द्योतित करते हैं, चूंकि इसी राशिचक्र में लघुपिण्डों के समूह एवं पृथक–पृथक स्थानवश एक आकृति हमें अपने गुण– धर्मानुसार प्रभावित करती है।

इस संसार में जो भी जड अथवा चेतन अस्तित्व में है। उसका प्रभाव प्रत्येक प्राणी के ऊपर अपने–अपने स्वभावानुसार होता है। इसलिए नक्षत्रों का ही आधार हमें राशियां प्रदान करता है, और इन्हीं नक्षत्रों के संयोगवश जातक पर इनका प्रभाव पड़ता।

इसकी वैज्ञानिकता के विषय में यह कहना उचित होगा कि नक्षत्रों का हमारे जीवन में क्या अस्तित्व है। वस्तुतः इस खगोल मेंऐसे कई असंख्य पिण्ड और असंख्य नक्षत्र लघु, गति से मध्यम एवं दीर्घाकार रूप और यह परिभ्रमण उस–उस पिण्ड के आकार–प्रकारानुसार उस पिण्ड की गति मन्द, अतिमन्द, शीघ्र एवं अतिशीघ्र होती है। उदाहरण के रूप में जैसे ज्योतिष जगत में प्रत्येक ग्रह अपनी गत्यानुसार परिभ्रमण करता है। राशि चक्र में जिसमें कोई ग्रह 30^0 अंश की राशि को सवा दो दिन में घूम लेता है और कोई 13 माह में तथा कोई ग्रह 30 माह में उस राशि को घूम लेता है, ठीक इसी प्रकार से राशियों के भ्रमण में नक्षत्र पिण्डों का ही योगदान है। नक्षत्रों के योग से ही राशि का निर्माण होता है। हम यहाँ पर पिण्डो ंकी वैज्ञानिकता के विषय में चर्चा कर रहे हैं। चूँकि हम जिन–जिन पिण्डों से प्रभावित होते हैं वही पिण्ड हमें जीवन में घटित होने वाले भूत–भविष्य एवं वर्तमान को प्रभावित करते हैं। इसके लिए हमें आधार स्वरूप में भूमण्डल है। और भूमण्डलस्थ हम लोग ही आधारवश आकाशस्थ समस्त लघु–दीर्घ पिण्डों का अवलोकन एवं विश्लेषण करके उन–उन पिण्डों द्वारा प्रदत्त गुण–धर्म से प्रभावित होते हैं। उदाहरण के लिए हमारे पास प्रत्यक्ष सिद्धता है तो सूर्य और चन्द्र दो प्रत्यक्ष ग्रह हैं। जबकि अन्य ग्रहों को देखने हेतु हमें दूरदर्शी यन्त्र की आवश्यकता होती है। आकाश में जब सूर्योदय होता है तो स्वतः ही हम अपनी अपनी दैनिक गतिविधियों में क्रियाकलापों में ही संलग्न हो जाते हैं। और सूर्य के उदय मात्र तेज के द्वारा हमारे शरीर में रक्त का संचार स्वतः ही बढ़ जाता है। और जिसके कारण हम अपने अपने क्रियाकलापों में संलग्न हो जाते हैं। और मानव तो मानव यहाँ तक कि समस्त जीव–जन्तु, जड़–चेतन स्वयं सूर्योदय के साथ ही दैनिक गतिविधियों में रत हो जाते है। और यहाँ तक कि मानव की अपेक्षा जीव–जन्तु, पशु–पक्षी कहीं अधिक प्रभाववश अपने–अपने दैनिक कार्यों में संलग्न हो जाते हैं। ठीक इसी प्रकार से सूर्यास्त के उपरान्त समस्त जड़–चेतन जीव–जन्तु, पशु–पक्षी अपने दैनिक गतिविधियों को संचालित करने के उपरान्त विश्राम या शान्ति हेतु अपने गन्तव्य स्थान की ओर परिवर्तित होकर रात्रि के कार्यों में संलग्न हो जाते हैं। चूँकि चन्द्रमा रात्रि का द्योतक है शान्ति का कारक है। इसलिए रात्रि में समस्त भूमिवासी शान्त चित्त होकर विश्राम करते है। और यही चन्द्रमा उड्डुपति के नाम से प्रसिद्ध है। अर्थात् नक्षत्रपति है, नक्षत्रों का चन्द्रमा कारक है। अश्वनी, भरणी आदि कुल 27 नक्षत्र हैं जिनका पूर्व में तो उल्लेख हो चुका है। 27 नक्षत्रों के 27 देवता हैं। उन्हीं नक्षत्रों के गुण–दोषानुसार तथा उनके देवानुसार हमारे शरीर में सकारात्मकता एवं नकारात्मकता का संचार होता है।

4.5 ग्रह एवं राशियों का परिचय तथा स्वरूप

ग्रहों के विषय में सामान्य व्यवहार में नवग्रहों का भौतिक संसार में उल्लेख प्राप्त होता है। जबकि केवल सात ग्रहो ंके ही आकाश में पिण्ड स्थित हैं। उन्हीं सात ग्रहों के द्वारा समस्त प्राणी जगत प्रभावित होता है।

सूर्यग्रह का स्वरूप– सूर्य ग्रहों में राजा एवं दिवस्कर, अत्यन्त तेजयुक्त होने के कारण भास्कर, सृष्टि के आरम्भ में आकाशस्थ प्रथम ग्रह होने पर आदित्य इत्यादि विभिन्न नामों से जाना जाने वाला एवं प्रत्येक मास में अलग–अलग नामों से जाना जाने वाला बारह मासों के अनुसार ग्रह है। सूर्य की 12 कोटियां (भेद) अथवा 12 नाम भेद हैं।बारह प्रकार के सूर्यों का होना, समस्त जड़–चेतन में चेतनता का द्योतक, वनस्पति,

औषधियों एवं पुष्पादि का द्योतक, आत्मा का कारक, हड्डियों का अधिपति, पिता का नेतृत्त्व कर्त्ता, कर्म स्थान का कारक ग्रह है। सूर्य की दृष्टि मधु के समान पीले वर्ण वाली, चौकोर शरीर, पित्त प्रकृति और कम केशों से युक्त सूर्य ग्रह है। भौतिक जगत का नियन्ता, पिता का कारक, ग्रहों के राजा होने के कारण राजकार्यों का द्योतक, समस्त भूमण्डलस्थ चराचर जड़–चेतन का नियन्ता ग्रह ऐसे जातक जो सूर्य से प्रभावित होते हैं। पित्त की अधिकता उनमें रहती है।

चन्द्रमा ग्रह स्वरूप– चन्द्रमा को स्त्रीकारक ग्रह, स्त्रियों का नेतृत्त्वकर्त्ता, वनस्पतियों का नियन्ता, जलचर राशि का अधिपति, कफ प्रकृति युक्त, अत्यन्त मृदु स्वभाव युक्त, बुद्धिमान् ग्रह है। भौतिक जगत में चन्द्रमा से प्रभावित जातक मध्यम कद–काठी वाले, कफ के रोगी, जैसे कोरोना आदि। लेकिन ऐसे जातक बुद्धि और विवेक से कार्य करते हैं। और सामाजिक जीवन में परस्पर एकता प्रेम सद्भाव को बढावा देते हैं।

सूर्य और चन्द्रमा को छोड़कर भौमादि पाँच तारा ग्रह कहलाते हैं। चूँकि ये पाँचों ग्रह स्वयं के प्रकाश से प्रकाशित न होकर सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होकर प्रतिबिम्बित प्रकाश के द्वारा समस्त प्राणियों को प्रभावित करते हैं। इसलिए इनको पंच तारा ग्रह कहा गया है। इनका स्वयं का तेज न होने के फलस्वरूप इनको प्रभावहीन कहना अनुचित होगा। इनका अपना भी अस्तित्व है परन्तु यह अस्तित्व तब प्रभावित होता है जब अमुक ग्रह सूर्य के सानिध्य में आ जाता है। जैसे मंगल सूर्य के सान्निध्य में आने पर अर्थात् अस्त अवस्था सम्प्रात होने पर भौम द्वारा शरीर में रुधिर एवं उष्णता की न्यूनता होती है। उष्णता की न्यूनता वशात् शरीर में हलचल का न होना आलस्य आना शरीर में रक्तप्रवाह वेग में अवरोध उत्पन्न स्वाभाविक है। इसलिए भले ही वह ग्रह प्रतिबिम्बित प्रकाश का उपयोग धरातलस्थ जनमानस के लिए होता हो परन्तु निस्तेज होने पर रक्त प्रवाह में अवरोध उत्पन्न होने पर ब्लडप्रैसर का न्यून होना और हृदय के लिए रक्त का संचार न पहुँच पाना मानव देह को त्यागने की स्थिति में खड़ा कर देता है।

बुध ग्रह का स्वरूप– बुध ग्रह भी पंच तारा ग्रहों में अहम् स्थान रखता है। जैसे बुध के द्वारा प्रदत्त ऊर्जा के संचारवश हम वाणी की कोमलता, सरसता, काव्य लेखन के लिए उत्प्रेरित करना, प्रशासनिक दक्षता, आहार–विहार, मनोविनोद होना, पित्त, वात, कफ का कारक ग्रह जब अपने तेज से तेजोमय करता हुआ उपरोक्त सम्पूर्ण विषयों से परिपूर्ण करता है। और जब इनकी स्थिति निस्तेज अवस्था में रहती है तो समस्त त्रिदोषों से सम्बन्धित वात, पित्त, कफात्मक रोगों का शरीर घर कर लेता है। और शनैः शनैः विभिन्न रोगों के कारण हम कुछ भी कर पाने में समर्थ नहीं हो पाते हैं।

गुरु ग्रह का स्वरूप– गुरु आकाशस्थ आकार–प्रकार में बृहद् पिण्ड रूपी है। गुरुत्वाकर्षण की सर्वाधिक क्षमता युक्त, आकाशस्थ दृष्टि वाला यह ग्रह पीत नेत्रयुक्त है। अत्यधिक बुद्धियुक्त अथवा श्रेष्ठ बुद्धियुक्त, कफ प्रकृतियुक्त ग्रह है आध्यात्मिकता का द्योतक, आचार्यत्व का अधिपति, धर्म–कर्म विद्या, अध्ययन, अध्यापन, यज्ञ कर्मकाण्ड, का अधिपति ग्रह है।

शुक्र ग्रह का स्वरूप– भृगुपुत्र अथवा भार्गव या शुक्र ग्रह कई नामों से युक्त ग्रह, भौतिक सुख, सम्पदा का कारक ग्रह, आधुनिक समस्त मूलभूत भौतिकता का द्योतक ग्रह, अत्यन्त कोमल शरीर को धारण किए हुए सुन्दर नेत्रधारी, वक्र दृष्टि युक्त आकाशस्थ ऊपरी भाग का दृष्टा, गौरवर्णीय, कफ और वायु का कारक ग्रह है। लोक में समस्त भूमि, भवन, वाहन, सौन्दर्यप्रसादन, आधुनिक समस्त सुख–सुविधाओं का द्योतक ग्रह है। और भौतिक जीवन में विश्वास रखने वाला एवं नित नए भौतिकता के

कारक समस्त द्रव्यों का औषधियों का कामुकता का एवं परस्पर प्रेम का द्योतक ग्रह है।

शनि ग्रह का स्वरूप—शनैः शनैः चलति इति शनि अर्थात् मन्द गति से चलने वाला ग्रह आकाशस्थ ग्रहों के पिण्डों में भूमण्डलस्थलीय से सबसे दूर और सबसे बड़ा ग्रह है। समस्त ग्रहों में सबसे बड़ी कक्षा युक्त होने के कारण सबसे अधिक समय लेता है। इसलिए शनि मन्दादि संज्ञाओं से जाना जाता है। इसलिए धीरे–धीरे गमनवशात् आलसी या आलस्य युक्त गुण से परिपूर्ण, कुछ पीलापन युक्त आँखों वाला, पतला, सिकुड़ा हुआ शरीर एवं लम्बा है। भौतिक जगत में नौकर, न्याय एवं दुःख का कारक ग्रह, पारस्परिक सम्बन्धों का ज्ञानप्रदाता, स्थूलता लिए हुए, अर्थात् मोटे–मोटे केशों वाला मैला कुचैला, एवं भीख मँगवाने तक का द्योतक ग्रह है। अपनी ढैय्या, साढ़ेसाती में शुभता की स्थिति में समस्त औद्योगिक इकाईयों, कैमिकल एवं न्यायालय का अधिपति प्रदाता ग्रह है। यथा आचार्य वराहमिहिर के अनुसार—

मधुपिंगलदृक्चतुरस्रतनुः पित्तप्रकृतिस्सविताल्पकचः।
तनुर्वृततनुर्बहुवातकफः प्राज्ञाश्च राशि मृदुवाक्शुभदृक्कायः।।
क्रूरदृक्तरणमूर्तिरुदारः पैत्रिकस्सुचपलः कृषमध्यः।
श्लिष्टवाक् सतत् हास्यरुचिर्ज्ञः पित्तमारुतकफप्रकृतिश्च।।
बृहत्तनुः पिंगलमूर्द्धजेक्षणो बृहस्पतिः श्रेष्ठमतिः कफात्मकः।
भृगुस्सुखी कान्तवपुसुलोचनः कफानिलात्मासितवक्रमूर्द्धजः।।
मन्दोऽलसः कपिलदृक्कृशदीर्घगात्रः स्थूलद्विजः पुरुषरोमकचोऽनिलात्मा।
स्नाय्वस्थ्यसृक्त्वगथ शुक्रवसे च मज्जा मन्दाक्रचन्द्रबुधशुक्रसुरेज्यभौमाः।।

राशियों का स्वरूप—

मेष

मेष का अर्थ है मेढा। इस राशि के तारों को मिलाकर यदि काल्पनिक रेखाएँ खींची जाए तो मेढे का रूप बनता है। इसलिए इसका नाम मेष है। अंग्रेजी में इसे (।त्प् मै) या (त।ड) कहते हैं। यह 0^0 अंश से 30^0 अंश तक है। अश्विनी नक्षत्र के चार चरण, भरणी के चार और कृत्तिका के प्रथम चरण से मिलकर यह राशि बनती है। इसके अज, आद्य, विश्व, तुम्बूर भी नाम है। यह विषम, उग्र, दिवाबली, स्थान–गिरिभू, दिशा पूर्व, क्रान्ति रुक्ष, क्षत्रिय जाति, पृष्ठोदयी, पुरुष, चर, दृढ, ह्रस्व, पशु, शुष्क अग्नि–तत्त्व, चतुष्पद, लाल वर्ण, उष्ण, पित्त प्रधान, अतिशब्द वाली राशि है। यह राशि कालपुरुष का मस्तिष्क है। इस राशि का स्वामी मंगल है।

वृष— वृष का अर्थ है बैल या सांड। अंग्रेजी में इस (ज।न्त्ै) या (ज्भ्म ठन्स्स्) कहते हैं। इसका विस्तार 30^0 अंश से 60^0 अंश तक है। कृत्तिका के तीन चरण, रोहिणी के चार चरण और मृगशिरा के दो चरण मिलकर यह राशि बनी है। इसे उक्ष, गो, गोकुल, द्वितीय और ताबुक नाम से भी जानते हैं। यह सम, सौम्य, रात्रिबली, स्थान–समभू, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, कान्ति रुक्ष, वैश्य जाति, पृष्ठोदयी, स्त्री, स्थिर, ह्रस्व, शुष्क, पृथ्वी तत्त्व, चतुष्पाद, श्वेत रंग, शीत गुण, वायु प्रधान, अतिशब्द वाली राशि है। यह राशि काल पुरुष का मुख है। इसका स्वामी शुक्र है।

मिथुन— मिथुन का अर्थ है। जोड़ा(स्त्री–पुरुष)। इसे अंग्रेजी में (ळम्डप्छप्) या (ज्भ्म ज्ॅप्छै) कहते हैं। इसका विस्तार 60^0 अंश से 90^0 अंश तक है। मृगशिरा के दो चरण, आर्द्रा के चार और पुनर्वसु के तीन चरण मिलकर यह राशि बनी है। इसके अन्य नाम युग, नृयुग्म, द्वन्द्व, यम, तृतीय और जितुम हैं। यह विषम, उग्र, दिवाबली, स्थान–वन

भू, पश्चिम दिशा की स्वामिनी, उत्तमकान्ति, शूद्र जाति, शीर्षोदयी, पुरुष, द्विस्वभाव, मृदु, सम, नर राशि, शुष्क, वायु तत्त्व, द्विपद, हरा रंग, ऊष्ण गुण, सम धातु, दीर्घ शब्द वाली राशि है। यह काल पुरुष की बाहु है। इसका स्वामी बुध है।

कर्क– कक्र का अर्थ है। केकड़ा। अंग्रेजी में इसे(ब्।छब्म्त) कहते हैं। यह 90^0 अंश से 120^0 अंश तक है। पुनर्वसु का एक चरण, पुष्य के 4 चरण और आश्लेषा के चार चरण मिल कर यह राशि बनी है। इसे कक्रट, चतुर्थ, और कुलीर भी होते कहते हैं। यह सम, सौम्य, रात्रिबली, स्थान–जल भू, उत्तर दिशा की स्वामिनी, स्त्रिग्ध–कान्ति, विप्र जाति, पृष्ठोदयी, स्त्री, चर, मृदु, सम, जलचर, जल तत्त्व, अपद, गुलाबी रंग, शीत गुण, कफ धातु, हीन शब्द वाली राशि है। यह काल पुरुष का वक्ष है। इसका स्वामी चंद्रमा है।

सिंह– सिंह राशि का अर्थ है शेर। अंग्रेजी में इसे (स्म्व्) कहते हैं। यह 120^0 अंश से 150^0 अंश तक है। मघा के चार चरण, पूर्वा फाल्गुनी के चार चरण और उत्तरा फाल्गुनी के एक चरण से मिलकर बनी है। इसके अन्य नाम मृगेन्द्र, पंचम, कंठीरव और लेय हैं। यह विषम, उग्र, दिवाबली, स्थान–गिरि भू, पूर्व दिशा, स्थिर दृढ़, दीर्घ, पशु राशि, शुष्क, अग्नि तत्त्व, चतुष्पद, धूम्रवर्ण, उष्ण, पित्त धातु, दीर्घ शब्द वाली राशि है। यह काल पुरुष का ह्रदय है। इसका स्वामी सूर्य है।

कन्या– कन्या का अर्थ है। अविवाहित बालिका। इसे अंग्रेजी में (टप्त्ळव्) कहते हैं। यह 150^0 अंश से 180^0 अंश तक है। उत्तरा फाल्गुनी के तीन चरण, हस्त के चार चरण, और चित्रा नक्षत्र के दो चरण से मिलकर यह राशि बनी है। इसके अन्य नाम स्त्री, तरुण, षष्ठ और पाद्योन हैं। यह सम, सौम्य, रात्रिबली, स्थान शुभ भूमि, दक्षिण दिशा की स्वामिनी, रुक्ष, वैश्य जाति, शीर्षोदयी, स्त्री, द्विस्वभाव, कृष, दीर्घ, मनुष्य राशि, शुष्क, पृथ्वी तत्त्व, द्विपद, वर्ण पीला, गुण–शीत, धातु वायु, अर्द्ध शब्द वाली राशि है। यह काल पुरुष का उदर है। इसका स्वामी बुध है।

तुला– तुला तराजू को कहते हैं। अंग्रेजी में इसे(स्प्ठत।) कहते हैं। यह 180^0 अंश से 210^0 अंश तक है। चित्रा के दो चरण, स्वाती के चार चरण और विशाखा नक्षत्र के तीन चरणों से मिलकर यह राशि बनी है। इसके अन्य नाम पथ, तौलि, तूल, वणिक, घट, सप्तम, जूक हैं। यह विषम, उग्र, दिवाबली, स्थान वन भू, पश्चिम दिशा की स्वामी, स्निग्ध, शूद्र जाति, शीर्षोदयी पुरुष, चर, दृढ़, दीर्घ, मनुष्य राशि, जल, वायुतत्त्व, द्विपद, वर्ण विचित्र, गुण उष्ण, धातु सम, हीन शब्द वाली राशि है। यह काल पुरुष का वस्ति है। इनका स्वामी शुक्र है।

वृश्चिक–वृश्चिक का अर्थ है। बिच्छू। अंग्रेजी में इसे `(ब्ल्त्च्प्व्) कहते हैं। इसकी स्थिति आकाश में 210^0 से 240^0 अंश तक है। विशाखा का चतुर्थ चरण, अनुराधा के चार चरण और ज्येष्ठा के चार चरण से मिलकर यह राशि बनी है। इसके अन्य नाम कीट, सरीसृप, अलि, अष्टम और कौर्प्य हैं। यह सम, सौम्य, रात्रि बली, स्थान सम भू, उत्तर दिशा की स्वामी, कान्ति स्त्रिग्ध, विप्र जाति, शीर्षोदयी, स्त्री, स्थिर, कृश, दीर्घ कीट राशि, जलीय, जल तत्त्व, बहुपद, वर्ण श्वेत, गुण शीत, धातु कफ, शब्द हीन राशि है। यह काल पुरुष का गुप्तांग है। इसका स्वामी मंगल है।

धनु–धनु का अर्थ है धनुष। इसका आधा अंग नर का और आधा अंग पशु का है। इसे अंग्रेजी में `(।ळप्ज्ज।त्प्न्) कहते हैं। इसका विस्तार 240^0 अंशा से 270^0 अंश तक है। मूल के चार चरण, पूर्वाषाढ़ा के चार चरण और उत्तराषाढ़ा के प्रथम चरण से मिलकर यह राशि बनी है। इसके अन्य नाम धन्वी, चाप, शरासन, हय, तौक्षिक, जव, शरधर और नवम् हैं। यह विषम, उग्र, दिवाबली, स्थान गिरिभू, पूर्व दिशा की सवामी, रुक्ष कान्ति, क्षत्रिय जाति, पृष्ठोदयी, पुरुष राशि, द्विस्वभाव, दृढ़ सम, नर–पशु, शुष्क, अग्नि

तत्त्व, द्विपद, स्वर्ण वर्ण, उष्ण गुण, पित्त धातु, अति शब्दावली राशि है। यह काल पुरुष की जंघा है। इसका स्वामी गुरु है।

मकर– मकर एक जलीय जंतु है जिसे मगर भी कहते हैं। अंग्रेजी में इसे (ब|च्त्प्ब्व्त्छ) कहते हैं। इसका विस्तार 270^0 अंश से 300^0 अंश तक है। उत्तराषाढ़ा के तीन चरण, श्रवण के चार और घनिष्ठा के दो चरण से मिलकर यह राशि बनी है। इसके अन्य नाम मृगास्य, मृग, नक्र, कुरंग, आकोकेरो और दशम हैं। यह सौम्य, सम, रात्रिबली, स्थान वनभू, दक्षिण दिशा की स्वामी, रुक्ष कान्ति, वैश्य वर्ण, पृष्ठोदयी, वर्ण पीला, गुणशीत, धातु वायु, अति शब्द वाली राशि है। यह काल पुरुष का घुटना है। इसका स्वामी शनि है।

कुम्भ– कुम्भ घड़े को कहते हैं। अंग्रेजी में इसे (|फन|त्प्ै) कहते हैं। यह 300^0 अंश से 330^0 अंश तक स्थित है। धनिष्ठा के दो चरण, शत्भिषा के चार चरण और पूर्वाभाद्रपद के तीन चरण से यह राशि बनी है। इसके अन्य नाम घट, एकादश हैं। यह विषम, उग्र दिवा, बली, स्थान समभू, पश्चिम दिशा की स्वामी, स्त्रिग्ध कान्ति, शूद्र जाति, शीर्षोदयी, पुरुष राशि, स्थिर दृढ़, लघु जलधर, जलवायु तत्त्व, अपद, वर्ण हरा गुण ऊष्ण, धातु सम, शब्द फूटा वाली राशि है। यह काल पुरुष की पिण्डली है। इसका स्वामी शनि है।

मीन– मीन मछली को कहते हैं। इसे अंग्रेजी में (चैब्मै) कहते हैं। यह 330^0 से 360^0 अंश तक स्थित है। पूर्वा भाद्रपद का चतुर्थ चरण, उत्तरा भाद्रपद के चार चरण तथा रेवती नक्षत्र के चार चरण से मिलकर यह राशि बनी है। इसके अन्य नाम मत्स्य, अन्त्य, द्वादश, पृथरोमा, झष, जलचर, मीन, अलि हैं। यह सम सौम्य, रात्रिबली, स्थान जलभू, उत्तर दिशा की स्वामी, स्त्रिग्ध, विप्र जाति, उभयोदयी, स्त्री, द्विस्वभाव, दृढ़, लघु जलचर, जल तत्त्व, अपद, धूम्रवर्ण, गुण शीत, धातु कफ, हीन शब्द वाली राशि है। यह काल पुरुष के चरण हैं। इसका स्वामी गुरु है।

4.6 ग्रह एवं राशियों का पारस्परिक सम्बन्ध

सौर जगत में प्रधानता सूर्य की है। इसलिए सूर्य को ग्रहों में राजा का एवं कालपुरुष के शरीर में आत्मा का कारक माना गया है। फलस्वरूप शरीररूपी रथ का वाहक सूर्य है ऐसा माना गया है। सूर्य के विहीन अथवा आत्मा रहित शरीर केवल पृथ्वी तत्त्व तक सीमित है। अतः जिस प्रकार से शरीर में आत्मा के रूप में सूर्य अवस्थित है ठीक उसी प्रकार से सौर जगत में पंच ताराग्रह भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि आदि सभी पंच तारा ग्रह सूर्य के तेज से प्रकाशित होकर प्रतिबिम्बित प्रकाश पृथ्वी वासियों को देकर स्व–स्व गुण–दोष धर्मानुसार जातक के मन, बल, बुद्धि, वाणी, भौतिक सुख एवं ससांधनादि के कारक बनते हैं। प्रकार से इस भूमण्डलस्थ प्रत्येक जीव जन्तु, का सम्बन्ध आन्तरिक एवं बाह्य दोनों प्रकार से इन ग्रहों से है। यहाँ आचार्य कालपुरुष का सम्बन्ध ग्रहों से स्थापित करते हुए कहते हैं कि–

''कालात्मा दिनकृन्मनश्च हिमगुः सत्त्वं कुजो ज्ञो वचो
जीवो ज्ञानसुखे सितश्च मदनो दुःखं दिनेशात्मजः।
राजानौ रविशीतगू क्षितिसुतौ नेताकुमारो बुधः
सूरिर्दानवपूजितश्च सचिवः प्रेष्यः सहस्रांशुजः।।

उपर्युक्त में आचार्य वराहमिहिर ग्रहों का कालपुरुष के साथ सम्बन्ध करते हुए कहते हैं कि सूर्य स्वयं कालपुरुष की आत्मा है और मन चन्द्रमा, कालपुरुष के शरीर में स्थित बल भौम ग्रह है, वाणी जो हम परस्पर आचार–व्यवहार एवं वार्तालाप के माध्यम से

विचारों का आदान–प्रदान का कारक ग्रह बुध है। आध्यात्मिक ज्ञान का कारक ग्रह भूत–भविष्य–वर्तमान कालादि में शुभाशुभ समय का एवं कार्यादि का सूचक ग्रह बृहस्पति है। सांसारिक भौतिक वाहन, वस्त्र, आभूषणादि काल पुरुष के भौतिक संसाधनों का कारक ग्रह शुक्र ग्रह है। कालपुरुष में दुःख की अनुभूति शनि ग्रह करवाते हैं। इसलिए कालपुरुष एवं ग्रहों का पारस्परिक सम्बन्ध से ही संसार गतिमान है। अन्यथा संसार की कल्पना करना असम्भव है। **'यत्पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे'** का वैदिक उद्घोष वाक्य आपको बार–बार ब्रह्माण्डस्थ समस्त पिण्डों एवं स्वयं के अन्तर्भूत स्थिति पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश के विषय से इंगित करवाता है। अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि ब्रह्माण्डस्थ समस्त पिण्डों का सम्बन्ध हमारे शरीर से नहीं है।

राशियाँ– ठीक इसी प्रकार से राशियाँ भी आकाश में छोटे लघु पिण्डों का एक समूह विद्यमान है। जो कि 360^0 अंशो में स्थित नाड़ी चक्र, भचक्र, राशिचक्र इत्यादि विभिन्न नामों से जानी जाती है। जिस प्रकार से ग्रह भूमण्डलस्थ समस्त जड़–चेतन को अपनी गति–स्थिति एवं प्रकृति के द्वारा प्रभावित करते हैं, ठीक उसी प्रकार से राशियों का भी अपना एक स्थान है, एक प्रभाव है। यही प्रभाव जब ग्रहों में संयोग वश राशियों की बलवत्ता को बढा कर ग्रह एवं राशियों के गुण–दोषानुसार प्रत्येक जातक की भिन्न–भिन्न ग्रह स्थिति वशात्, प्रत्येक जातक की भिन्न–भिन्न राशि वशात्, प्रत्येक जातक का भिन्न–भिन्न नक्षत्रवशात्, प्रत्येक जातक का भिन्न–भिन्न नक्षत्र चरण वशात्, भिन्न–भिन्न प्रभाववशात् पृथक् पृथक् काल में जन्म लेने वाले समस्त भूमण्डलस्थ प्रत्येक जातक की कुण्डलीस्थ ग्रहों के योगानुसार शुभाशुभ फल की प्राप्ति उस कुण्डलीस्थ जातक की ग्रह राशि प्रभाव वशात् बनने वाले योग जन्म–जन्मान्तर कृत् शुभाशुभ कर्म द्वारा प्राप्त योगानुसार फल की प्राप्ति होती है। अतः यह कहना उचित होगा कि ग्रह और राशियों का पारस्परिक सम्बन्ध वशात् ही ज्योतिषशास्त्र का महत्त्व है। चूँकि राशि प्रत्येक जातक की कुण्डली में मन की स्थिति का दर्शन करवाती है और उस राशि का स्वामी ग्रह अपने गुण–दोषानुसार उस जातक का नेतृत्त्व करता है। और यही पारस्परिक सम्बन्ध जातक को भूत–भविष्य एवं वर्तमान की स्थिति से अवगत कराते हुए हमें हमारे द्वारा पूर्वार्जित कर्मानुसार फल प्रदान करते हैं। यथा–

4.7 सारांश

जीव की उत्पत्ति एवं उस पर होने वाले प्रभाव में नक्षत्र, ग्रह एवं राशियों की अहम् भूमिका है। इसलिए मनुष्यों जन्तुओं एवं वनरचतियों निश्चित रूप से संयोग होना और उन परमाणुओं का सूर्यादि पिण्डों के साथ सम्बन्ध वशात् स्वाभाविक है कि इन पिण्डों का मानव देह के साथ सीधा–सीधा और साक्षात् सम्बन्ध है इसलिए प्रत्येक नक्षत्र, राशि का परस्पर संयोग तथा ग्रहों के साथ सम्बन्ध नेतृत्त्व होने के कारण मानव जगत को प्रभावित कर रहा है। इस प्रभाव को आपने इस इकाई में जाना जिसे अन्य ज्योषित ग्रन्थों में आप और भी विस्तार से पढ़ सकते हैं।

4.8 शब्दावली

चक्षुसी = दोनों नेत्र या चक्षु।

श्रोत्र = कर्ण

कल्प = सृष्टि के आरम्भ से अवसान तक का काल

पादपद्मद्वयम् = दोनों पैर।

श्रौतस्मार्त = श्रुति एवं स्मृतिपरक क्रियाएँ

स्कन्धत्रयम् = तीन स्कन्ध या भाग सिद्धान्त, संहिता एवं होरा।

कालाश्रयेण = काल के अधीन होने से

क्रतुक्रियार्थम् = यज्ञ विधान की क्रिया में।

षड्धा = छः प्रकार

टाहुः = कहे गए।

संक्रान्ति = सूर्य के द्वारा राशि में प्रवेश की घटना

अप्रत्यक्षाणि = जो प्रत्यक्ष नहीं है।

चन्द्राऽर्कौ = चन्द्र और सूर्य।

अनुभूतिप्रदम् = अनुमान प्रद।

नागानाम् = सर्पों का (सम्बन्ध)

मणयोः = मणियाँ

मधुपिंगलदृक् = शहद के समान पिंगल वर्ण वाले नेत्रों से युक्त।

चतुरस्रतनुः = चौकोर शरीर धारी।

पित्तप्रकृति = पित्त प्रकृति वाले।

अल्पकचः = कम केशों वाले।

बहुवातकफः = अत्यधिक वात एवं कफ वाला

4.9 अभ्यास प्रश्न

1. नक्षत्र किसे कहते हैं? नक्षत्रों का सामान्य जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?
2. राशियाँ कितनी हैं? सामान्य जीवन में उपयोगिता सिद्ध करें।
3. राशि और नक्षत्रों का परस्पर योगदान सामान्य जीवन को कैसे प्रभावित करता है?
4. ग्रह किसे कहते हैं? ग्रहों का भूमण्डलस्थ प्राणियों पर क्या प्रभाव पड़ता है? स्पष्ट करें।

4.10 उपयोगी पुस्तकें

1. भारतीय ज्योतिष, नेमिचन्द्रशास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, प्रकाशन नई दिल्ली।
2. भारतीय कुण्डली विज्ञान, मीठालाल हिम्मतराम ओझा, देवर्षि प्रकाशन वाराणसी, प्रकाशन वर्ष–2008
3. वृहत्पारासरहोराशास्त्रम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, टीकाकार, पद्मनाभशर्मा, प्रकाशन वर्ष 2012
4. जातकपारिजात, वैद्यनाथ, व्याख्याकार डॉ. हरिशंकर पाठक, प्रकाशन वर्ष 2012, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।
5. भारतीय ज्योतिष विज्ञान, डॉ. सुरकान्त झा, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
6. लघुपारासरी सिद्धान्त भाष्य, डॉ रत्नलाल, सत्यम् पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
7. बृहद्वकहोडाचक्रम्, डॉ. रत्नलाल, सत्यम् पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
8. जातकालंकार, सद्मनसेश्वरी व्याख्या सहित, डॉ. रत्नलाल, सत्यम् पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

इकाई 5 षड्बल विचार

संरचना

5.1 उद्देश्य

ठस इकाई के अध्ययन से आप :

- ग्रहों के पारस्परिक सम्बन्धों को बता सकेंगे।
- ग्रहों के दिक्बल का निरूपण कर सकेंगे।
- ग्रहों के कालबल का निरूपण कर सकेंगे।
- ग्रहों के स्थान बल एवं चे बल की व्याख्या कर सकेंगे।

5.1 प्रस्तावना

इस इकाई में प्रस्तावित विषय है षड़बल। यह छः प्रकार के बल फलित ज्योतिष में फलादेश के हेतु इनका विशेष महत्व है। हम यहां पर छः प्रकार के बल जिसमें स्थानबल, दिग्बल, कालबल, चेष्टाबल, नैसर्गिबल और दृग्बल ये छः प्रकार के बल ज्योतिष छात्र में प्रमुख है इनके ज्ञान के आभाव में फलादेश करना अंधकार में तीर मारने वाली बात हो जाती है। अतः जिस प्रकार से हम अपने घर में रहते हुए स्वयं को आत्मबली मानते हैं और किसी भी कार्य को करने में अथवा किसी विशेष योजना को सम्पन्न कराने में हम निर्भीकता के साथ मानसिक रुप से विश्वस्त होकर कार्य को सम्पन्न करने सरलता महसूस करते हैं ठीक इसी प्रकार से ग्रहों की स्थिति भी है। यदि जातक की जन्मपत्री में ग्रहों की स्थिति षड़बलों से अन्वित होगी तो निश्चित रुप से जातक उपर्युक्त छः प्रकार की स्थितियों में बलवान होगा और बलवान होने पर जातक की शारीरिक और मानसिक अवस्था भी निश्चित रुप से बलवान होगी। यहां पर यही प्रमुख विषय प्रस्तावित है।

5.2 ग्रहों का मानव जीवन पर प्रभाव

सौर–जगत में स्थित ग्रहनक्षत्रों के पिण्डों के साथ हमारा सतत् सम्बन्ध उनकी गति, स्थिति एवं रासायनिक परिवर्तन हमें प्रभावित करता रहता है। इस प्रसंग में जलवायु के परिवर्तन को साक्ष्य के रुप में प्रस्तुत किया जा सकता है। क्योंकि जलवायु का

परिवर्तन सूर्य एवं सौर परिवारीय ग्रहों की राशि विशेष में गति अथवा हमारे निकट या दूर में स्थिति के कारण होता है। ग्रीष्म ऋतु में वृष या मिथुन राशि स्थित सूर्य की किरणों में प्रचण्डता और हेमन्त ऋतु में वृश्चिक या धनु राशि में स्थित सूर्य की किरणों में मृदुता का हेतु पृथ्वी तथा सूर्य का आसन्नत्व–दूरत्वभाव है। 'तात्पर्य यह है ग्रीष्म ऋतु में सूर्य हमारे निकट होता है तथा हेमन्त ऋतु में हमसे दूर। जब वह हमारे निकट होता है, तब हम उसकी किरणों में प्रचण्डता और जब वह हमसे दूर होता है, तो हम स्वभाविक रुप से उसकी किरणों में मृदुता का अनुभव करते हैं। सूर्य की तेज किरणों से वाष्पीकरण होने के कारण वर्षा तथा उसकी मात्रा भी पूर्णरुपेण सूर्य पर आधारित रहती है। फलतः जलवायु में जो परिवर्तन होता है और इस परिवर्तन का मानव जीवन पर जो प्रभाव पड़ता है, वह प्रकारान्तर से सौर–परिवार या ग्रहों का ही प्रभाव माना जायेगा।

मनुष्य की डील–डौल और उसकी मनोवृत्तियों का यदि कोई ऐसा कारक है जो उसे कर्मण्यता या आलस्य, सबलता या निर्बलता तथा प्रखरता या मन्दता की ओर ले जाता है, तो वह जलवायु है। मनुष्य की शारीरिक एवं बौद्धिक क्षमताओं का उतार–चढ़ाव जलवायु के परिवर्तन के साथ–साथ होता रहता है। शरद् काल में मनुष्य की शारीरिक एवं बौद्धिक क्षमता बढ़ जाती है; जब कि ग्रीष्म काल में यह क्षमता न्यूनतम बिन्दु पर आ जाती है। कारण यह है कि जब वायु–दाब धीरे–धीरे बढ़ता है तो मानव की शारीरिक एवं बौद्धिक क्रियाशीलता अत्यधिक बढ़ जाती है। वस्तुतः शरीर एवं मस्तिष्क की कोशिकायें; जो स्पंज की तरह छिद्रपूर्ण होती है वे दबाव के घटने से शरीर के पानी को चूस लेती है और फूल जाती है। इस चूसने और फूलने की प्रक्रिया से मनुष्य की क्रियाशीलता एवं कार्यकुशलता में गड़बड़ी आ जाती है। इस लिए ग्रीष्म ऋतु में वायु के दबाव घटने से हमारी शारीरिक एवं बौद्धिक क्रियाशीलता घट जाती है। जब कि हेमन्त ऋतु में वायु का दबाव बढ़ने पर हमारे शरीर की कोशिकाऐं न तो पानी चूसती है और नहीं फूलती हैं। प्रत्युत वे स्वतंत्र एवं सहज रूप से अपना विहित कार्य करती हैं। इसलिए हेमन्त ऋतु में वायु का दाब बढ़ने से हमारी शारीरिक एवं बौद्धिक क्रियाशीलता उन्नत रहती है।

समुद्र की समतलता में वायुमंडल के दबाव में, ऋतुओं के परिवर्तन में और भूकम्प आदि की आवृत्तियों में जो घटना–चक्र दिखलाई दे रहा है, उसका सूर्य एवं चन्द्रमा आदि ग्रहों की गति विधियों से सीधा सम्बन्ध है।

पूर्णिमा और अमावस्या को समुद्र में ज्वार–भाटे की लहरें बहुत बड़ी हो जाती हैं। वायुमण्डल में अन्य अवसरों की अपेक्षा अधिक संक्षोभ होता है या भूकम्प के झटके लगते हैं। आखिरकार ऐसा क्यों होता है? इसलिए कि जब आकाश में सूर्य एवं चन्द्रमा पास–पास होते हैं–जैसा कि अमावस्या को, अथवा जब वे एक –दूसरे से विपरीत दिशा में या आमने–सामने होते हैं– जैसे पूर्णिमा को, तो वे अपने आकर्षण–विकर्षण द्वारा समुद्र की समतलता में, वायुमण्डलीय दबाव में और पृथ्वी के संतुलन में एक विलक्षण संक्षोभ पैदा कर देते हैं। जिसके फलस्वरुप ज्वार–भाटा, तूफान एवं भूकम्प जैसी घटनाएं घटित होती हैं।

पूर्व एवं पश्चिम के लोगों की अथवा उत्तर एवं दक्षिण के लोगों की जीवन शक्ति में जो अन्तर पाया जाता है, वह मात्र खान–पान के भेद, या जाति अथवा संस्कृति के भेद के कारण नहीं अपितु यह भेद जलवायु की भिन्नता के कारण है। जलवायु की दशाओं और इसके परिवर्तनों का मनुष्य के शारीरिक एवं बौद्धिक विकास, जीवन शक्ति, क्षमता, अपराधवृत्ति, समृद्धि, स्वास्थ्य एवं सफलता आदि पर सीधा प्रभाव पड़ता है। क्योंकि जलवायु के परिवर्तन से प्रायशः ग्रहों की गति एवं स्थिति पर आधारित

होती है। अतः जलवायु के परिवर्तन एवं उसकी विविधता के माध्यम से मानव मात्र पर पड़ने वाले प्रभाव को एक प्रकार से ग्रहों का ही प्रभाव माना जा सकता है।

ग्रहों के प्रभाव को जानने के साधन– हमारे ऋषियों के पास एक बहुत सूक्ष्म, विश्वसनीय एवं व्यापक साधन था; जिससे ग्रहों के प्रभाव को सुनिश्चित रूप से जाँचा और परखा जा सकता था। वह साधन था योग; जिसके द्वारा वे इस ब्रह्माण्ड के रहस्य को जान सकते थे, उन्हें जाँच और परख सकते थे। और उनका वर्गीकरण कर सकते थे। उन्होंने योग–साधना द्वारा अपनी इन्द्रियों की शक्ति को भीतर ही भीतर उन्नत कर उन्हें इस योग्य बना लिया था, कि वे काल के उन अल्पतम क्षणों को तथा पदार्थ के उन सूक्ष्म भागों को भी जान सकते थे; जिन्हें विज्ञान के नवीनतम उपकरण भी माप नहीं सकते। अपनी इसी विशेषता के कारण वे काल की सूक्ष्म इकाइयों और लोक–लोकान्तरों को जान लेते थे।

ग्रहों की अन्तर्दृष्टि एवं अवेक्षण का सिद्धान्त– भारत के ऋषियों ने ग्रहों के प्रभाव एवं परिणामों को सम्भवतः दो विधियों द्वारा जाना होगा। 1. अन्तर्दृष्टि एवं 2. अवेक्षण।

अन्तर्दृष्टि, अन्तर्दर्शन या दिव्यदृष्टि एक वैयाक्तिक अनुभूति है। जिसे महर्षियों ने तपस्या, सदाचारी जीवन एवं योगाभ्यास द्वारा प्राप्त किया था। **बर्टेड रसेल के विचार में–**''तथ्य संग्रह के साधन के रूप में'' अन्तर्दृष्टि 'एक वैध विधि है जो पर्याप्त मात्रा में वैज्ञानिक प्रविधि के आस–पास आ जाती है।'' अन्तर्दृष्टि–अभिज्ञान में एक मौलिक प्रकार की निश्चितता एवं विश्वसनीयता पाई जाती है। क्योंकि यह विचारणीय पदार्थ के प्रस्तुत या प्रशंसनीय गुण–दोषों की छान–बीन में ही नहीं लगी रहती; अपितु वह उसकी अन्तर्वस्तुओं की प्रकृति के विषय में सर्वथा अनासक्त रहते हुए विचारणीय पदार्थ के समग्र रूप का अवलोकन कर उसका यथार्थ रूप चित्रित करती है। हमारे महर्षियों ने योग सिद्धि के उच्चतर स्तर पर पहुँच कर ग्रह पिण्डों से सीधा सम्पक्र कर उनके रहस्यों को यान्त्रिक–उपकरणों के विना ही अन्तर्दृष्टि अभिज्ञान द्वारा अधिगत कर उनका यथार्थ रूप से प्रतिपादन किया था।

इसके साथ–साथ अवेक्षण ने भी अपना कार्य किया होगा। ऋषियों ने अकेली–अकेली और सामूहिक घटनाओं को बार–बार घटित होने वाली ग्रह स्थितियों के प्रकरण में ध्यान पूर्वक देखकर विशेष ग्रह योगों के प्रभाव वश लोगों पर विशेष प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक प्रतिक्रियाएँ देखी होंगी। सैकड़ों वर्षों तक लगातार चलने वाले इस प्रकार के सर्वेक्षणों ने ऋषियों को समाहित कर दिया होगा कि विभिन्न राशियों में विविध ग्रहों के होने पर जन्म लेने वाले जातकों में सुविशेष प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक विलक्षणताएँ होती हैं। प्राचीन ऋषियों ने केवल मन की एकाग्रता द्वारा वह तथ्य खोज निकाले, जिनके बाहरी स्तर को भी आज के वैज्ञानिक छू तक नहीं पाए हैं। इसका मुख्य कारण है चित्त–वृत्तियों का निरोध, जिससे अविच्छिन्न एकाग्रता स्वयं उत्पन्न हो जाती है। चित्तवृत्तियों के निरोध के लिए पूर्ण अनासक्ति की आवश्यकता होती है। क्योंकि अनासक्ति के विना न तो पूर्वाग्रह नष्ट होता है और न ही तटस्थता पूर्वक अवलोकन किया जा सकता है। इसलिए अनासक्ति के विना अज्ञात–क्षेत्र की खोज करना और यथार्थ परिणाम निकाल लेना सम्भव नहीं है।

यह चमत्कार वसिष्ठ, अंगिरा, पराशर, जैमिनि, लोमश, गर्ग, पतंजलि, कपिल एवं कणाद आदि के ही वश का था, कि उन्होंने शुद्ध अन्तःकरण, मनोयोग एवं अनासक्त भाव से अपनी उन्नत अन्तर्दृष्टि से, अदृश्य एवं अमूर्त विषयों की रहस्यमय परतों को उलट–पलट कर महान एवं मौलिक तथ्यों एवं उनको जानने की प्रविधियों को खोज निकाला।

हमारे ऋषि मुनि योग साधना द्वारा यह सब कुछ जानने पहिचानने के उपरान्त किसी फल को अन्तिम निष्कर्ष में लाने से पूर्व सूक्ष्मता एवं संलगनता के साथ परमाणु–पदार्थ के सम्बन्ध एवं ग्रह पिण्ड़ों तथा प्राणी जगत के साथ पड़ने वाले प्रभाव के विषय सम्बन्धि ज्ञान प्राप्त करने के उपरान्त ही अन्तिम निर्णय लेते थे। वस्तुतः आधुनिक विज्ञान आज ऋषि प्रणीत शोध एवं प्राचीन विज्ञान के आधार को मानकर आज नये–नये अविष्कारों की चर्चा करता है। प्राचीन भारतीय ज्योतिष विज्ञान को सूक्ष्मता पूर्वक अध्ययन करने हेतु एक–एक बिन्दु के विषय में ज्ञान होना परमावश्यक होगा। ग्रहों की गति स्थिति ग्रहों के गति प्रकार, ग्रहों का स्वरूप, दृष्टि, बाल्यादि अवस्था तथा उनका उपयोग जिस प्रकार फलादेश निर्धारण हेतु अत्यावश्यक है ठीक उसी प्रकार ग्रहों के षड़बल उनकी उपयोगिता और उपयोगिता के उपरान्त प्रत्येक बल से जातक पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी न हो तो हम किसी भी जातक के भूत–भविष्य एवं वर्तमान की गतिस्थिति का आकलन करने में असमर्थ होते हैं। ग्रहों के षड़बल जातक के जीवन में अहम स्थान रखते हैं। बलहीन व्यक्ति मृतप्राणी के समान है चूँकि जातक में आंगिक, वाचिक चेष्टा का होना ग्रहों के बलाधीन है। अतः ग्रहों के बलाबल को सूक्ष्मता पूर्वक जानने के उपरान्त किसी भी जातक के जीवन का निर्णय करना चाहिए।

5.3 षड्बल की ज्योतिष शास्त्र में भूमिका

ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता केवल मानव के भूत–भविष्य और वर्तमान की स्थितियों का आकलन करने नहीं अपितु अत्यन्त ही अप्रासगिक क्योंकि बार–बार प्रत्येक अध्याय में इसका अनावश्यक रूप से प्रिष्ट पेषण किया जा रहा है जो पाठ्यक्रम के लिए कतई अनावश्यक एवं अरुचिकर है। इस प्रकार के अनावश्यक विस्तार एवं पिष्टपेषण स`लेखकों को बचना चाहिए।

5.3.1 स्थानबल, दिग्बल और कालबल ज्ञान

ग्रहों के बालादि पाँच अवस्थाएँ एवं पंचमहाभूत पृथव्यादि के समान है। षड्बल फलादेश के सिद्धान्त में अहम् भूमिका रखते हैं। जिस प्रकार बिना बल के शरीर में जीवित होने का अहसास हो रहा है परन्तु यदि हमें किसी भी कार्य विशेष के लिए उद्यत होना पड़े तो हम उसमें असमर्थ हो जाते हैं। अतः जैसे ग्रहों के बाल, कुमार, युवा, वृद्ध और मृत् ये पाँच अवस्थाओं में कोई भी ग्रह यदि युवावस्था में है तो ऐसा जातक जिसकी जन्मकुण्डली में यह स्थिति होगी वह जातक पूर्णतया युवा दिखाई देगा। परन्तु ऐसे जातक को जब हम किसी कार्य के लिए कहते हैं और वह उस कार्य को करने में समर्थ है ऐसा बाह्य स्वरूप को देखने पर हमें प्रतीत हो रहा है। परन्तु वह कार्य को सम्पन्न नहीं कर पाता है तो ऐसे में क्या कारण है इस कारण के पृष्ठ भाग में क्या हेतु है। यहाँ यही विषय चिन्तनीय है। और यही आधार हमें ग्रहों के बल के विषय में जानने हेतु प्रेरित करता है। ग्रह बल से कैसा प्रभावित होगा आपके विचारों में यह विषय भी पुनः–पुनः घर कर जाता है। वस्तुतः भारतीय ज्योतिष और वैदिक सिद्धान्त का अनुपालन हमें करना होगा और उसी को आधार मानकर हम ग्रहों के षड़बल होने के सिद्धान्त को जान सकते हैं। चूँकि भारतीय वैदिक दर्शन एवं ज्योतिष दोनों ही इस सिद्धान्त को उन्मुक्त कण्ठ से स्वीकारते है और वास्तविक तथ्य भी यही है और प्राचीन भारतीय वैदिक दर्शन का मत तो इस दिशा में सृष्टि के आरम्भ काल से ही मानता आ रहा है। हम ग्रहों के षड़बलों के विषय में यहाँ पर उल्लेख कर रहे हैं। वस्तुतः जब ग्रह बल के विषय में चर्चा होती है तो ऐसे में हमें सर्वप्रथम ग्रह की स्थिति, अवस्था एवं स्थान के विषय में ज्ञान होने के उपरान्त ही इस विषय में आगे बढ़ना होगा। और इस विषय में ज्योतिषशास्त्र के आचार्यों का कथन है

कि देश–काल, परिस्थिति के अनुसार ही किसी भी कार्य को करने से पूर्व की सर्वप्रथम विषय के बारे में पर बार–बार आगाह करता है। इसकी पृष्ठभूमि में यही षड्बल है। यही षड्बल उपर्युक्त सिद्धान्त का अनुपालन करवाते है। इसलिए हमें ग्रह बल के आधार पर ही जातक के भूत–भविष्य एवं वर्तमान कालिक स्थितियों पर विचार करना चाहिए।

1 **स्थानबल–** स्थान बल के आधार पर ही किसी भी व्यक्ति विशेष के बल का निर्धारण होता है। इससे पूर्व हमें लग्नबल और राशिबल के विषय में भी विचार कर लेना चाहिए। चूँकि लग्न हमारे शरीर का नेतृत्व करता है। और राशि हमारे शरीर में मन का कारक होती हैं। अतः यहाँ यह धातव्य है कि शरीर के प्रधानता और मनसः स्थिति ही आत्मबल को और अधिक परिपुष्ट करती है। क्योंकि तन और मन ही हमारे आत्मबल के आधार है। इसलिए यह जानना यहाँ पर आवश्यक होगा कि किन अवस्थाओं में लग्न और राशि बली होते हैं।

यदि लग्न में मनुष्य राशियाँ हो तो रूपबल मिलता है। वृश्चिक राशि कीटसंज्ञक है। उसके लग्न में रहने पर 1/4 बल प्राप्त होता है। अन्य राशियों को लग्न में 1/2 बल प्राप्त होता है।

लग्न का बल वही है जो लग्नेश ग्रह को बल मिला हो। इसके अतिरिक्त यदि 3, 6, 10, 11 भावों में लग्नेश की स्थिति हो तो पूर्व प्राप्त बलों में थोड़ी वृद्धि रहती है। ऐसा जानना चाहिए।

और भी यदि लग्न पर बुद्ध, गुरू की दृष्टि या योग या लग्नेश ग्रह की दृष्टि हो अथवा लग्न में स्थिति हो अथवा शुक्र ग्रह से युक्त लग्नेश हो अन्य ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट न होने पर भी विशेष बलवान होता है।

राशियों के विषय में भी उनकी संज्ञाओं के आधार पर हमें चर्चा करनी चाहिए जैसा कि नाम के अनुसार यथा जो रात्रिबली राशियां है वह रात्रि में बलवान होती हैं और दिवाबली राशियां है वह दिन में बलवान रहती हैं। और उपर्युक्त में से एक भी विधि से लग्न बली हो तो बली और एकाधिक प्रकार से बली हो तो अधिकाधिक बली जानना चाहिए। इस प्रकार के विषयों में तारतम्यता अनुसार विचार करके अन्तिम निर्णय लेना चाहिए। यथा–

रूपं मानुषभेऽलिभेऽध्रिरपरेष्वर्धं बलं स्यात्ततोः
तुल्यं स्वामिबलेन चोपचयगे नाथेऽतिवीर्योत्कटम्।
स्वामीऽयज्ञयुतोक्षिते कवियुते चान्यैरयुक्तेक्षिते।
शर्वर्या निशिराशयोऽहनि परे वीर्यान्विताः कीर्तिताः।।

कई बार ऐसा देखा गया है कि स्थान बल मिलने पर भी ग्रह अपने उच्चादि में न हो तो वह विशेष महत्व नहीं रखता। अर्थात् स्थान बल में राशिबल की प्रधानता रहती है।

यदि ग्रह अपने स्वोच्च राशि में है तो 0ᑊ एक बल मिलता है और यदि अपने मूलत्रिकोष में है तो 45 कलां या चौथाई रूप बल प्राप्त होता है। यदि ग्रहों की स्थिति इससे भिन्न हो तो अर्थात् ग्रह शत्रुराशि में हो तो नगण्य होता है। बल यही स्थिति नीचराशिगत और अस्तंगत ग्रह की भी होती है। यथा–

और सामान्य व्यवहार में भी ज्योतिष शास्त्र में बार–बार इस विषय को दोहराया जाता है कि देश काल परिस्थिति के अनुसार विचार करना चाहिए। यथा यदि चतुर्थ, दशम, सप्तम और लग्न ये केन्द्र उत्तरोत्तर बली होते है। यही नियम केन्द्रादि बलों में लागू

होगी। अन्यथा दशम सर्वश्रेष्ठ केन्द्र और नवम् सर्वश्रेष्ठ त्रिकोण होता है। यहाँ पर स्थान बल के विषय में आचार्य कहते हैं कि–

ग्रह जब अपने स्वोच्च में अर्थात् अपनी उच्च राशि में हो, अपने मित्र राशि में हों, या षड़वर्गों में बलवान होने पर स्थान बल प्राप्त होता है। केन्द्र में स्थित ग्रह को पूरा बल प्राप्त होता है, 2, 5, 8, 11 भावों में ग्रह की स्थिति रहने पर आधा बल और 3, 6, 9, 12 भावों में ग्रह की स्थिति होने पर चौथाई रूप बल प्राप्त होता है।

नपुंसक ग्रह को मध्य द्रेष्काण में और पुरुष ग्रह को प्रथम द्रेष्काण में और स्त्रीकारक ग्रह अन्तिम द्रेष्काण में बलवान होते है यही स्थान बल कहलाता है। यथा–

स्वोच्चस्वर्क्षसुहृदग्रहेषु बलिनः षट्सु स्ववर्गेषु वा

प्रोक्तं स्थानबलं चतुष्टयमुखात्पूर्णार्धपादाः क्रमात्।

मध्यान्तकषण्डमर्त्यवनिताः खेटा बलिष्ठा क्रमात्

मन्दारज्ञगुरुशनोऽब्जरवयो नैजे बले वर्धनाः।।

स्वोच्चेपूर्ण स्वत्रिकोणे त्रिपादं स्वक्षेत्रेऽर्धं मित्रण्ये पादमेव।

द्विटक्षेत्रेऽल्पं नीचेऽस्तंगतेऽपि क्षेत्रं वीर्यं निष्फलं स्याद्ग्रहाणाम्।।

दिग्बल– सामान्य बात है कि हमारे यहां ज्योतिष शास्त्र में जन्म कुण्डली के बारह भावों को क्रमशः विपरीत क्रम में गणना करने पर यदि कोई ग्रह लग्न में स्थित हो तो पूर्व दिशास्थ और यदि दशमस्थ कोई ग्रह हो दक्षिण दिशा में और यदि ग्रह की स्थिति सप्तमभावस्थ रहेगी तो पश्चिम दिशास्थ ग्रह कहलाएगा और यदि ग्रह की स्थिति चतुर्थभावस्थ हो तो उत्तर दिशा में ग्रह की स्थिति होगी। ऐसा जान कर ग्रहों के दिग्बल के विषय में विचार करना चाहिए।

काल बल– चन्द्रमा, शनि, और मंगल में तीनो ग्रह प्रायः रात्रिकाल में बलवान होते हैं। अर्थात् यदि रात्रि में किसी जातक का जन्म होता है। तो उसके जन्मांगचक्र में चन्द्रमा और शनि तथा मंगल ग्रह बलवान होंगे और ऐसे में वह जातक दिवस की अपेक्षा रात्रिकाल में चन्द्रमा, शनि और मंगल द्वारा कृत कार्यों में अधिक रूचि दिखायेगा।

इसी क्रम में सूर्य, बृहस्पति और शुक्र में तीनों ग्रह दिवस में बली होते है ऐसे में सूर्य से सम्बन्धित कार्यों के रूचि, अध्यात्म से सम्बन्धित कार्यों में इच्छा शक्ति और शुक्र से सम्बन्धित योग विलासादि की रूचि ऐसे जातकों में दिवस में भी देखी जा सकती है।

पाप कर्म करना हो और या शुभ कार्य करना हो तो ऐसे में पाप कार्यों हेतु कृष्ण पक्ष और शुभ कार्यों हेतु शुक्ल पक्ष ग्रहण करना चाहिए।

संवत्सर के विचार हेतु कि इस वर्ष में राजा कौन ग्रह होगा मंत्री कौन ग्रह होगा इस सम्बन्ध में जो ग्रह जिस वर्ष का अधिपति होता है उस वर्ष में वही ग्रह बली होता है।

ग्रह बली के हेतु प्रत्येक ग्रह अपने वार की अपनी होरा में बलवान होता है जैसे सोमवार को चन्द्रमा, मंगलवार को मंगल और बुधवार को बुध ग्रह बलवान होगा इसी प्रकार से अन्य ग्रहों के विषय में भी जानना चाहिए।

मासाधिपति– जिस मास में जो ग्रह मासाधिपति होता है अर्थात् जिस मास का स्वामी होता है वह उस मास में बली होता है।

ग्रहों का क्रम बली होने का उत्तरोत्तर इस प्रकार से समझना चाहिए जैसे **शरुबुगुशुचसाद्या** के आधार पर शनि ग्रह सबसे बलहीन है, रु से रुधिर मंगल शनि से अधिक बलवान है। बु से बुध ग्रह मंगल से अधिक बलवान होता है। गु से गुरु ग्रह

बुध गुरु से बलवान होता है। शु से शुक्र, शुक्र ग्रह बृहस्पति से अधिक बलवान होता है। और च से चन्द्रमा शुक्र ग्रह से अधिक बलवान होता है। स से सविता अर्थात् सूर्य, चन्द्रमा से अधिक बलवान होता है। अतः यह निश्चित है कि ग्रहों में सूर्य सबसे बलवान और शनि ग्रह सबसे अल्पबलि होता है। यथा–

निशिशशिकुजसौराः सर्वदा ज्ञोऽह्नि चान्ये।

बहुलसितगतः स्युः क्रूर सौम्या क्रमेण।।

द्वयनदिवसहोरामासाषैः कालवीर्यं।

शरूबुगुशुचसाद्या वृद्धितो वीर्यवन्तः ।।

इसी प्रकार से उक्त विधि के द्वारा आकलन करके ग्रहों के कालबल के विषय में जानना चाहिए।

5.3.2 चेष्टाबल, उच्चबल और अयनबल ज्ञान

यहाँ पर ग्रहों के षड्बलों के विषय में अध्ययन कर रहे हैं। वस्तुतः पूर्व में अपने ग्रहों के बलों की प्रधानता है। के विषय में ध्ययन किया इस विषय की विस्तृत रूप से विवेचना की चुकी हैं। यहाँ इस भाग में हमें यह जानना चाहिए कि चेष्टा बल आदि षड्बलों से सम्बन्धित विषयों को विस्तार पूर्वक हम पूर्व में उल्लेख कर चुके हैं। अतः चेष्टा का तात्पर्य है कि ग्रह के भीतर कितनी ऊर्जा है? कितनी सामर्थ्य है? चूँकि जब ग्रह जन्म कुण्डली के भी चेष्टाबल से युक्त होगा तो निश्चित रूप उस चेष्टाबल से युक्त ग्रह द्वारा प्रदत्त रश्मियों के द्वारा प्रभावित होगा और ग्रह जिस भाव में स्थित है उस भाव सम्बन्धित फल को देने में सामर्थ्यवान् होगा। अतः ऐसी अवस्था में मान लीजिए भौम ग्रह चेष्टा बली है तो निश्चित रूप से भौम के गुण–दोषों से जातक परिपूर्ण होगा। जैसे भौम का स्वरूप कुछ इस प्रकार से है कि–

''क्रूरदृक्तरुणमूर्तीरुदारः पैत्तिकस्सुचपलः कृशमध्यः।''

इस स्वरूप के आधार पर चेष्टाबली भौम के होने पर उस जातक के अन्दर क्रूर दृष्टि में उदारता दिखाई देगी। अर्थात् ऐसा जातक प्रायः यदा कदा घूरता हुआ नजर आएगा। पित्त प्रकृति का होने के कारण ऐसे जातक में पित्त के गुणाधिक्य के फलस्वरूप ऐसे जातक के स्वभाव में क्रोध अत्यधिकता रहेगी और **क्षणे तुष्टा क्षणे रुष्टा** जैसी स्थितियाँ प्रायः देखने को मिलेंगी। अतः चेष्टा बली होने की दशा में ग्रह अपने–अपने बल को पूर्ण रूप से प्रदान करता है। यथा– पूर्णिमा के चन्द्रमा को पूर्ण चेष्टाबल प्राप्त होता है। उत्तरायण में सूर्य को ' एकरूप बल मिलता है। ग्रहों के वक्री होने की दशा में पूर्ण चेष्टाबल प्राप्त होता है। परस्पर दो ग्रहों का एक राशिस्थ होने के स्थिति में युद्ध की अवस्था में जब ग्रह उत्तरदिशास्थ ग्रह बहुत रश्मियों वाले ग्रह विजयी कहलाते हैं। उस विजयी ग्रह को भी समागमजन्य से चेष्टाबल मिलता है। परमोच्च में ग्रह को पूर्ण उच्च बल मिलता है। युद्ध में विजय, उत्तरायण, सूर्य की दूरी चन्द्रमा की समीपता ये सभी चेष्टावीर्य मापने के आधार हैं।

मध्यम चेष्टाबल में अयनबल जोड़ने पर स्पष्ट चेष्टाबल होता है। मतान्तर से पक्षबल का दुगुना चेष्टाबल होता है। इसलिए पूर्णमासी के चन्द्रमा को पूर्ण चेष्टाबल मिलता है।

सूर्य का अयन बल ही दुगुना करने पर सूर्य का चेष्टा बल होता है। भौमादि पाँच ग्रह जब वक्री होते हैं तब परम नीच के समीप इनका परम बिम्ब होता है। इसलिए वक्री अवस्था में यह ग्रह चेष्टा बली होते हैं। यथा–

राकाचन्द्रस्य चेष्टाबलमुदगयने भास्वतो वक्रगानां।
युद्धे चोदक्स्थितानां स्फुटबहुलरुचां स्वोच्चवीर्यं स्वतुंगे।।
दिग्वीर्यं खेऽक्रभौमौ सुहृदि शशिसितौ विदगुरौ लग्नगौ चेत्
मन्दऽस्ते याम्यमार्गे बुधशनिशशिनोऽन्येऽयनाख्ये परेऽस्मिन्।।

बुध शनि व चन्द्रमा दक्षिणायन में बलवान् होते हैं। अन्य बुध, शनि और चन्द्रमा को छोड़कर सूर्य, मंगल, बृहस्पति और शुक्र ग्रह प्रायः उत्तरायण में बलवान् रहते है।

उच्चबल– प्रायः सभी ग्रह जातक की जन्मांग चक्र में अपने–अपने उच्च स्थानों में रहते हैं तो वह उच्चबली कहलाते हैं। जैसा कि उच्च के क्षेत्र में ग्रह की स्थिति होने की दशा में उच्चबल की श्रेणी में आ जाते हैं। यह उच्चबल केवल सभी ग्रहों के साथ में उच्चस्थ में होने पर निर्धारित नहीं होता अपितु प्रत्येक ग्रह की अपनी–अपनी स्थिति वशात् इसका विचार करना चाहिए। जब जो ग्रह उच्चस्थ होगा तो उस ग्रह के द्वारा प्राप्त सकारात्मक रश्मियों के माध्यम से जातक प्रभावित होता है। और उस क्षेत्र विशेष में जिसमें अमुक ग्रह का योगदान रहता है उस क्षेत्र सम्बन्धित से जातक को विशेष लाभ होने के योग रहते हैं। उदाहरण के लिए यदि जन्मपत्री में गुरु ग्रह उच्च में है तो ऐसे में जातक अध्यात्म के क्षेत्र में बलवान् होता है।

इसी प्रकार से अन्य ग्रहों के विषय में भी विचार करना चाहिए। यहाँ पर आचार्य वराहमिहिर के अनुसार चेष्टाबल के विषय में बता रहे हैं।

उत्तरायण सूर्य में अर्थात् मकरादि से कर्कादि पर्यन्त सूर्य स्थिति होने पर सूर्य और चन्द्रमा बलवान् होते हैं। अर्थात् अयन बल के विषय में आचार्य जी वार्ता कर रहे हैं। तात्पर्य यह हुआ कि उत्तरायणोत्पन्न जातकों की जन्मांग चक्र में सूर्य और चन्द्रमा बलवान् रहते हैं।

शेष ग्रह मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि ग्रह विपरीत गति होने पर बली होते हैं। चन्द्रमा के द्वारा उक्त काल में ग्रहों का योग होने पर पंचतारा ग्रह चेष्टा के अनुसार बलवान् होते हैं।

विपुलकराः अर्थात् किरणों का विस्तार होना या प्रकाश का फैलना इस स्थिति में भी पंचतारा ग्रह बलवान् होते हैं।

यदि दोनों चेष्टा का परस्पर युद्ध हो रहा हो तो ऐसे समय में जिस ग्रह का उत्तर शर अधिक हो तो वह ग्रह बलवान् माना जाता है।

शुक्र ग्रह विपुल रश्मिकर होते हुए दक्षिण में रहने पर भी चेष्टा बलवान् समझना चाहिए। यथा–

उदगयने रविशीतमयूखौ वक्रसमागमाः परिशेषाः।
विपुलकरायुधि चोत्तरसंस्थाश्चेष्टिवीर्ययुताः परिकल्प्याः।।

अतः हमें उपर्युक्त ग्रह स्थिति के अनुसार चेष्टाबल, उच्चबल और अयनबल के विषय में जानना चाहिए।

5.4 सारांश

इस इकाई में आपने ग्रहों के विविध प्रकार के बल के विषय में अध्ययन किया है, जिनके द्वारा ग्रहों के माध्यम से जातक के बाह्य एव आन्तरिक व्यक्तित्व का निर्धारण

करके फलादेश किया जाता है। इस विषय का सूक्ष्मता से आपने यहाँ अध्ययन उल्लेख किया है। षड्बल की क्या आवश्यकता है? इनके उपयोग के द्वारा हम कालपुरुष के भूत–भविष्य और वर्तमान गति एवं स्थिति के विषय में जान सकते हैं। आपने स्थानबल प्राप्त ग्रह की विशेषता तथा दिग्बल से प्राप्त ग्रहबलवशात् जातक दिशाओं में अपना प्रभुत्व स्थापित करता है। इसी क्रम में कालबल की प्रधानता समय की स्थिति को ध्यान में रखते हुए देशकाल परिस्थिति के अनुसार अपने एकाधिकार को स्थापित करना होता है। ठीक इसी प्रकार अन्यबलों के विषय में समझना चाहिए ग्रहबल की स्थिति होने पर उनके अनुसार जातक अपने–अपने विषय में एकाग्रता, तत्परता तथा स्थिति के अनुसार प्रभावी रहता है। उपर्युक्त समस्त विषयों के बारे में सूक्ष्मता पूर्वक इस इकाई में उल्लेख किया गया है।

5.5 शब्दावली

नैसर्गिक बल = स्वाभाविक बल

कालबल = समय अनुसार ग्रहों का अपना बल।

चेष्टाबल = बल, शर, कानि आदि के आधार पर निर्धारित किया जाने वाला

आसन्न = समीप

विकर्षण = विपरीत दिशा में खिंचाव की स्थिति होना।

अन्तर्दृष्टि = आन्तरिक दृष्टि या यौगिक दृष्टि।

अवेक्षण = प्रत्येक कार्य का बार–बार परीक्षण करना।

मानुषभे = मनुष्य राशियाँ।

अंघ्रि = पैरों के हेतु।

स्वामिबलेन = अपने स्वामी के बल से।

कवियुते = शुक्र ग्रह के सहित।

शर्वर्या = रात्रिकाल के द्वारा (सहित)।

अहनि = दिवसकाल।

वीर्यान्विता = बलयुक्त

स्वोच्चेपूर्ण = अपनी उच्च राशि में होने पर पूर्ण बल।

स्वत्रिकोणे = अपनी त्रिकोण में राशि

स्वक्षेत्रेऽर्धं = अपने क्षेत्र में आधा फल।

पादमेव = एक पाद या एक चतुर्थांश।

स्वेर्क्षे = अपनी राशि में।

चतुष्ट्य = केन्द्र स्थान 1, 4, 7, 10 में

खेटा = ख अर्थात् आकाश में विचरण करने वाले ग्रह।

मन्दार = शनि और मंगल की संज्ञा।

कुजसौराः = मंगल और शनि।

5.6 बोध प्रश्न

1) षड्बल कितने होते हैं? उनकी क्या भूमिका है? प्रकाश डालें।

2) ग्रहो के षड्बल के साथ सम्बन्ध स्थापित करते हुए महत्ता पर लघु निबन्ध लिखें।

3) कालबल किसे कहते हैं? जातक पर पड़ने वाले प्रभाव का विस्तृत उल्लेख करें।

4) दिग्बल की क्या विशेषता है? स्पष्ट करें।

5) नैसर्गिक बल की महत्ता पर प्रकाश डालें।

5.7 उपयोगी पुस्तकें

1. भारतीय ज्योतिष, नेमिचन्द्रशास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, प्रकाशन नई दिल्ली।
2. भारतीय कुण्डली विज्ञान, मीठालाल हिम्मतराम ओझा, देवर्षि प्रकाशन वाराणसी, प्रकाशन वर्ष–2008
3. वृहत्पारासरहोराशास्त्रम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, टीकाकार, पद्मनाभशर्मा, प्रकाशन वर्ष 2012
4. जातकपारिजात, वैद्यनाथ, व्याख्याकार डॉ. हरिशंकर पाठक, प्रकाशन वर्ष 2012, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।
5. भारतीय ज्योतिष विज्ञान, डॉ. सुरकान्त झा, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
6. लघुपारासरी सिद्धान्त भाष्य, डॉ रत्नलाल, सत्यम् पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
7. बृहद्वकहोडाचक्रम्, डॉ. रत्नलाल, सत्यम् पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
8. जातकालंकार, सद्मनसेश्वरी व्याख्या सहित, डॉ. रत्नलाल, सत्यम् पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

इकाई 6 ग्रहमैत्री विमर्श

संरचना

6.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप–

- ग्रह–मैत्री का ज्ञान कर सकेंगे
- प्रत्येक ग्रह के मित्र सम व शलु ग्रहों का निरूपण कर सकेंगे।
- नैसार्गिक एवं तात्कालिक मैत्री भेद को समझा सकेंगे।
- अलग–अलग मतों का निरूपण एवं आंकलन कर सकेंगे।

6.1 प्रस्तावना

प्रिय अध्येता! इस इकाई में आपका स्वागत है। इसके पूर्व की इकाई में आपने ग्रहों के बल के विषय में विस्तार से अध्ययन किया। यह इकाई ग्रहों के पारस्परिक सम्बन्धों पर प्रकाश डालती है। जिस प्रकार किसी भी समाज में व्यक्ति विशेष के कुद मित्र शत्रु एवं सम होते हैं उसी प्रकार ग्रहों में भी इस प्रकार के सम्बन्ध हैं। कोई भी ग्रह न तो सभी ग्रहों का शत्रु होता है और न ही मित्र। शत्रु मित्र समबन्ध कुछ स्वाभाविक होते हैं तो कुछ तात्कालिक से व्यवहार जगत् में जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति के कुछ स्वाभाविक (स्वभावानुकुल) मित्र होते हैं तो कुछ शत्रु उसी प्रकार ग्रहों के भी स्वाभाविक मित्र एवं शतु होते हैं। इसी तरह कुछ सम्बन्ध तात्कालिक होते हैं चाहे प्राणि जगत् में हो या सौरमण्डल में। यहाँ यह भी समझना चाहिए कि आप नैसमिक रूप से किसी के मित्र, शत्रु या सम हो सकते हैं किन्तु तात्कालिक रूप से नहीं। व्यवहार–जगल में तत्काल से युद्ध, बाद–विवाद या व्यवहार (रुपये–पैसे आदि का लेन–देन) अभिप्रेत है एवं ज्योतिष में तत्काल का अभिप्राय जन्मकुण्डली विशेष है। तत्काल में शत्रु–मित्र सम्बन्ध बदलते रहते हैं। इसमें आप सम नहीं हो सकते हैं।

6.1.3 नैसर्गिक ग्रह मैत्री विमर्श

जिस प्रकार से हमारा जीवन सम्बन्धों के अधीन है और हम सब सम्बन्ध के अनुसार ही का सम्पादन करते हैं ठीक इसी प्रकार ग्रह पिण्डों की परस्पर एक–दूसरे से

प्रकृतिवशात् मित्रता एवं शत्रुता का सम्बन्ध होता है। जिस प्रकार से अग्नि तत्व युक्त ग्रह पिण्डों का परस्पर सम्बन्ध उत्तम श्रेणी का रहेगा। ठीक इसी प्रकार से वायु तत्व युक्त ग्रह पिण्डों कर परस्पर सम्बन्ध उत्तम श्रेणी का होगा। परन्तु इसी के विपरीत यदि अग्नि तत्व तथा जल तत्व कारक ग्रहपिण्डों का सम्बन्ध विरोधपूर्ण रहेगा। चूँकि सर्वमान्य है कि अग्नि में जल डालने पर वह शान्त हो जाती है। इसी प्रकार से जब किसी भी जातक की जन्मपत्री में जब इस प्रकार की स्थिति होगी तो ऐसे जातक को अग्नि तत्व सम्बन्धी समस्यायें या रोग धर कर जायेंगे। और यही कारण है जब हम उष्णभोजन भक्षण के उपरान्त जब शीतल जल का पान करते हैं तो जठराग्नि ठण्डी पड़ जाने के वशात् भोजन पाचन तंत्र में विकार उत्पन्न होते हैं और यही विकार बाद में असाध्य रोंगों में परिवर्तित हो जाते हैं। इस क्रम में यदि अग्नि और वायु तत्व का सम्बन्ध होगा श्रेष्ठ रहेगा चूँकि बिना वायु के अग्नि प्रज्वालित नहीं हों सकती इसलिए दोनों का संयोगवशात् ही कार्य की सम्पन्नता करता है। यहाँ पर हमें एक दृष्टि ग्रहों के गुणधर्म पर अवश्य दृष्टि डालनी चाहिए। सामान्य व्यवहार में जब हम इसका प्रयोग करेंगे तो इस प्रकार के जातक जिनकी राशियाँ परस्पर मेल खाती हो तो ऐसे जातकों का जीवन आनन्दमय एवं सुखमय व्यतीत होता है। परन्तु विपरीत स्थितिवशात् जब ऐसा संयोग बना दिया जाता है तो परस्पर कलह, लड़ाई–झगड़ा, मानसिक तनाव की स्थितियाँ पैदा होती है। इसलिए राशियों के गुण–दोष के विषय में ज्ञान करने के उपरान्त मेलापक पद्धति में राशि मैत्री एवं ग्रह मैत्री के विषय में विचार किया जाता है। राशियों का सम्बन्ध चन्द्रमा से है। चन्द्रमा मानव देह में मन का कारक ग्रह है। इसलिए कहा गया है कि सुख–दुःख एवं लाभ–हानि अच्छे–बुरे कार्यों की अनुभूति मन के कारण होती है। यथा–

मनः अनुकूलं सुखं मनः प्रतिकूलं दुःखम्।'

विवाह मेलापक पद्धति में या जातक के जन्मांग चक्र में परस्पर भावगत विचारणीय विषयों में अथवा जातक के भूत–भविष्य और वर्तमान स्थिति के लिए ग्रहों की मैत्री का प्रमुख योगदान होता है। फलादेश के सिद्धान्तों में ग्रह मैत्री प्रधान एवं प्रमुख विषय है। इसके प्रमुख कारण हैं त्रिदोष वात–पित्त–कफ और पंच महाभूत पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश तत्त्वों का पारस्परिक सम्बन्धों का होना। इसी के आधार पर दो महा मानवों का सम्बन्ध होना हो अथवा दोनों देशों के प्रमुखों का परस्पर सामंजस्य का स्थापित होना या फिर राष्ट्रीय एकता अखण्डता का विषय हो। उपर्युक्त हेतु ग्रहों की एवं राशियों के गुण–धर्मानुसार मैत्री वशात् कार्यों की सम्पन्नता सम्भव है। यहाँ हम आपको ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री के विषय में एक चक्र के माध्यम से बताने जा रहे है। वस्तुतः नक्षत्र, राशि एवं ग्रहों का पारस्परिक सम्बन्ध है। आप इस विषय को विस्तृत रूप से पूर्व की इकाईयों में पढ़ चुके होंगे। तथापि ध्यानार्थ आपको पुनः ग्रह मैत्री को अधिकता के साथ जानने हेतु हम यहाँ पुनः एक बार आपको बता दें कि नक्षत्र वशात् राशि निर्माण और राशियों के अधिपति ग्रह हैं। इसलिए राशि और ग्रहों का जो वास्तविक या नैसर्गिक गुण–धर्म है उसी के अनुसार मित्र–शत्रु–सम का होना स्वाभाविक है।

ग्रहों की राशि–स्वामित्व आदि चक्र

ग्रहों के नाम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	सिंह	कक्र	मेष	मिथुन कन्या	धनु–मीन	वृष–तुला	मकर–कुम्भ	कन्या	मिथुन
उच्च राशि	मेष 10	वृष 3 अंश	मकरं 28	कन्या 15	कक्र 5 अंश तक	मीन 26 अंश तक	तुला 20 अंश तक	मिथुन	धनु

	अंश तक		अंश	अंश तक					
परमोच्च अंश नीच राशि परमनीय अंश	तुला 10 अंश	वृश्चिक 3 अंश तक	कर्क 28 अंश	मीन 15 अंश तक	मकर 5 अंश तक	कन्या 27 अंश तक	मेष 20 अंश तक	धनु	मिथुन
मूलत्रिकोणा राशि अंश	सिंह 1 से 20 अंश तक	वृष 4 से 30 अंश तक	मेष 10 से 18 अंश तक	कन्या 16 से 20 अंश तक	धनु 1 से 13 अंश तक	तुला 1 से 10 अंश तक	कुम्भ 1 से 20 अंश तक	कर्क	सिंह
स्वगृह राशि अंश	सिंह 21 से 30 अंश तक	कर्क 1 से 10 अंश तक	मेष 17 से 30 अंश तक तथा वृश्चिक 1 से 30 अंश तक	कन्या 21 से 30 अंश तक तथा मिथुन 1 से 30 अंश तक	धनु 14 से 30 अंश तक व मीन 1 से 30 अंश तक	तुला 11 से 30 अंश व वृष 1 से 20 अंश तक	कुम्भ 21 से 30 अंश तक व मकर 1 से 30 अंश तक	1 से 10 अंश तक कन्या	मीन 1 से 30 अंश तक

ग्रह मैत्री चक्र	चन्द्र मंगल गुरु	सूर्य, बुध	सूर्य, चन्द्र, गुरु	सूर्य, शुक्र, राहु	सूर्य, चन्द्र, मंगल	बुध, शनि, राहु व केतु	बुध, शुक्र, राहु केतु	बुध, शुक्र, शनि,	बुध, शुक्र, शनि
सम	बुध	मंगल, शुक्र, शनि, गुरु	शुक्र, शनि	मंगल, गुरु, शनि, केतु	शनि, राहु, केतु	गुरु	गुरु	गुरु	गुरु
शत्रु	शुक्र, शनि, राहु, केतु	राहु, केतु	बुध, राहु, केतु	चन्द्र, चन्द्र	शुक्र, बुध	सूर्य, चन्द्र	सूर्य, चन्द्र, मंगल	सूर्य, चन्द्र, मंगल	सूर्य, चन्द्र, मंगल

राशि गुण–धर्म

क्रम	गुण–धर्म	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
1.	चर आदि	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्विस्वभाव
2.	विषम–सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम
3.	पुरुष–स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
4.	क्रूर–सौम्य	क्रूर	सौम्यय	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य
5.	वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्म	क्षत्रि	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण

					ण	य			ा				
6.	तत्त्व	अग्नि	भूमि	वायु	जल	अग्नि	भूमि	वायु	जल	अग्नि	भूमि	वायु	ज्ल
7.	दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
8.	स्वामी	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु
9.	रंग	लाल	सफेद	हरा	गुलाबी	गुलाबी	चित्र वि.	काला	कबरैला	पीला	कबरैला	कबरैला	मछली का रंग
	अन्य मत	, ,	, ,	ष्शुकवत्	पाटल	थोड़ा सफेद धूम्र	अनेक रंग	कृष्ण	सुवर्ण	, ,	चितकबरा	न्योले रंग का	, ,
	सर्व (चि.)	, ,	, ,	ष्श्याम हरित	रक्त	धूम्र	, ,	, ,	, ,	सुनहरा	फीका पीला	बिल्ली सा श्वेत	, ,
10.	उदय	पृष्ठोदय	पृ.	शीर्षोदय	पृ.	शी.	शी.	शी.	शी.	पृ.	पृ.	शी.	उभयोदय
	अन्य मत फलदी	, ,	, ,	उभयोदय	, ,	, ,	, ,	, ,	, ,	, ,	, ,	, ,	, ,
	सर्व (चि.)	, ,	, ,	पृष्ठी	, ,	, ,	, ,	, ,	, ,	, ,	, ,	, ,	, ,
11	ह्रस्व	सम	स्म	सम	सम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	सम	सम	ह्रस्व	ह्रस्व
	(जा. भरण)	ह्रस्व	ह्रस्व	सम	सम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	सम	सम	ह्रस्व	ह्रस्व
12.	शुष्कादि	शुष्क	शुष्क	शुष्क	जल	शुष्क	जल	जल	शुष्क	शुष्क	जल	जल	ज्ल
	(मध्य परा.)	निर्जल	स्जल	निर्जल	जल	निर्जल	, ,	, ,	निर्जल	निर्जल	, ,	, ,	, ,
13.	रुक्ष	स्निग्धा	रुक्ष	रुक्ष	स्निग्ध	स्निग्ध	रुक्ष	रुक्ष	स्निग्धा	स्निग्ध	रुक्ष	रुक्ष	स्निग्ध
14.	पूर्ण आदि	पाव जल	अर्द्ध जल	निर्जल	पूर्ण जल	निर्जल	निर्जल	पाव जल	पाव जल	अर्द्ध जल	पूर्ण जल	अर्द्ध जल	पूर्ण जल
15.	गुण	रज	श्रज		सत्	सत्		रज	तम	सत	तम	तम	सत
16.	बली	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	दिन	दिन	दिन	दिन	रात्रि	रात्रि	दिन	दिन रात्रि की सन्धि में

नक्षत्र, राशि, ग्रह परिचय एवं गुणधर्म

जन्म नक्षत्र के अनुसार योनि गणादि का कोष्ठक

चरणानुसार नक्षत्रों के नाम	नक्षत्र	योनि	गण	युंजा	नाडी	राशि	स्वामी
चु, चे, चो, लो	अश्विनी	अश्व	देव	पूर्व	आद्य	मेष	मंगल
ली, लू, ले, लो	भरणी	गज	मनुष्य	पूर्व	मध्य	मेष	मंगल
आ, इ, उ, ए	कृत्तिका	मेष	राक्षस	पूर्व	अन्त्य	मेष 1 व 3	मं1 शु.3
ओ, वा, वि, वु	रोहिणी	सर्प	मनुष्य	पूर्व	अन्त्य	वृष	शुक्र
वे, वो, का, की	मृगशिरा	सर्प	देव	पूर्व	मध्य	वृ.2 मिथु. 2	शु.2 बु.2
कु, घ, ङ, घ	आर्द्रा	श्वान	मनुष्य	मध्य	आद्य	मिथुन	बुध
के, को, हा, हि	पुनर्वसु	मार्जार	देव	मध्य	आद्य	मि.3 क.1	बु.3 चं. 1
हू, हे, हो, डा	पुष्य	मेष	देव	मध्य	मध्य	कर्क	चन्द्र
डी, डू, डे, डो	आश्लेषा	मार्जार	राक्षस	मध्य	अन्त्य	कर्क	चन्द्र
म, मी, मू, मे	मघा	मूषक	राक्षस	मध्य	अन्त्य	सिंह	सूर्य
मो, टा, टी, टु	पूर्वा फा.	मूषक	मनुष्य	मध्य	मध्य	सिंह	सूर्य
टे, टो, पा, पी	उ. फा.	गौ	मनुष्य	मध्य	आद्य	सिंह1 क. 3	सू.1 बु.3
पू, ष, ण, ठ	हस्त	महिषी	देव	मध्य	आद्य	कन्या	बुध
पे, पो, रा, री	चित्रा	व्याघ्र	राक्षस	मध्य	मध्य	क.2 तुला2	बु.2 शु2
रु, रे, रो, ता	स्वाती	महिषी	देव	मध्य	अन्त्य	तुला	ष्शुक्र
ती, तू, ते, तो	विशाखा	व्याघ्र	राक्षस	मध्य	अन्त्य	तु.3 वृ.1	शु.3 मं.1
ना, नी, नू, ने	अनुराधा	मृग	देव	मध्य	मध्य	वृश्चिक	मंगल
नो, या, यी, यु	ज्येष्ठा	मृग	राक्षस	अन्त्य	आद्य	वृश्चिक	मंगल
ये, यो, भ, भी	मूल	श्वान	राक्षस	अन्त्य	आद्य	धनु	गुरु
भू, ध, फ, ठा	पू.षा.	कवि	मनुष्य	अन्त्य	मध्य	धनु	गुरु
भे, भो, ज, जी	उ.षा.	नकुल	मनुष्य	अन्त्य	अन्त्य	ध.1 म.3	गु.1 श.3
जू, जे, जो, खा	अभिजित्	नकुल	मनुष्य	अन्त्य	अन्त्य		
खी, खू, खे, खो	श्रवण	कपि	देव	अन्त्य	अन्त्य	मकर	शनि
गा, गी, गू, गे	धनिष्ठा	सिंह	राक्षस	अन्त्य	मध्य	म.2 कु.2	शनि
गो, सा, सी, सू	शतभिषा	अश्व	राक्षस	अन्त्य	आद्य	कुम्भ	शनि
से, सो, दा, दि	पू. भाद्र.	सिंह	मनुष्य	अन्त्य	आद्य	कु.3 मी.1	श.3 गु.1
दु, थ, झ, ण	उ.भाद्र	गौ	मनुष्य	अन्त्य	मध्य	मीन	गुरु
दे, दो, चा, ची	रेवती	गत	देव	पूर्व	अन्त्य	मीन	गुरु

ग्रह–गुणधर्म

गुणधर्म वर्णजाति	सूर्य राजाक्षत्री	चन्द्र वैश्य	मंगल क्षत्रिय	बुध वैश्य शूद्र	बृहस्पति ब्राह्मण ब्राह्मण	शुक्र ब्राह्मण ब्राह्मण	शनि शूद्र अन्त्यज चाण्डाल	राहु चाण्डाल अंत्यजराक्षस म्लेच्छ	केतु इनसे अन्य

बलाबल निर्धारक प्रमुख अवयव

रंग मनुष्य का	रक्त रक्तश्याम पाटलीपुष्प समाप	श्वेत गौर	रक्त रक्त गौरदूर्वा कमल का रंग	हरित दूर्वा सदृश्य	पीत (गौर)	धिज न गौरा न काला	नीलवर्ण कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण
देवता	अग्नि	ज्ल	अग्निज कार्तिकेय	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्म	राक्षस	
अधिपति	शिव	पार्वती	कार्तिकेय गृह कुमार	विष्णु	ब्रह्म	इन्द्र	यम		
दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय कोप	पश्चिम	नैऋति कोप	पाप
शुभपापी	पाप	क्षीप पाप पूर्व शुभ	पापी	पापयुक्त पापी पापहीन शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप
देह की धातु	हड्डी	रुधिर	चर्बी	त्वचा	चर्बी	वीर्य	स्नायु नसें		
स्थान	देव स्थान	जल स्थान	अग्नि	विहार	खजाना भण्डार	शयन	पुंज, पृथ्वी का चपटीला भाग	वाम्बी सर्पस्थान	बाम्बी
वस्त्र	मोटा	कठोर	टूटा फूटा अग्नि दोष	नवीन	मध्यम	मध्यम	जीर्ण	गुदड़ी रंग बिरंगी	बडे 2 छेदों से युक्त
ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद्	हेमन्त	वसंत	शिशिर		
रसस्वादु	कटु	लवण	तीता	मिश्र	मीठा	खट्टा	क्वाथ कशैला		
धातु	मूल	धातु	धातु	जीव	जीव	मूल	धातु	धातु	
दृष्टि	ऊर्ध्व(ऊपर को	स्म	ऊर्ध्व	तिरछी	सम	तिरछी	अधो (नीचें)	अधो	
स्त्री, पुरुष	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक		
स्थिर, चर	चर	चर	चर	चर	स्थिर	चर	स्थिर	स्थिर	स्थिर
किरण	10	1	5	5	7	8	5		
गति समय	1 मास	21 दिन	111 मास	1 मास	13 मास	1 मास	30 मास	18 मास	18 मास

सूर्यादि ग्रहों के मित्र–शत्रु विचार–

सूर्य ग्रह–

1. सूर्य ग्रह के शनि एवं शुक्र ग्रह शत्रु हैं।
2. सूर्य का बुध सम है अर्थात् न मित्र न शत्रु है।
3. सूर्य के क्रमशः मंगल, चन्द्रमा और बृहस्पति ग्रह परस्पर मित्र ग्रह हैं।

चन्द्रग्रह–1. चन्द्रमा ग्रह के सूर्य और मित्र है। जबकि सूर्य का बुध ग्रह सम है और चन्द्रमा मित्र ग्रह है। परन्तु यहाँ पर चन्द्रमा का बुध मित्र है।

2. चन्द्रमा के अन्य समस्त ग्रह बुध और सूर्य को छोड़कर शेषग्रह सम हैं अर्थात् न मित्र है न ही शत्रु है। जैसे मंगल, गुरु, शुक्र, शनिग्रह है।

3. यहाँ ध्यान देने योग्य यह एक विषय आवश्यक है कि चन्द्रमा का कोई भी ग्रह शत्रु नहीं है जबकि चन्द्रमा कई ग्रहों का शत्रु है। यहाँ यह विषय धातव्य है कि मन की कलुषता के कारण शत्रुता या विरोध उत्पन्न होता है। अतः प्रत्येक मानव को स्वयं प्रयास करना चाहिए कि हम किसी के साथ विरोधाभास न करें, क्योंकि यहाँ पर चन्द्रमा के पक्ष से बैर की भावना का संकेत है। अर्थात् हम स्वयं अपने मन में विरोध की भावना पाल रहे है। जबकि अन्य पक्षों की ओर से शत्रुता का कोई भाव नहीं है।

मंगलग्रह–

1. मंगल ग्रह का बुधग्रह शत्रु है।
2. शुक्र और शनि सम हैं। अर्थात् "**न काहू से दोस्ती न काहू बैर**" की भावना।
3. सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति मित्र हैं अर्थात् चारों ग्रहों के गुण–दोष–धर्म परस्पर मेल खाते होंगे।

बुधग्रह–

1. बुध ग्रह का चन्द्रमा शत्रु है। जबकि चन्द्रमा बुध के साथ समता का सम्बन्ध रखता है।
2. भौम, गुरु और शनि बुध ग्रह के साथ सम हैं।
3. सूर्य और शुक्र ग्रह बुध के मित्र हैं। जबकि सूर्य का बुध के साथ सम्बन्ध सम है।

बृहस्पतिग्रह–

1. गुरु के बुध और शुक्र शत्रु हैं। जबकि गुरु शुक्र बुध के प्रति सम भाव रखते हैं।
2. सूर्य, चन्द्र, और मंगल ग्रह गुरु के मित्र ग्रह हैं। और गुरु भी सूर्य और मंगल का मित्र ग्रह है। परन्तु चन्द्रमा के प्रति सम भाव है।
3. बृहस्पति का केवल शनि ग्रह सम है।

शुक्रग्रह–

1. शुक्रग्रह के सूर्य और चन्द्रमा शत्रु हैं जबकि शुक्र चन्द्रमा के लिए सम है।
2. मंगल ग्रह और गुरु ग्रह सम हैं। जबकि शुक्र गुरु का शत्रु ग्रह है।
3. केवल बुध और शनि शुक्रग्रह के मित्र हैं।

शनिग्रह–

1. शनि ग्रह के सूर्य, चन्द्रमा और मंगल ग्रह शत्रु हैं जबकि शनि ग्रह मंगल ग्रह और चन्द्रमा का सम है।
2. बृहस्पति ग्रह शनि का सम है। और शनि भी बृहस्पति के सम हैं।
3. शुक्र और बुध शनि के मित्र हैं। जबकि शनि बुध का सम है। यथा–

शत्रूमन्दसितौ शशिजो मित्राणि शेषा रवे–
स्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिसमश्ज सुहृदौशेषाः समाः शीतगोः।
जीवेन्दूष्णकराः कुजस्य सुहृदो ज्ञोऽरिः सिताकी समौ।
मित्रे सूर्यसितौ बुधस्य हिमगुः शत्रुः समाश्चापरे।।

सूरेः सौम्यसितावरी रविसुतो मध्योऽपरे त्वन्यथा।
सौम्यार्की सुहृदौ समौ कुजगुरु शुक्रस्य शेषावरी।
शुक्रज्ञौ सुहृदौ समः सुरगुरुः सौरस्य चान्येऽरयो
ये प्रोक्ताः स्वत्रिकोणभादिषु पुनस्तेऽमी मया कीर्तिताः।।

यहाँ पर ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री के विषय में बताया गया है।

6.1.2 सत्याचार्य मतानुसार ग्रहमैत्री विमर्श

ग्रहों की मैत्री विमर्श हेतु भिन्न–भिन्न आचार्यों का अपना अपना दृष्टिकोण है। अतः आचार्यों के मत–मतान्तरों के अनुसार ही फलादेश पद्धति में निर्णय लेने में कभी–कभी कठिनाई तो महसूस होती है। परन्तु कभी–कभी यह सिद्धान्त फलादेश हेतु सटीक बैठते हैं। परन्तु शास्त्र में प्रत्येक आचार्य को मत रखने का अधिकार है। इस दृष्टि से दैवज्ञों को इन विषयों का ज्ञान होना भी स्वाभाविक है।

ग्रहों के परस्पर में मित्र शत्रु विचार किया जा रहा है–

सूर्य ग्रह का बृहस्पति मित्र, चन्द्रमा के बुध और गुरु मित्र, मंगल के चन्द्र, शुक्र और बुध, बुध के सूर्य रहित सभी ग्रह अर्थात् चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि मित्र, बृहस्पति के मंगल को छोड़कर सभी ग्रह जैसे सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र और शनि, शुक्र के सूर्य और चन्द्रमा को छोड़कर सभी ग्रह अर्थात् मंगल, बुध, बृहस्पति और शनि, और शनैश्चर के मंगल, चन्द्र और सूर्य को छोड़कर अर्थात् बुध, बृहस्पति और शुक्र उक्त ये मित्र ग्रह होते हैं। ऐसे कुछ आचार्यों का मत है। ग्रहों में प्रत्येक मित्र ग्रहों का उल्लेख किया गया और शेष शत्रु होते हैं। ग्रह के तथा मित्र–शत्रु और उदासीन इस प्रकार लोक व्यवहार के अनुसार यवनाचार्यों का ग्रहों में परस्पर उक्त प्रकार से मित्र और शत्रु होते हैं। यही मत स्थिर है।

किन्तु'**सत्याचार्य**' का उक्त विषय में सुस्पष्ट सर्वमान्य मत है कि प्रत्येक ग्रह की जो मूल त्रिकोण राशि पूर्व में कही गई है उससे दूसरी, बारहवीं, पाँचवीं, नवीं, आठवीं, चौथी (2, 4, 5, 8, 9 और 12) राशियों के स्वामी ग्रह परस्पर मित्र ग्रह होते हैं। इनसे शेष अतिरिक्त स्थानो के स्वामी ग्रह शत्रु होते हैं। अर्थात् ये ग्रह के मूल त्रिकोण से 1/3/6/7/10 और 11 स्थानों के स्वामी शत्रु होते हैं।

सत्याचार्य ने अपने मूल त्रिकोण से उक्त 2, 4, 5, 8, 9 में मित्र और 12 राशियों से अनुक्त 1/3/6/7/10 और 11वीं राशियों के स्वामी ग्रहों को शत्रु कहा है। इस प्रकार उक्त स्थानाधीश मित्र ग्रह और अनुक्त स्थानाधीश शत्रु ग्रह हो जाते हैं।

उदाहरण सूर्य ग्रह का मूल त्रिकोण सिंह राशि में 2, 4, 5, 8, 9, 10 संख्या राशियाँ, कन्या–वृश्चिक, धनु–मीन, मेष और वृष राशियों के स्वामी ग्रह क्रमशः बुध–मंगल, बृहस्पति, बृहस्पति और मंगल ग्रहों में प्रत्येक ग्रह सूर्य का मित्र होता है तथा मूल त्रिकोण से अनुक्त, सिंह–तुला–मकर–कुम्भ–वृष और मिथुन राशियों के स्वामी ग्रह क्रमशः सूर्य, शुक्र, शनि शनि–शुक्र और बुध सूर्य के शत्रु सिद्ध होते हैं। इस प्रकार मित्र और शत्रु ग्रहों को समझकर जिस ग्रह में उक्त–अनुक्त दोनों लक्षण घटित होंगे वह ग्रह न शत्रु और न मित्र अर्थात् उदासीन या समता वादी होने से सम कहा जाता है।

यथा–

जीवो जीवबुधौ सितेन्दुतनयौ व्यर्का विभौमः क्रमा–

द्वीन्द्वर्का धिकुजेन्द्विनाश्च सुहृकेः केषांचिदेवं मतम्।
सत्योक्ते सुहृदस्त्रिकोणभवनात्स्वात्स्वान्त्य धीर्मपाः
स्वोच्चायुः सुखपाः स्वलक्षणविधेर्नान्यैर्विरोधादिति।।

6.1.3 तात्कालिक एवं पंचधा मैत्री विचार

वस्तुतः ज्योतिष विज्ञान का नियम प्रकृति आधारित है। प्रकृति में हम देखते हैं कि मानव या अन्य चेतन प्राणी शनैः शनैः एक–दूसरे के प्रति आकर्षण वश समीपता बनाते हुए देखे गये हैं। सामीप्य कोई मानव निर्मित नहीं है अपितु यह प्रकृति का नियम है। इसी प्रकार से ग्रह पिण्डों की स्थिति है। प्रत्येक पिण्ड की अपनी प्रकृति है अपना गुण धर्म है, वहाँ की जलवायु वातावरण भिन्न–भिन्न है। और जिन ग्रहों पिण्डों की जलवायु, वातावरण एवं प्रकृति परस्पर मेल खाती है वह स्वतः एक–दूसरे पिण्ड के सहयोगी अथवा एक–दूसरे पिण्ड की प्रकृति अनुकूल रहते हैं इसी प्रकार की संरचना हमारे पाँच भौतिक शरीर की है। इस पाँच भौतिक शरीर की संरचना को जानने एवं पहिचानने के लिए सर्वप्रथम हमे वैदिक दर्शनों में उल्लिखित''**यत् पिण्डे तत् ब्रह्मण्डे**'' का सिद्धान्त वैदिक काल में प्रचलित था। यह सिद्धान्त बतलाता है कि सूर्य चन्द्रमा सौर जगत में जो नियम एवं सिद्धान्त काम करते हैं वही सिद्धान्त मानव शरीर में स्थित सौर जगत की इकाई का संचालन करते हैं। इस सिद्धान्त को ठीक प्रकार से जानने हेतु हमें प्राणी पदार्थ की आन्तरिक संरचना पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि प्रत्येक प्राणी एवं पदार्थ की संरचना का आधार परमाणु है। यह परमाणु देखने में अतिसूक्ष्म परन्तु इसका आकार–प्रकार सौर जगत के जैसा है। परमाणु के मध्य में एक घन बिन्दु होता है जिसे परमाणु का केन्द्र कहते है। परमाणु के मध्य में स्थित घन बिन्दु का व्यास एक इंच के दस लाखवें भाग का भी दसलाखवाँ भाग होता है। और परमाणु का सारतत्व अथवा जीवन इसी में स्थित रहता है। इस परमाणु के केन्द्र में स्थित घन बिन्दु के चारों और असंख्य सूक्ष्मातिसूक्ष्म विद्युत कण परिक्रमा करते रहते हैं। इस परिक्रमावशात् वह सौर जगत के समस्त क्रियाकलापों का अनुकरण करते रहते हैं। इस प्रकार से ऐसे असंख्य परमाणुओं के संयोग से पंचमहाभूतों की उत्पत्ति और पंच महाभूतों के द्वारा कोशिका निर्माण और कोशिकाओं द्वारा हमारे शरीर का निर्माण होता है। हमारे शरीर की कोशिकायें बन्धुता नियम के अनुसार दलबद्ध या अलग दलों का निर्माण करके शरीर में ऊतकों (टिसु) का निर्माण करती हैं और ऊतकों के द्वारा शरीर के अंगों की संरचना होती है और इस प्रकार अंगों की संरचना होने के उपरान्त हमारा यह पान्च भौतिक शरीर की उत्पत्ति होती है। इस प्रकार यहाँ यह विचारणीय विषय है कि जब हमारा शरीर एवं शरीर के अंगादि अवयव उन कोशिकाओं से बने है जो सौर–जगत के क्रिया–कलापों में समस्त गतिविधियों का अनुकरण करते हैं। इसलिए हमें यह जान लेना चाहिए कि जिन कोशिकाओं द्वारा हमारे शरीर का निर्माण होता है वही काशिकायें सौर जगत का अनुकरण करती हैं तो स्वतः ही जान लेना चाहिए कि हमारा शरीर भी सौर जगत की गतिविधियों का अनुकरण करता है।

प्रथम दृष्टि में यह विश्वास करना कठिन हो सकता है कि हमारा सम्बन्ध सौर जगत के पिण्डों से हो सकता है। परन्तु हमें यह निश्चित रूप से जान लेना चाहिए कि विद्युत एवं ब्रह्मण्ड रश्मियों द्वारा हमारा सौर जगत में स्थित ग्रह–नक्षत्र, राशियों से सीधा सम्बन्ध है और यही सम्बन्ध होने के फलस्वरूप जिनकी रासायनिक बनावट प्रतिक्षण परिवर्तित होती हुई प्राणी जगत पर हमेशा निरन्तर प्रभावित करती है। इस विषय में कोई विवाद नहीं होना चाहिए कि इस ब्रह्मण्डस्थ एवं हमारे शरीर के साथ सम्बन्ध को मानने का पूरा श्रेय हमारे महर्षियों को जाता है जिन्होने ज्योतिष एवं योगशास्त्र के सुमान्य सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। परन्तु यह निश्चित है कि हम

समस्त जड़–चेतन प्राणी जगत ग्रह पिण्डों के सत्त गतिशील, गति स्थिति के कारण प्रभवित होते हैं। यही कारण है कि हमारे मध्य नैसर्गिक ग्रह मैत्री का प्रभाव एवं तात्कालिक ग्रह मैत्री का प्रभाव दृग्गोचर होता है। यदि ज्योतिष में नैसर्गिक ग्रह मैत्री का प्रयोग होता है और जब प्रश्न विशेष को ध्यान में रख कर विचार किया जाता है तो तात्कालिक ग्रह मैत्री का उपयोग करना चाहिए। तात्कालिक मैत्री एवं नैसर्गिक मैत्री के आधार पर ही पन्चधा मैत्री का निर्माण होता है उदाहरण के लिए जैसे–मित्र + मित्र = अधिमित्र, मित्र +सम = मित्र, सम + सम = मित्र, शत्रु + शत्रु = अधिशत्रु इसी प्रकार से जानना चाहिए।

ग्रहों की तात्कालिक मित्र सम शत्रुता कही जा रही है–

किसी जातक की जन्म पत्रिका से अथवा तात्कालीन प्रश्न लग्न से जिस से जो ग्रह 2, 3, 4, 10, 11 और 12वें स्थान में होता है वह ग्रह मात्र उस समय, (प्रश्नेष्ट लग्न या जातक जन्मेष्ट लग्न से) मित्र हो जाता है जिसे तात्कालिक मित्रता कहते हैं। इनसे अतिरिक्त 1, 4, 6, 7, 8 और नवें स्थान स्थित ग्रह तत्काल में शत्रु हो जाते हैं। यवनाचार्य विशेष के मत से अपनी उच्च राशि गत ग्रह भी अन्य ग्रह का मित्र होता जाता है। यह मत सर्वसामान्य नहीं हैं।

नैसर्गिक ग्रह मैत्री स्थिर रूप की है। तात्कालिक ग्रह मैत्री लग्नेष्ट वश विभिन्न प्रकार की होती रहती है इस प्रकार तात्कालिक और नैसर्गिक मैत्री के आधार से एक ग्रह जो नैसर्गिक मित्र है या शत्रु है या सम है वही ग्रह तात्कालिक मैत्री चक्र के आधार से मित्र और शत्रु दोनों में से एक अवश्य हो सकता है तो इस प्रकार के वैषम्य का हल आचार्यों ने बताया है कि दोनों प्रकार से उत्पन्न मित्र ग्रहों की(1) मित्र+मित्र= अधिमित्र समझते हुए दोनों प्रकार से, (2) शत्रु+शत्रु = को अधिशत्रु ग्रह कहना चाहिए। (3) तथा एकत्र मित्र अन्यत्र सम से मित्र+सम= मित्र, (4) तथा एकत्र शत्रु अन्यत्र सम से शत्रु+सम = शत्रु तथा (5) नैसर्गिक सम और तात्कालिक मित्र, सम + मित्र को मित्र, पंचधा= पाँच प्रकार की मैत्री चक्र स्थापित कर जातक और प्रश्नेष्ट से शुभाशुभ विचार करना चाहिए।

अन्योन्स्य धनव्ययायसहजव्यापारबन्धुस्थिता–
स्तत्काले सुहृदः स्वतुंगभवनेऽप्येकेऽरयस्त्वन्यथा।
द्वयेकानुक्त भपान् सुहृत्समरिपून्सन्चिन्त्य नैसर्गिकां–
स्तत्काले च पुनस्तु तानधिसुहृन्मित्रादिभिः कल्पयेत्।।

6.4 सारांश

इस इकाई में आपने ग्रहों के मैत्री आदि सम्बन्धों का अध्ययन किया। जिस प्रकार व्यवहार जगत में प्राणियों में परस्पर मित्रता शतुता या समत्व सम्बन्ध होते हैं उसी प्रकार के सम्बन्धों की प्रतिष्ठा आचार्यों ने ग्रहों में भी की। कौन सा किस ग्रह का मित्र है, सिका शतु है अथवा किससे समता रखता है इस विषम` आचार्यों के भिन्न–भिन्न मत भी हैं। किनतु सर्वाधिक प्रसिद्ध मत जो भारतीय ज्योतिष में सर्वमान्य है के अनुसार सूर्यग्रह के चनुमा मंगल एवं गुरू मित्र बुध सम एवं शुक्र व राशि शतु हैं। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के सम्बन्ध को भी आपने यहां जाना। आपने यह भी जाना कि ये सम्बन्ध नेसिंगक हैं एवं इसके अतिरिक्त ग्रहों के मध्य तात्कालिक शत्रुता मित्रता भी होती है। इस प्रकार दोनों दृष्टि से विचार करने पर ग्रहों में परस्पर पाँच (5) प्रकार के सम्बन्ध प्रतिशित होते हैं जो इस प्रकार हैं – (1) अधिमित्र, (2) अधिशत्रु, (3) मित्र, (4) शत्रु एवं (5) सम।

6.5 शब्दावली

मन्दसितौ = मन्द अर्थात् शनैः शनै चलने वाला ग्रह शनि और सित से तात्पर्य शुक्र ग्रह से इक्ट्ठे होने के कारण प्रथमा विभक्ति द्विवचन।

समश्च = सम हैं अर्थात् न शत्रु और मित्र एक समान अवस्था।

राशिजो = राशि से उत्पन्न अर्थात् चन्द्रमा से उत्पन्न चन्द्रपुत्र बुध।

मित्राणि = मित्र हैं।

शेषाः = अन्य ग्रहों में शेष ग्रह।

खेः = आकाश में।

तीक्ष्णांशु = तीव्र गति से प्रहार करने वाले वाण या सूर्य की रश्मियाँ।

हिमरश्मिजश्च = हिमरश्मि चन्द्रमा और उनसे उत्पन्न पुत्र बुध।

सुहृदौ = दो मित्र या दोनो मित्रों के लिए प्रयुक्त।

शीतगौः = चन्द्रमा के सम्बन्ध के लिए प्रयुक्त यहाँ पर।

जीवेन्दु = जीव अर्थात् बृहस्पति और इन्दु चन्द्रमा।

उष्णकरः = गर्मी प्रदान करने वाले सूर्य।

अन्योन्यस्य = एक– दूसरे के परस्पर।

तत्काले = तत्कालिक उस समय के लिए जैसे प्रश्न कुण्डली में।

स्वतुंगभवन = ग्रह का अपना उच्च का घर, या जिसमें ग्रह उच्च का होता है।

संचिन्त्य = अच्छी तरह से विचार करके, चिन्तन करके।

कल्पयेत् = कल्पना करनी चाहिए।

विभौमा = मंगल को छोड़कर

द्वीनद्वर्का = इन्दु और सूर्य ग्रह के लिए प्रयुक्त संयुक्त।

कुजेंद्विनाश्च = कुज अर्थात् मंगल ग्रह और इन्दु चन्द्रमा तथा इन अर्थात् सूर्य ग्रह तीनों एक साथ मंगल, चन्द्रमा और सूर्य ग्रह।

6.6 बोध प्रश्न

1. ग्रहों की मैत्री से क्या तात्पर्य है?
2. ग्रहों की तात्कालिक मैत्री का उल्लेख करें?
3. नैसर्गिक मैत्री का उल्लेख करते हुए चक्र निर्माण करे?
4. मानव जीवन में ग्रह मैत्री का उपयोग क्यों आवश्यक है? स्पष्ट करें।
5. वैवाहिक जीवन में मैत्री की उपयोगिता सिद्ध करें।

6.7 उपयोगी पुस्तकें

1. भारतीय ज्योतिष, नेमिचन्द्रशास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, प्रकाशन नई दिल्ली।
2. भारतीय कुण्डली विज्ञान, मीठालाल हिम्मतराम ओझा, देवर्षि प्रकाशन वाराणसी, प्रकाशन वर्ष–2008
3. वृहत्पारासरहोराशास्त्रम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, टीकाकार, पद्मनाभशर्मा, प्रकाशन वर्ष 2012

4. जातकपारिजात, वैद्यनाथ, व्याख्याकार डॉ. हरिशंकर पाठक, प्रकाशन वर्ष 2012, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

5. भारतीय ज्योतिष विज्ञान, डॉ. सुरकान्त झा, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।

6. लघुपारासरी सिद्धान्त भाष्य, डॉ रत्नलाल, सत्यम् पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

7. बृहद्वकहोडाचक्रम्, डॉ. रत्नलाल, सत्यम् पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

8. जातकालंकार, सद्मनसेश्वरी व्याख्या सहित, डॉ. रत्नलाल, सत्यम् पब्लिकेशन, नई दिल्ली।